विविधाभिः मातृकाभिः सवंलितः

वास्तुविज्ञानरत्नकोशः

शुभाशीर्वादः

प्रो. प.ना. शास्त्री

प्रो. के.बी. सुब्बरायुडु

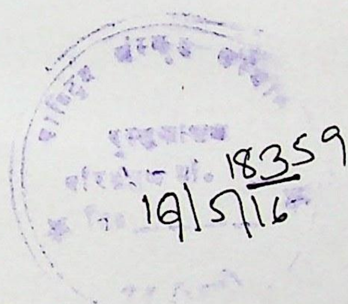
आचार्य रामदेव झा

प्रो. हंसधर झा



सम्पादकः

आशीष कुमार चौधरी


18359
19/5/16

अज्ञातविद्वत्कृतः

वास्तुविज्ञानरत्नकोशः

(विविधाभिः मातृकाभिः संवलितः)

सम्पादको व्याख्याकारश्च
आशीषकुमारचौधरी (ज्योतिषविभागः)
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्,
भोपालपरिसरः, भोपालम्



मान्यताप्रकाशनम्
60-सी मायाकुञ्जम्, मायापुरी
नवदेहली-1100 64 (भारतम्)

प्रकाशक वितरकश्च मान्यताप्रकाशनम्
60-सी, मायाकुञ्जम्, मायापुरी
नवदेहली -1100 64 (भारतम्)
Tel 011 - 2540 7546, 2513 7546
9999 88 9290, 98110 14522
mail at manyataprakashan@gmail.com
manyata_prakashan@yahoo.com

ISBN 10 81-89149-99-7
ISBN 13 978-81-89149-99-4

Barcode



प्रथमसंस्करणम् 2012

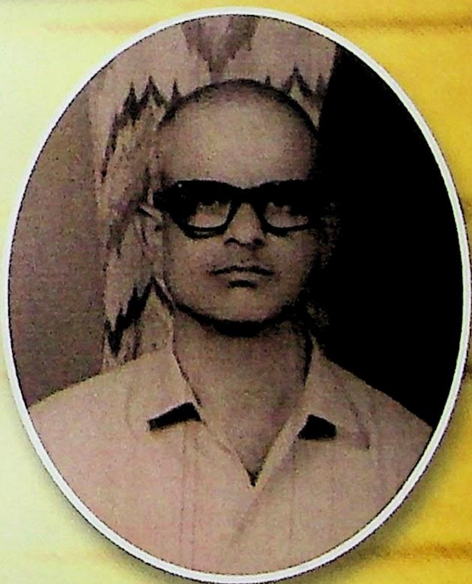
मूल्यम् ₹ 450/-

मुद्रक नेशनल मार्किटिंगस्
998, कटरा मंगलसेन,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6
mail at rakeshnational@gmail.com
कम्प्यूट्रिकृत टङ्कण प्रिन्ट्रेड्स (Printrads) नयी दिल्ली-64

समर्पणम्



स्व. श्री कृष्णकान्त चौधरी



स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद ठाकुर

दादा जी स्व. श्री कृष्णकान्त चौधरी एवं
नाना जी स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद ठाकुर जी
को समर्पित

Agyatvidvatkrit

Vastuvigyanratnakosh

(Edited from Different Manuscripts)

Edited and Commented by

Ashish Kumar Choudhary

Rashtriya Sanskrit Sansthan

Deptt. of Jyotish

Bhopal Campus, **Bhopal**



Manyata Prakashan

60-C, Mayakunj, Mayapuri

New Delhi - 110064 (India)

Publisher & Distributor: Manyata Prakashan
60 - C Mayakunj Mayapuri,
New Delhi - 110064 (India)

Tele: 011 - 2540 7546, 2513 7546
9999 88 9290, 98110 14522

mail at: manyataprakashan@gmail.com
manyata_prakashan@yahoo.com

ISBN 10 81-89149-99-7

ISBN 13 978-81-89149-99-4

Barcode



First Edition 2012

Price ₹ 450/-

Printed by: National Marketings
998 Katra Mangalsain
Main Chawri Bazar
Delhi -110006

mail at: rakeshnational@gmail.com

Computer Typesetting: **Printrades** New Delhi - 110064

प्रो. प.ना. शास्त्री
प्राचार्य



राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानित-विश्वविद्यालय:,
श्रीरणवीरपरिसर:, कोटभलवाल:
जम्मू: - 181122

शुभाशिर्वाद:

आचार्य: **आशीषकुमारचौधरीवर्य:** महता परिश्रमेण **वास्तुविज्ञान-रत्नकोशनामकं मातृकाप्रसूतं** ग्रन्थं प्राकाश्यमानेष्यतीति ज्ञात्वा मोमुदीति मे मन:। अज्ञातकर्तृकसूत्राणि परिशील्य वास्तुविज्ञानतत्त्वं सम्यगालोढ्य तद्विहितरत्नानि विदुषां पुरत: समर्पयतीति विशेष:। सोऽयं ग्रन्थ: वास्तुविदां वास्तुविज्ञानविश्वासरतानां च कृते महदुपकारायेति दृढं विश्वसिमि।

वैष्णवी भगवत्शक्ति: आशीषकुमाराय आयुरारोग्यसौख्यमनुगृह्णातु इति देवीं प्रार्थये।

इति।

प.ना. शास्त्री

प.ना. शास्त्री

प्रो. के.बी. सुब्बरायुडु
प्राचार्य:,
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालय:)
भारतशासनस्य मानव-संसाधन-मन्त्रालयाधीन:
एकलव्यपरिसर:, अगरतला, (पश्चिमत्रिपुरा)



Prof. K.B. Subbarayudu
Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan
(Deemed University)
(Under M/o H.R.D., Govt of India.)
Ekalavya Campus,
Agartala (West Tripura)

शुभासंशनम्

अप्रत्यक्षस्य परब्रह्मण: मायाप्रतिबिम्बिते परिदृश्यमाने संसारे प्रत्यक्षेषु जागत्कपदार्थेषु जडचेतनेषु प्रत्यक्षानां सूर्यचन्द्रादीनां ग्रहाणां प्रत्यक्षं हानोपादानसङ्केतकं शास्त्रं ज्योतिषं प्रत्यक्षमेव इत्यसंदेहास्पदम्। वस्तुत: सर्वं लाभोद्देश्यकं व्यवहारं प्रवर्तयन् मनुष्य: सर्वदा एतच्छास्त्रम् उपयुंक्ते। तदेव उक्तम् -

अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं न किञ्चिदेषा भुवि दृष्टमस्ति।
चिकित्सितं ज्योतिषमन्त्रवादा: पदे पदे प्रत्ययमावहन्ति॥

तत्र एतच्छास्त्राङ्गभूतं वास्तुशास्त्रं न केवलं प्राचीनकाले सामान्य-जनै: उपयुक्तम् अपितु अभिवर्धमाने स्थापत्यकलाप्रयोगे शास्त्रमिदम् अद्यापि बहूपयोगि। अस्मिन् क्रमे युवदैवज्ञेन श्रीमता आशीषकुमारचौधरिणा महता परिश्रमेण भारतवर्षस्य विविधेभ्य: पुस्तकालयेभ्य:/स्थलेभ्य: मातृका-ग्रन्थान् सङ्कलय्य अतीवगाम्भीर्येण तेषु सन्निहिततत्त्वमन्विष्य **वास्तुविज्ञान-रत्नकोष**-इत्यभिधानक: ग्रन्थ: विरचित:। अयं ग्रन्थ: वास्तुतत्त्वं जिज्ञासून्, तदभिसन्धित्सून् छात्रान् अवश्यम् उपकरिष्यति इति मे बलीयान् विश्वास:। भविष्यत्यपि समये श्रीमान् आशीषचौधरीमहोदय: ज्ञानौत्सुक्याग्निना प्रज्ञा-घृतेन शोधयज्ञं विदधीत इत्यहं कामये।

Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan
(Deemed University)
Eklavya Campus
Debendra Chandra [illegible], Mohanpur,
Agartala, Tripura [illegible]-799211

K. B. Subbarayudu
प्रो. के.बी. सुब्बरायुड

रामदेव झा
पूर्व प्रवाचक (ज्योति विभाग)
श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली-16



आवास: ए-260,
शिवालिक मालवीय नगर,
नई दिल्ली-19
फोन : 26682801

वन्दे मातरम्

अज्ञातविद्वत्कृत: **'वास्तुविज्ञानरत्नकोष:' मूल पाण्डुलिपि माधारीकृत्य 101 सूत्राणां संस्कृत व्याख्या सहित:।** सम्पादको व्याख्याकारश्च- श्री आशीष कुमार चौधरी।

वास्तुविज्ञानरत्नकोष: इति सम्प्रति पाण्डुलिपिरूपेणैव दृश्यते। कोऽसौ मूललेखकोऽस्य न ज्ञायते। अत्र प्रधानता सूत्राणामेव। अस्य कोष ग्रन्थस्य नाम्ना ज्ञायते यद् वास्तुविद्या, विज्ञानमयी। विज्ञानरूपा या वास्तुविद्या सा मूल्या अमूल्या रत्नमयी च। रत्नं रत्नानिना कोषे मञ्जूषायां वा संरक्ष्यन्ते अतोऽत्र प्रतीयते यद् बहुविस्तृता वास्तुविद्या एकोत्तरशतनामसु रत्न रूपेषु च संगृह्य पाण्डुलिपि लेखकेन **"वास्तुविज्ञारत्नकोष:"** इति नाम अकारि। एतादृशस्य लघूत्तमस्य कोषस्य संरक्षणाय, संवर्धानाय तन्मूल्य निर्धारणाय च **श्रीआशीषकुमारचौधरी** महोदय: कोषोक्त सूत्राणां व्याख्यां सम्पादनञ्च विधाय प्रकाशनतत्पर: सर्वतोभावेन आशेष धन्यवादार्ह:, पुन: पुन: एतादृशमज्ञातमप्रकाशितं च ज्ञानमयं वस्तुप्रकाशयतु प्रकाशने समर्थश्च भूयादिति प्रार्थये कल्याणीं वाणीं वीणा वादिनीम्।

शुभानि सन्तु। शुभास्ते पन्थान:।

श्रावणशु 2 द्वितीयागुरौ

शुभैषी

रामदेव झा विनोद:

रामदेव झा विनोद

प्रो. हंसधर झा
विद्यावारिधि (Ph.d), धर्मरत्न
आचार्यचतुष्य (गणित/सिद्धान्त-ज्योतिष,
फलित-ज्योतिष, धर्मशस्त्र एवं पुराण)
आचार्य ज्योतिष विभाग
E mail - hansdharjha@yahoo.in



राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय,
संस्कृतमार्ग बागसेवनियाँ,
भोपाल परिसर, भोपाल (म. प्र.)
दूरभाष : 0755-2418043
मो : 09479540636

शुभाशंसनम्

विद्याविनयोपेतेन चिरञ्जीविना प. श्री आशीषकुमारचौधरीमहोदयेन सम्पादितो वास्तुविज्ञानरत्नकोशनामा ग्रन्थो मयाऽऽद्योपान्तमवलोकितः।

वास्तुविज्ञानरत्नकोशस्य विविधाः पाण्डुलिपीः देशस्य विभिन्नभाग-गतसंस्थाभ्यः सङ्कलय्य तासामेकत्र सम्पादनं, परिमार्जनं, व्याख्याकार्यं वा सर्वमप्यनल्पप्रयासफलमेव। ग्रन्थेऽत्र शताधिकवास्तुजातपदार्थानां भेदोप-भेदकथनं ग्रन्थस्यास्य वैशिष्ट्यम्। नात्र सन्देहो यद् ग्रन्थेनानेन नैकविध-शोधार्थिनो भविष्यन्ति लाभान्विता भविष्ये।

आगमिनि कालेऽपि श्रीचौधरीमहोदय एवमेव शास्त्रसंवर्धनं विदधँल्लोके यशोभाग्भवत्विति कामयते ....

हंसधर झा

दैवज्ञो हंसधरः

विषयसूची:



प्राक्कथन

श्यामाकालीमहापीठंश्रीयन्त्रादिस्वरूपकम्।
तत्स्वरूपमहं वक्ष्ये शृणुष्व परमेश्वरि॥१॥
चतुरस्रं त्रिवृत्तञ्च पत्रषोडशकं तथा।
अष्टदलं दशारञ्च तथा वक्ष्ये दशारकम्॥२॥

झोपाख्यं रामदेवं तं करुणामृतसागरम्।
गुरुं विद्यावतां श्रेष्ठं सद्भक्त्या प्रणमाम्यहम्॥३॥
गुरुं हंसधरं नित्यं झोपाख्यं नौमि सर्वदा।
यज्ज्ञानाल्लोकतोऽज्ञानध्वान्तनाशकरं मुदा॥४॥

क्या मैं इस कार्य को पूर्ण कर पाऊँगा इस विषय की कल्पना भी मैंने नहीं की थी। "वास्तुविज्ञानरत्नकोश" जो अत्यन्त प्राचीन कोश ग्रन्थ है जिसकी अत्यन्त प्राचीन प्रति जेसलमेर के जैन ग्रन्थ भण्डार से प्राप्त हुई। उस प्रति का अन्तिम पत्र गायब था। परन्तु जो भी शेष था वह भी जीर्णावस्था में था। मुक्ताबाई जैन ग्रन्थ संग्रह अहमदाबाद गुजरात में भी

इनकी प्राचीन प्रतियाँ प्राप्त तो हुईं, लेकिन यह जीर्णावस्था में थीं। कुछ प्रतियाँ प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में प्राप्त हुई लेकिन ये सभी प्रतियाँ जीर्ण रूप में ही थीं। कुल मिलाकर ६ प्रतियाँ प्राप्त हुईं जिनमें कोई भी प्रति सम्पूर्ण नहीं थी लेकिन इन प्रतियों को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करने पर यह पूर्णता को प्राप्त कर सकता है, ऐसा मैंने सोचा, तदनुसार अध्ययन भी किया। इसी क्रम में हमें मुनि जिन विजय द्वारा १९४५ का इसी विषय से सम्बद्ध अपूर्ण आलेख प्राप्त हुआ जो सम्भवत: किसी प्रियबाला साह द्वारा किया गया था। परन्तु इनके इस कार्य से हमें अभीप्सितकार्य को सम्पादन करने में मदद प्राप्त जरूर हुई, इसके लिए मैं उनका ऋणी रहूँगा। कहीं पर इनके रचनाकार और काल के विषय में कोई-ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं होने से मुझे परेशानी जरूर हुई परन्तु मैं अभी भी इस कार्य में संलग्न हूँ। अगर मुझे इस विषय में जानकारी प्राप्त होती है तो मैं उनको आप के समक्ष रखने का प्रयत्न करूँगा। इनकी पुष्पिकाओं से ज्ञात होता है कि यह करीब ५००-८०० वर्ष प्राचीन जरूर होगा, लेकिन कोई ठोस प्रमाण नहीं है। ऐसा समझा जा सकता है कि अत्यधिक पाठभेद मिलने के कारण इनका पठन-पाठन प्रचुर मात्रा में रहा होगा -

१. तपागच्छ पाटण भण्डार में ७ पन्नों की प्रति के अन्तिम पृष्ठ में निम्न उल्लेख प्राप्त होता है -

"संवत् १५१५ वर्षे कार्तिके श्रीचित्रकूटे व्यलेखि। शुभं भूयात्।"

२. १२ पन्नों की द्वितीय प्रति जिसमें निम्न प्रकार की पुष्पिका लेख है -

इति श्रीवास्तुविचाररत्नकोशसूत्रशतवास्तुविवरणं समाप्तम्।

संवत् १५१६ वर्षे मार्गशीर्षवदि ७ कुजे लेखि ब्रह्मदासकेन।

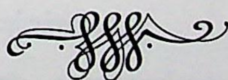
एक अन्य प्रति में कर्णिका पर १३०० इस प्रकार प्राप्त होता है। इसका नाम किसी पुष्पिका में वास्तुविज्ञान, किसी में रत्नकोश, किसी में वस्तुकोश तथा वास्तुरत्नकोश प्राप्त होता है। इन सभी पुष्पिकाओं को क्रमशः क, ख, ग, घ, ङ, च में विभाजित किया गया है। किसी पुष्पिका के प्रथम पन्ना ही गायब मिला तो किसी का अन्तिम लेकिन ये सभी प्रतियाँ जीर्ण होने के कारण अत्यन्त सुलभता से पढ़ा जाना दुष्कर ही था।

इस सबको आधार में लेकर हमने "**वास्तुविज्ञानरत्नकोशः**" ऐसा नाम देना उचित समझा। निश्चय ही ये कार्य आप ही गुरुजनों के आशीर्वाद का प्रतिफल है तथा मैं अपने सभी मित्रों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य को पूर्ण करने में मदद की। मुझे इसे पूरा करने में लगभग ६ साल लगे। अगर मित्रों का सहयोग न होता तो न जाने यह पूरा हो भी पाता। निश्चय ही गुरुजनों का आशीर्वाद तथा मित्रों के सहयोग ने इस कार्य को पूरा किया।

आशीष कुमार चौधरी

ज्योतिष विभाग, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

भोपाल परिसर , भोपाल (म.प्र.)



वास्तुविज्ञानरत्नकोशः

अथातो वास्तुविवरणं समाख्यायते।

समस्तविघ्नहन्तारं गजतुण्डं सुरोत्तमम्।
गणराजं नमस्कृत्य रत्नकोश उदीर्यते॥ १॥

शिष्यो हंसधरस्य शास्त्रविदुषः श्रीरामदेवस्य वा-
ह्याशीर्गुण्यमवाप्य वास्तुविहितं तत्त्वं समालोचयन्।
आशीषाख्यसुभूसुरः कृतमतिर्भूरिप्रयत्नाश्रितो
मोदादत्र करोमि कोशमतुलं वास्तुप्रकारोत्तमम्॥ २॥

1. तत्रादौ त्रीणि भुवनानि कथ्यन्ते। तद् यथा -

1. सुरभुवनम्। 2. नरभुवनम्। 3. नागभुवनम्। इति।

2. त्रिविधं लोकसंस्थानम्

1. देवलोकसंस्थानम्। 2. दानवलोकसंस्थानम्।
3. मानवलोकसंस्थानम्। इति।

क. देवदानवमानवानां संस्थानम्।

ख. 1. दानवसंस्थानम्। 2. मानवसंस्थानम्। 3. गंधर्वसंस्थानम्।

ग. 1. देवस्थानं। 2. दानवस्थानं। 3. मानवस्थानं चेति।

3. त्रिविधा भूमि

1. उन्नतप्रदेशा। 2. निम्नप्रदेशा। 3. समप्रदेशा। इति

क. 1. उच्चा। 2. नीचा। 3. समा।

ख. 1. उन्नतप्रदेशा। 2. नीचप्रदेशा। 3. समप्रदेशा।

4. त्रिविधाः पुरूषाः

1. उत्तमाः। 2. मध्यमाः। 3. अधमाः। इति।

क. 1. उत्तम 2. मध्यम 3. अधमेति।

ख. 1. उत्तमा। 2. अधमा। 3. मध्यमा।

5. त्रयः पदार्थः

धातुमूलजीवाश्चेति

क. 1. धातुपदार्थः। 2. जीवपदार्थः। 3. मूलपदार्थः। इति।

ख. 1. मूलगतपदार्थाः। 2. धातुगतपदार्थाः। 3. जीवगतपदार्थाः।

6. चत्वारः पुरूषार्थाः

1. धर्मः। 2. अर्थः। 3. कामः। 4. मोक्षः। इति।

क. धर्मार्थः। कामः। मोक्षः।

ख. 1. धर्म। 2. अर्थ। 3. काम। 4. मोक्षरूपाः।

7. षट्त्रिंशद् राजवंशाः

1. सूर्यवंशः। 2. सोमवंशः। 3. यादववंशः। 4. कदम्बवंशः।

5. परमारवंशः। 6. इक्ष्वाकुवंशः। 7. चाहुआणवंशः। 8. चौलुक्य-वंशः। 9. मौरिकवंशः। 10. शिलारवंशः। 11. सैन्धववंशः। 12. छिन्दकवंशः। 13. चापोत्कटवंशः। 14. प्रतीहारवंशः। 15. मुडुकवंशः। 16. राष्ट्रकूटवंशः। 17. शकटवंशः। 18. करटवंशः। 19. करटपालवंशः। 20. चन्दिल्लवंशः। 21. गुहिलवंशः। 22. गुहिलपुत्रवंशः। 23. राजपालवंशः। 24. मंकुआणवंशः। 25. धान्यपालवंशः। 26. राजपालवंशः। 27. अनङ्गवंशः। 28. निकुम्भवंशः। 29. दधिकरवंशः। 30. कलचुरवंशः। 31. कालमुखवंशः। 32. दायिकवंशः। 33. हूणवंशः। 34. हरिणवंशः। 35. डोडिवंशः। 36. मारववंशः। इति।

क.

1. ब्रह्मवंश। 2. सूर्यवंश 3. सोमवंश। 4. यादववंश। 5. कुडुम्बवंश। 6. परमारवंश। 7. इक्ष्वाकु। 8. बाह्लीक। 9. चौलुक्य। 10. छन्दिक। 11. सिलार। 12. सैन्धव। 13. डाभी। 14. चापोत्कट। 14. पडीहार। 16. लडुक। 17. राष्ट्रकूट। 18. शक। 19. करटपाल। 20. कोटपाल। 21. बंदिल्ल। 22. गुहिल। 23. गुहिलपुत्र। 24. पौतिक। 24. मोरी। 26. मकुआण। 27. धान्यपाल। 28. राजपाल। 29. अनङ्ग। 30. निकुम्भ। 31. दाडिम। 32. कलिछुर। 33. दधिमुख। 34. हूण। 34. हरितड। 36. डोड। 37. परमार।

ख.

1. रवि। 2. सोम। 3. यादव। 4. कदम्ब। 5. परमार। 6. इक्ष्वाकु। 7. चहूआण 8. रोरीच। 9. सिलर। 10. करण्ड। 11. चण्डिल। 12.

गोहिल। 13. मकुआण। 14. पौलक। 15. राजपाल। 16. धानपाल। 17. देव। 18. निकुम्भ। 19. दघिकर। 20. कोकिल। 21. तरूष्क। 22. दधिपक। 23. हूण। 24. हरिअड। 25. कोवोलिक। 26. कलानुर। 27. हरित। 28. सेभट। 29. राठोऊड। 30. शोलंक। 31. जोधिम। 32. कलश्च।

ग.

1. सूर्यवंश। 2. सोमवंश। 3. यादव। 4. ईक्ष्वाकु। 5. कदंब। 6. परमार। 7. चौहाण। 8.चौलुक्य। 9. छिंदक। 10. मोरी। 11. शेलार। 12. सैन्धव 13. चापोत्कट। 14. प्रतीहार। 15. लकुट। 16. कराट। 17. काल। 18. पाल। 19. टाक। 20. चंडेल। 21. राष्ट्रकूट। 22. शंकु। 23. फरंड। 24. गोहिलपुत्र। 25. गहिलुत्र। 26. पोतिक। 27. मुष्कायण। 28. मकूआंणा। 29. पोलक। 30. राजपालक। 31. धनपालक। 32. धान्यपाल। 33. अनङ्ग। 34. धिंधिम। 35. दधिकर। 36. कोल। 37. कोलानुर। 38. दधिपक। 39. सिंहिलंक-जातिभेद। 40. सोलंकी। 41. दापिक। 42. हूंण। 43. हरिअड। 44. डोड। 45. निकुम्भ। 46. डोडीआ। 47. राष्ट्रकूट जातिभेद 48. मारू राठुडा। 49. माखवा। 50. पातिकर। 51. शेलार। 52. लुइक। 53. फराट। 54. कोल। 55. चिन्दिलु। 56. मुष्कायण। 57. डोडीआंकेति जातिभेदा: अनेककोटिश:॥

घ.

1. सूर्यवंश। 2. सोमवंश। 3. यादववंश। 4. कदम्बवंश। 5. चहुआण। 6. चौलिक्य। 7. छन्दिक 8. सिलार। 9. सैन्धव। 10. चाउडा। 11. पडिहार। 12. तुडक। 13. राठउड। 14. करटवाल। 15. चन्दिल्ल।

16. गुहिल। 17. गउलोत्त। 18. पौमिक। 19. मोरी। 20. मकुआण। 21. अनंग। 22. राजपाल। 23. बारड। 24. दहीया। 25. डाभी। 26. हरीयडा। 27. टाक। 28. सींदा। 29. माषा। 30. हूणा। 31. निकुन्दम। 32. कोल। 33. दधिपक। 34. डेडिया। 35.सूरिमा। 36. परिमारवंशश्चेति।

8. सप्ताङ्ग राज्यम्

1. स्वामि। 2. अमात्यः। 3. जनपदः। 4. भाण्डागारः। 5. दुर्गः। 6. बलं। 7. मित्राङ्गम्। इति।

क. 1. स्वामी। 2. जनपद। 3. अमात्य। 4. कोश। 5. दुर्ग। 6. बल। 7. सुहृदिति।

ख. 1. स्वामी। 2. अमात्य। 3. दुर्ग। 4. राष्ट्र। 5. भण्डार। 6. सैन्य। 7. मित्रां चेति।

9. षण्णवती राजगुणाः

1. वशगुणः। 2. विद्यागुणः। 3. विनयगुणः। 4. विजयगुणः। 5. विवेकगुणः। 6. विचारगुणः। 7. विस्तारगुणः। 8. सदाचारगुणः। 9. सत्यगुणः। 10. शौचगुणः। 11. सन्मानगुणः। 12. समाधानगुणः। 13. सौख्यगुणः। 14. सौजन्यगुणः। 15. सौभाग्यगुणः। 16. रूपगुणः। 17. स्वरूपगुणः। 18. संयोगगुणः। 19. वियोगगुणः। 20. विभागगुणः। 21. सात्यगुणः। 22. संपूणात्वगुणः। 23. सौम्यत्वगुणः। 24. सकलत्वगुणः। 25. सलज्जत्वगुणः। 26. डसनत्वगुणः। 27. प्रभुत्वगुणः। 28. प्रलत्वगुणः। 29. पावकत्वगुणः। 30. पाण्डित्यगुणः। 31. प्रणयिमानत्व-

गुणः। 32. प्रमाणिकत्वगुणः। 33. शरणप्रदत्वगुणः। 34. प्रमोद-गुणः। 35. प्रतापगुणः। 36. प्रारंभगुणः। 37. परिच्छेदगुणः। 38. संग्रहगुणः। 39. विग्रहगुणः। 40. सदाग्रहगुणः। 41. निग्रहगुणः। 42. अनुग्रहगुणः। 43. तुष्टिगुणः। 44. पुष्टिगुणः। प्रतीतिगुणः। 46. प्रशंसागुणः। 47. प्रतिष्ठागुणः। 48. स्थैर्यगुणः। 49. धैर्यगुणः। 50. शौर्यगुणः। 51. चातुर्यगुणः। 52. बुद्धिगुणः। 53. बलगुणः। 54. सामर्थ्यगुणः। 55. आक्षेपगुणः। 56. विरोधगुणः। 57. आदरगुणः। 58. दोषगुणः। 59. विशेषगुणः। 60. विनोदगुणः। 61. वृद्धिगुणः। 62. सिद्धगुणः। 63. कान्तिगुणः। 64. कीर्तिगुणः। 65. विस्फूर्तिगुणः। 66. व्युत्पत्तिगुणः। 67. वात्सल्यगुणः। 68. माङ्गल्यगुणः। 69. महोत्सवगुणः। 70. मन्त्रगुणः। 71. रसिकत्व-गुणः। 72. भावकत्वगुणः। 73. गुरूत्वगुणः। 74. स्मृतिगुणः। 75. शक्तिगुणः। 76. अशक्तिगुणः। 77. युक्तिगुणः। 78. अयुक्ति-गुणः। 79. अनुक्रममगुणः। 80. अभिमानगुणः। 81.दानगुणः। 82. मानगुणः। 83. कारूण्यगुणः। 84. दाक्षिण्यगुणः। 85.दर्शनगुणः। 86. श्रवणगुणः। 87. घ्राणगुणः। 88. रसनगुणः। 89. मर्यादागुणः। 90. मदनगुणः। 91. उदारगुणः। 92. उत्साहगुणः। 93. हर्षगुणः। 94. क्रोधगुणः। 95. लोभगुणः। 96. उत्तमगुणश्चेति।

क.

1. विद्या। 2. विनय। 3. विवेक। 4. विस्तार। 5. सदाचार। 6. सत्य। 7. शौच। 8. सन्मान। 9. संस्थान। 10. समाधान। 11. सौख्य। 12. सौजन्य। 13. सौभाग्य। 14. रूपगुण। 15. स्वरूप 16. संयोग। 17. वियोग। 18. विभाग। 19. सांगत्य। 20. संपूर्णत्व। 21. सोमत्व। 22. सकलत्व। 23. सलज्जत्व। 24. प्रसन्नत्व। 25. प्रभुत्व। 26. प्राञ्जलतव।

27. पालकत्व। 28. पाण्डित्य। 29. प्रणयित्व। 30. प्रमाण। 31. शरण। 32. प्रमोद। 33. प्रसाद। 34. प्रताप। 35. प्रारंभ। 36. प्रभाव। 37. परिच्छद। 38. संग्रह। 39. सदाग्रह। 40.. निग्रह। 41. विग्रह। 42. अनुग्रह। 43. तुष्टि। 44. पुष्टि। 45. प्रीति। 46. प्राप्ति। 47. प्रशंसा। 48. प्रतिष्ठा। 49. प्रतिज्ञा। 50. स्थैर्य। 51. धैर्य। 52. शौर्य। 53. चातुर्य। 54. गांभीर्य। 55. वृद्धि। 56. बल। 57. अधिक्ष। 58. विरोध। 59. विषय। 60. विशेष। 61. विनोद। 62. वृद्धि। 63. सिद्धि। 64. कान्ति। 65. कीर्ति। 66. विस्फूर्ति। 67. व्युत्पत्ति। 68. वात्सल्य। 69. विजय। 70. महोत्सव। 71. मन्त्र। 72. रसिकत्व। 73. भावकत्व। *74. गरूत्व।* 75. स्मृति। 76. मुक्ति। 77. युक्ति। 78. आसक्ति। 79. अनुक्रम। 80. अनुराग। 81. अभिमान। 82. दान। 83. कारूण्य। 84. दर्शन। 85. स्पर्शन। 86. रसन। 87. श्रवण। 88. घ्राण। 89. मर्यादा। 90. मंडन। 91. उदात्तः। 92. उदय। 93. उत्साह। 94. उत्तमगुणा।

ख.

1. वंश। 2. विद्या। 3. विनय। 4. विजय। 5. विवेक। 6. विचार। 7. सदाचार। 8. विस्तार। 9. सत्य। 10. शौच। 11. सन्मान। 12. समाधान। 13. संस्थान। 14. सौख्य। 15. सौजन्य। 16. सौभाग्य। 17. रूप। 18. स्वरूप। 19. संयोग। 20. वियोग। 21. सांगत्य। 22. संपूर्णत्व। 23. सोमत्व। 24. सकलत्व। 25. प्रसन्नत्व। 26. प्रभुत्व। 27. प्रालत्व 28. पालकत्व। 29. पाण्डित्य। 30. प्रणयित्व। 31. प्रसरण। 32. प्रमोद। 33. प्रताप। 34. प्रारम्भ। 35. प्रभाव। 36. परिच्छद। 37. संग्रह। 38. विग्रह। 39. अनुग्रह। 40. सदाग्रह। 41. निग्रह। 42. तुष्टि। 43. पुष्टि। 44. प्रीति। 45. प्राप्ति। 46. प्रशंसा। 47. प्रष्ठि। 48. प्रतिक्षा। 49. स्थैर्य। 50. धैर्य। 51. शौर्य। 52. गांभीर्य। 53. चातुर्य। 54. यशोवंत।

55. सदोदित। 56. सर्वसह। 57. धर्मचर। 58. बुद्धि। 59. बल। 60. अध्यक्ष। 61. निरोध। 62. विनोद। 63. वृद्धि। 64. सिद्धि। 65. कान्ति। 66. कीर्ति। 67. विस्फूत्ति। 68. वात्सल्य। 69. माल्य। 70. महोत्सव। 71. मन्त्र। 72. रसिकत्व। 73. भावकत्व। 74. गुरूत्व। 75. स्मृति। 76. शक्ति। 77. भक्ति। 78. युक्ति। 79. अनुराग। 80. अनक्रम। 81. अभिमान। 82. दान। 83. कारूण्य। 84. दाक्षिण्य। 85. दर्शन। 86. स्पर्शन। 87. श्रवण। 88. रसन। 89. घ्राण। 90. मर्यादा। 91. मण्डन। 92. उदय। 93. उदारता। 94. उत्साह। 95. उत्तमत्व। गुणश्चेति।

ग.

1. वंश। 2. विद्या। 3. विजय। 4. विनय। 5. विवेक। 6. विचार। 7. विस्तार। 8. सदाचार। 9. सत्य। 10. शौच। 11. सन्मान। 12. संस्थान। 13. समाधान। 14. सौख्य। 15. सौजन्य। 16. सौभाग्य। 17. रूप। 18. स्वरूप। 19. संयोग। 20. विभाग। 21. संगति। 22. सम्पूर्ण। 23. सौमत्य। 24. सलत्व। 25. सकलत्व। 26. प्रसन्नत्व। 27. प्राञ्चलत्व। 28. प्रागल्भ्य। 29. पालकत्व। 30. पाण्डित्य। 31. प्रणयत्व। 32. प्रणाम। 33. प्रसरण। 34. प्रमोद। 35. प्रताप। 36. प्रारम्भ। 37. प्रभाव। 38. परिच्छेद। 39. संग्रह। 40. सदाग्रह। 41. आग्रह। 42. निग्रह। 43. विग्रह। 44. तुष्टि। 45. पुष्टि। 46. प्रीति। 47. प्राप्ति। 48. प्रशंसा। 49. प्रतिष्ठा। 50. प्रतिज्ञा। 51. स्थैर्य। 52. धैर्य। 53. शौर्य। 54. चातुर्य। 55. गांभीर्य। 56. बुद्धि। 57. बल। 58. अधिकांक्षा। 59. निरोध। 60. विबोध। 61. वेष। 62. विशेष। 63. विनोद। 64. सिद्धि। 65. कान्ति। 66. कीर्त्ति 67. विस्फूर्ति। 68. व्युत्पत्ति 69. वात्सल्य। 70. माल्य। 71. महोत्सव। 72. मन्त्र। 73. रसिकत्व। 74. पावकत्व। 75. गुरूत्व। 76. स्मृति। 77. शक्ति। 78. युक्ति। 79. आशक्ति।

80. अनुक्रम। 81. अनुवश। 82. अनुराग। 83. अभिमान। 84. वदान्य। 85. कारूण्य। 86. दाक्षिण्य। 87. दर्शन। 88. स्पर्शन। 89. रसन। 90. श्रवण। 91. ग्रहण। 92. मर्यादा। 93. मण्डन। 94. उदय। 95. उदात्त। 96. उत्साह। 97. उत्तमत्व। गुणश्चेति।

10. षट्त्रिंशद् राजपात्रणि

1. धर्मपात्रं। 2. अर्थपात्रं। 3. कामपात्रं। 4. विनोदपात्रं। 5. विद्यापात्रं। 6. विलासपात्रं। 7. विज्ञानपात्रं। 8. विचारपात्रं। 9. क्रीडापात्रं। 10. हास्यपात्रं। 11. श्रृङ्गारपात्रं। 12. वीरपात्रं। 13. दर्शनपात्रं। 13. दर्शनपात्रं। 14. सत्पात्रं। 15. देवपात्रं। 16. राजपात्रं। 17. मानपात्रं। 19. संधिपात्रं। 20. महत्तमपात्रं। 21. अमात्यपात्रं। 22. प्रधानपात्रं। 23. अध्यक्षपात्रं। 24. सेनापात्रं। 25. नागरपात्रं। 26. पूज्यपात्रं। 27. मान्यपात्रं। 28. पदस्थपात्रं। 29. देशीपात्रं। 30. राज्ञीपात्रं। 31. कुलपुत्रिकापात्रं। 32. पुनर्भूपात्रं। 33. वेश्या-पात्रं। 34. प्रतिचारिकापात्रं। 35. गुणपात्रं। 36. दासीपात्रं। इति।

क.

1. धर्मपात्र। 2. अर्थपात्र। 3. विनोदपात्र। 4. कामपात्र। 5. विलासपात्र। 6. विज्ञानपात्र। 7. क्रीडापात्र। 8. हास्यपात्र। 9. श्रृङ्गारपात्र। 10. वीरपात्र। 11. देवपात्र। 12. दानवपात्र। 13. कर्मपात्र। 14. मंत्रिपात्र। 15. महत्तमपात्र। 16. अमात्यपात्र। 17. अध्यक्षपात्र। 18. सेनापालपात्र। 19. नागरपात्र। 20. प्रधानपूजापात्र। 21. मान्यपात्र। 22. राजमान्यपात्र। 23. पदस्थपात्र। 24. देवीपात्र। 25. राज्ञीपात्र। 26. कुलपुत्रिकापात्र। 27. पुनर्भूपात्र। 28. देशीपात्र। 29. प्रतिसारकपात्र। 30. दासीपात्र। 31. देशपात्र। 32. गुणपात्राणि।

ख.

1. धर्मपात्र। 2. अर्थपात्र। 3. विनोदपात्र। 4. कामपात्र। 5. विलासपात्र। 6. विद्यापात्र। 7. विज्ञानपात्र। 8. क्रीडापात्र। 9. हास्यपात्र। 10. शृङ्गारपात्र। 11. वीरपात्र। 12. देवपात्र। 13. दानवपात्र। 14. कर्मपात्र। 15. मंत्रिपात्र। 16. संधिपात्र। 17. महत्तमपात्र। 18. अमात्यपात्र। 19. अध्यक्षंपात्र। 20. सेनापात्र। 21. सेनापालपात्र। 22. प्रधानपूजापात्र। 23. मान्यपात्र। 24. राजमान्यपात्र। 25. पदस्थपात्र। 26. देवीपात्र। 27. राज्ञीपात्र। 28. कुलपुत्रिकापात्र। 29. पुनर्भूपात्र। 30. वेश्यापात्र। 31. प्रतिसारकापात्र। 32. दासीपात्र। 33. देशपात्र। 34. गुणपात्राणि।

ग.

1. धर्मपात्र। 2. अर्थपात्र। 3. कामपात्र। 4. विनोदपात्र। 5. विद्यापात्र। 6. विलासपात्र। 7. विज्ञानपात्र। 8. ज्ञानपात्र। 9. क्रीडापात्र। 10. हास्यपात्र। 11. शृङ्गारपात्र। 12. वीरपात्र। 13. स्नेहपात्र। 14. राजमानपात्र। 15. मंत्रिमपात्र। 16. संधिपात्र। 17. महापात्र। 18. गंधपात्र। 19. अध्यक्षपात्र। 20. सेनापात्र। 21. नागरपात्र। 22. पुष्पपात्र। 23. मान्यपात्र। 24. पदस्थपात्र। 25. कुतूहलपात्र। 26. सारिकापात्र। 27. सेवकपात्र। 28. श्रेष्ठपात्र।

घ.

1. धर्मपात्र। 2. अर्थपात्र। 3. कामपात्र। 4. विनोदपात्र। 5. विद्यापात्र। 6. विशालपात्र। 7. ज्ञानपात्र। 8. विज्ञानपात्र। 9. क्रीडापात्र। 10. हास्यपात्र। 11. शृङ्गारपात्र। 12. वीरपात्र। 13. स्नेहपात्र। 14.

राजपात्र। 15. मान्यपात्र। 16. देवपात्र। 17. दानपात्र। 18. मानपात्र। 19. कर्मपात्र। 20. मंत्रपात्र। 21. सन्धिपात्र। 22. अमात्यपात्र। 23. प्रधानपात्र। 24. अक्षरपात्र। 25. सेनापात्र। 26. नागरपात्र। 27. पुष्पपात्र। 28. पदच्छेदिपात्र। 29. राज्ञीपात्र। 30. पुनर्भूपात्र। 31. वेश्यापात्र। 32. दासीपात्र। 33. पूज्यपात्र। 34. अभिचारिकापात्राणीति।

11. षट्त्रिंशद् राजविनोदाः

1. दर्शनविनोदः। 2. श्रवणविनोदः। 3. कृत्रिमविनोदः। 4. गीतविनोदः। 5. वाद्यविनोदः। 6. नृत्यविनादः। 7. शुद्धलिखित-विनोदः। 8. सख्यविनोदः। 9. वक्तृत्वविनोदः। 10. कवित्व-विनोदः। 11. शास्त्रविनोदः। 12. करविनोदः। 13. विबुध्यविनोदः। 14. अक्षरविनोदः। 15. गणितविनोदः। 16. शस्त्रविनोदः। 17. राजविनोदः। 18. तुरगविनोदः। 19. पक्षिविनोदः। 20. आखेटक-विनोदः। 21. जलविनोदः। 22. यंत्रविनोदः। 23. मंत्रविनोदः। 24. महोत्सवविनोदः। 25. फलविनोदः। 26. गणितविनोदः। 27. पठितविनोदः। 28. पत्रविनोदः। 29. पुष्पविनोदः। 30. कलाविनोदः। 31. कथाविनोदः। 32. केशविनोदः। 33. प्रहेलिकाविनोदः। 34. चित्रविनोदः। 35. चलचित्रविनोदः। 36. स्तवविनोदः। इति।

क.

1. दर्शन। 2. श्रवण। 3. गीत। 4. नृत्य। 5. वाध। 6. नृत्यपाठ। 7. लेख्य। 8. वक्तृत्व। 9. कवित्ववाद। 10. शास्त्र। 11. युद्ध। 12. नियुद्ध। 13. गणित। 14. गज। 15. तुरग। 16. पक्षि। 17. आखेटक। 18. द्यूत। 19. जल। 20. यंत्र। 21. मंत्र। 22. महोत्वसव। 23. पत्र।

24. फल। 25. पुष्प। 26. कला। 27. कथा। 28. प्रहेलिका। 29. पदार्थकरण। 30. तत्त्व। 31. बल। 32. चित्र। 33. सूत्र।

ख.

1. गीतविनोद। 2. वाद्यविनोद। 3. दर्शनविनोद। 4. श्रवणविनोद। 5. नश्त्यविनोद। 6. लिखित। 7. लेख्य। 8. वकतृत्व। 9. कवित्व। 10. वादिशास्त्र। 11. युद्ध। 12. नियुद्ध। 13. गणित। 14. गज। 15. तुरग। 16. पक्षि। 17. आखेटक। 18. द्यूत। 19. जलक्रीडा। 20. यंत्र। 21. मंत्र। 22. महोत्सव। 23. पुष्प। 24. फल। 25. कला। 26. कथा। 27. प्रहेलिका। 28. पदार्थ। 29. तत्त्व। 30. बल। 31. वित्त। 32. सूत्र। 33. खेल। 34. चित्रविनोदेति।

12. अष्टादशविधमास्थानम्

1. मल्लस्थानं। 2. आप्तस्थानं 3. हितस्थानं। 4. स्निग्ध-स्थानं। 5. मंत्रि। 6. महत्तमं। 7. अमात्य। 8. बुद्धिः। 9. सुखं। 10. अभयसुंख। 11. आरामिकं। 12. संग्रामिकं। 13. आम्नायिकः। 14. देशीपुरूषः। 15. धर्मपुरूषः। 16. धनपुरूषः। 17. कामपुरूषः। 18. राजपुरूषः।

क.

1. मल्ल। 2. आप्त। 3. हित। 4. स्त्रिग्ध। 5. मंत्रि। 6. महत्तम। 7. अमात्य। 8. बुद्धि। 9. सुख। 10. उभयसुख। 11.

आम्नाायिक। 12. देशीपुरूष। 13. धर्मपुरूष। 14. धनपुरूष। 15. धन्यपुरूष। 16. काम्यपुरूष। 17. विज्ञानपुरूष। 18. राजपुरूष। इति।

ख.

1. मल्ल। 2. आप्त। 3. हित। 4. स्निग्ध। 5. मंत्रि। 6. अमात्य। 7. महत्तम। 8. बुद्धि। 9. सुख। 10. उभयसुख। 11. आम्नायिक। 12. संग्रामिक। 13. देशीपुरूष। 14. धर्मपुरूष। 15. धनपुरूष। 16. काम। 17. विज्ञान। 18. राज्य। 19. राजमान्य। 20. विनोद।

13. चतस्त्रो राजविद्याः

1. आन्वीक्षिकी। 2. त्रयी। 3. वार्त्ता। 4. दण्डनीतिश्चेति विद्याः।

14. चतस्त्रो राजनीतयः

सामदानविधिहभेनिग्रश्चेति।

क. सामनीति उपप्रदाननीति भेदनीति दण्डनीति।

ख. साम दानं भेदः दण्डेति।

ग . 1. साम। 2. दान। 3. भेद। 4. दण्ड। इति।

15. षट्त्रिंशद् आयुधानि

1. चक्रं। 2. धनुः। 3. वज्र। 4. खड्गं। 5. क्षुरिका। 6. तोमरं। 7. कुंतः। 8. शूलः। 9. त्रिशूलः। 10. शक्तिः। 11. पाशः।

12. अङ्कुशः। 13. मुन्दरः। 14. मक्षिका। 15. भल्लः। 16. भिंडमालः। 17. भुषुण्डिः। 18. लुंठिः। 19. गदा। 20. शंखं। 21. परशु। 22. पट्टिसः। 23. रिष्टिः। 24. कणयः। 25. संपन्नं। 26. हलः। 27. मुशलः। 28. पुलिका। 29. कर्तरि। 30. करपत्रं। 31. तरवारि। 32. कोद्दालं। 33. दुस्फोटः। 34. गोफणः। 35. डाहः। 36. डबूसः। इति।

क.

1. चक्र। 2. धनुष। 3. खग्डं। 4. कुंत। 5. त्रिशूल। 6. शक्ति। 7. पाश। 8. अङ्कुशः। 9. मुन्दर। 10. मक्षिका। 11. भल्ल। 12. भिंडिमाल। 13. मुषंडि। 14. गदा। 15. शक्ति। 16. परशु। 17. पट्टिश। 18. कृष्टि। 19. करणक। 20. कंपन। 21. हल। 22. मुशल। 23. कुलिका। 24. करपत्र। 25. कर्त्तरि। 26. कोपूल। 27. तरवारि। 28. दुस्फोट। 29. गोफणि। 30. डाह। 31. डबूस। 32. लुंठि। 33. दंडशास्त्राणि।

ख.

1. चक्र। 2. पाश। 3. चाप। 4. वज्र। 5. खड्ग। 6. छुरिका। 7. तोमर। 8. कुंतल। 9. शूल। 10. शक्ति। 11. अङ्कुश। 12. मुन्दर। 13. भिंडिमाल। 14. भुषुण्डि। 15. परिघ। 16. गदा। 17. परशु। 18. पट्टिश 19. इष्टि। 20. यष्टि। 21. कणय। 22. कंकण। 23. हल। 24. मुशल। 25. करपत्र। 26. कर्त्तरि। 27. कोदाल। 28. डबुस। 29. नाराच। 30. खेटक। 31. कुठार। 32. दंड। 33. पाश। 34. चर्म। 35. कुलिश। 36. दुस्फोट। 37. डाह।

ग.

1. चक्र 2. धनुष। 3. वज्र। 4. खड्गं। 5. छुरिका। 6. तोमर। 7. नाराच। 8. कुंत। 9. शूल। 10. शक्ति। 11. पास। 12. मुड्ड। 13. भल्ल। 14. मक्षिक। 15. भिंडपाल। 16. भुषुण्डि। 17. लुंठि। 18. दंड। 19. गदा। 20. फांकु। 21. परशु। 22. पशि। 23. रिष्ट। 24. कणय। 25. कणव। 26. कंपन। 27. हल। 28. मुसल। 29. आगलिका। 30. कर्त्तरि। 31. करपत्र। 32. तरवारि। 33. कोदाल। 34. अङ्कुश। 35. करवाल। 36. दुस्फोट। 37. गोफिणि। 38. दाहड। 39. डमरू। इति।

घ.

1. चक्र। 2. धनुष। 3. वज्र। 4. अङ्कुश। 5. खड्गं। 6. छुरिक। 7. तोमर। 8. कुन्त। 9. शूल। 10. त्रिशूल। 11. शक्ति। 12. पाश। 13. मुन्दर। 14. कुद्दाल। 15. दुस्फोट। 16. गोफण। 17. यन्त्रगोलिका। 18. भुषुण्डि। 19. लुण्ठि। 20. गदा। 21. अङ्कुश। 22. परशु। 23. पट्टिश। 24. रिष्ट। 25. कणाय। 26. कंपन। 27. कर्त्तरी। 28. हल। 29. मुशल। 30. गुहिलका। 31. करपत्र। 32. तरवारि। 33. डाब। 34. ढाल। 35. डस्थूर। 36. कुठार। 37. दण्डेति।

ङ.

1. चक्र। 2. धनुष। 3. खड्गं। 4. तोमर। 5. कन्त। 6. त्रिशूल। 7. शक्ति। 8. पाश। 9. अङ्कुश। 10. मुर। 11. मक्षिका। 12. भल्ल। 13. भिण्डिमाला। 14. मुषुण्डि। 15. गदा। 16. शक्ति। 17. परशु। 18. पट्टिसु। 19. कृष्टि। 20. करणक। 21. कंपन। 22. हल। 23. मुशल। 24. हुलिका। 25. परपत्र। 26. कर्त्तरि। 27. कोपूल। 28. तरवारि। 29.

दुस्फोट। 30. गोफणि। 31. डोह। 32. डबूस। 33. लुण्ठि। 34. दण्डशस्त्र।

16. सप्तविशतिः शास्त्राणि

1. शब्दशास्त्रं। 2. छंदःशास्त्रं। 3. अलङ्कारशास्त्रं। 4. काव्यशास्त्रं। 5. कथाशास्त्रं। 6. नाटकशास्त्रं। 7. वैद्यशास्त्रं। 8. निघण्टुशास्त्रं। 9. धर्मशास्त्रं। 10. अर्थशास्त्रं। 11. कामशास्त्रं। 12. मोक्षशास्त्रं। 13. वादशास्त्रं। 14. विद्याशास्त्रं। 15.वास्तुशास्त्रं। 16. विज्ञानशास्त्रं। 17. कलाशास्त्रं। 18. कृत्यशास्त्रं। 19. कल्पशास्त्रं। 20. शिक्षाशास्त्रं। 21. लक्षणशास्त्रं। 22. पुराणशास्त्रं। 23. मंत्रशास्त्रं। 24. तर्कशास्त्रं। 25. गणितशास्त्रं। 26. गांधर्वशास्त्रं। 27. सिद्धान्तशास्त्रं। इति।

क.

1. शब्द। 2. छंद। 3. अलङ्कार। 4. काव्य। 5. कथा। 6. नाट्य। 7. नाटक। 8. निघण्टु। 9. निर्णय। 10. धर्म। 11. अर्थ। 12. काम। 13. मोक्ष। 14. तर्क। 15. गणित। 16. गांधर्व। 17. मंत्र। 18. विद्या। 19. वस्तु। 20. विज्ञान। 21. विनोद। 22. नृत्य।

ख.

1. शब्दशास्त्र। 2. छंदःशास्त्र। 3. अलङ्कारशास्त्र। 4. काव्यशास्त्र। 5. कथाशास्त्र। 6. नाटकशास्त्र। 7. निघण्टुशास्त्र। 8. धर्मशास्त्र। 9. अर्थशास्त्र। 10. कामशास्त्र। 11. मोक्षशास्त्र। 12. तर्कशास्त्र। 13.

वादशास्त्र। 14. वैद्यशास्त्र। 15. वास्तुशास्त्र। 16. व्याख्यानशास्त्र। 17. गणितशास्त्र। 18. गान्धर्वशास्त्र। 19. मंत्रशास्त्र। 20. विनोदशास्त्र। 21. कलाशास्त्र। 22. कल्पशास्त्र। 23. शिक्षाशास्त्र। 24. पुराणशास्त्र। 25. सिद्धान्तशास्त्र। 26. नीतिशास्त्र। 27. वेदशास्त्र। इति।

ग.

1. शब्दशास्त्र। 2. छन्दशास्त्र। 3. अलङ्कारशास्त्र। 4. काव्य-शास्त्र। 5. कथाशास्त्र 6. नाट्यशास्त्र। 7. नाटकशास्त्र। 8. निघण्टुशास्त्र। 9. धर्मशास्त्र। 10. अर्थशास्त्र। 11. कामशास्त्र। 12. मोक्षशास्त्र। 13. तर्कशास्त्र। 14. गणितशास्त्र। 15. गान्धर्वशास्त्र। 16. मंत्रशास्त्र। 17. *वैद्यकशास्त्र।* 18. वास्तुशास्त्र। 19. विज्ञानशास्त्र। 20. विनोदशास्त्र। 21. कृत्यशास्त्र। 22. कलाशास्त्र। 23. कल्पशास्त्र। 24. शिक्षाशास्त्र। 25. लक्षणशास्त्र। 26. पुराणशास्त्र। 27. सिद्धान्तशास्त्र।

17. द्विपञ्चाशत् तत्त्वानि

1. पृथ्वी। 2. आपः। 3. तेजः। 4. वायुः। 5. आकाशं। 6. शब्दः। 7. रूपं। 8. रसः। 9. गंधः। 10. स्पर्शः। 11. रसनं। 12. स्पर्शनं। 13. प्राणः। 14. चक्षुः। 15. श्रोत्रः। 16. वाक्। 17. पाणिः। 18. पादः। 19. गुदः। 20. उपस्थः। 21. मनः। 22. बुद्धिः। 23. अहंकारः। 24. प्रकृतिः। 25. पुरूषः। 26. रक्तः। 27. मांसः। 28. मेदः। 29. मज्जा। 30. अस्थिः। 31. शुक्र। 32. वातः। 33. पित्तः। 34. कफः। 35. मलः। 36. कामः। 37. क्रोधः। 38. लोहः। 39. मात्सर्यः। 40. रागं। 41. नियति। 42. कालविद्या। 43. शुद्धिविद्या। 44. माया। 45. शक्तिः। 46. नादः। 47. बिंदुः। 48.

कला। 49. ज्योतिः। 50. ईश्वरः। 51. श्लेष्मः। 52. सदाशिवः।
इति।

क.

1. पृथिवी। 2. अप। 3. तेज। 4. वायु। 5. आकाश। 6. शब्द। 7. स्पर्श। 8. रस। 9. रूप। 10. गंध। 11. रसन। 12. स्पर्शन। 13. घ्राण। 14. चक्षु। 15. श्रोत्र। 16. त्वक्। 17. बुद्धि। 18. अहंकार। 19. पाणिज्ञ। 20. गुद। 21. पाद। 22. प्रकृति। 23. पुरूष। 24. बिंदु। 25. रक्त। 26. मांस। 27. मेद। 28. अस्थि। 29. मज्जा। 30. शुक्र। 31. बात। 32. पित्त। 33. कफ। 34. मल। 35. काम। 36. क्रोध। 37. लोभ। 38. मोह। 39. भय। 40. मात्सर्य। 41. राग 42. कला। 43. कालविद्या। 44. बुद्धि। 45. शक्ति। 46. ऐश्वर्य। 47. माया। 48. ज्योति। 49. नाद। 50. शक्ति। 51. नियति।

ख.

1. पृथ्वी। 2. अप्। 3. तेजस्। 4. वायु। 5. आकाश। 6. शब्द। 7. रूप। 8. रस। 9. स्पर्श। 10. गन्ध। 11. दर्शन। 12. श्रोत्र। 13. वाक। 14. पाणि। 15. पाद। 16. गुदा। 17. उपस्थ। 18. मनस्। 19. बुद्धि। 20. अहंकार। 21. प्रकृति। 22. पुरूष। 23. रक्त। 24. मांस। 25. मेद। 26. मज्जा। 27. शुक्र। 28. अस्थि। 29. बात। 30. पित्त। 31. कफ। 32. मल। 33. काम। 34. क्रोध। 35. लोभ। 36. मोह। 37. भय। 38. मात्सर्य। 39. राग। 40. नियति। 41. कालविद्या। 42. युद्ध। 43. माया। 44. शक्ति। 45. नाद। 46. बिन्दु। 47. ईश्वर। 48. शिव। 49. सदाशिवेति।

ग.

1. पृथ्वीतत्त्व। 2. अप्तत्त्व। 3. वायुतत्त्व। 4. आकाशतत्त्व। 5. शब्द। 6. स्पर्श। 7. रस। 8. रूप। 9. गंध। 10. रसन। 11. स्पर्शन। 12. घ्राण। 13. चक्षुः। 14. श्रोत्र। 15. त्वक्। 16. पाणि। 17. पाद। 18. गुदा। 19. उपस्थ। 20. मन। 21. बुद्धि। 22. अहंकार। 23. प्रकृति। 24. पुरूष। 25. बिन्दु। 26. रक्त। 27. मांस। 28. मेद। 29. अस्थि। 30. मज्जा। 31. शुक्र। 32. बात। 33. पित्त। 34. कफ। 35. मल। 36. काम। 37. क्रोध। 38. लोभ। 39. मोह। 40. भय। 41. मात्सर्य। 42. राग। 43. नय। 44. कला। 45. कालविद्या। 46. शुद्धविद्या। 47. माया। 48. ज्योतिः। 49. नाद। 50. शक्ति। 51. ईश्वर।

18. द्विसप्ततिः कलाः

1. गीतकला। 2. वाद्यकला। 3. नृत्यकला। 4. गणितकला। 5. पठनपाठनकला। 6. लेखनकला। 7. वक्तृत्वकला। 8. कवित्व-कला। 9. कथाकला। 10. वचनकला। 11. नाटककला। 12. व्याकरणकला। 13. छंदःकला। 14. अलङ्कारकला। 15. दर्शनकला। 16. अभिधानकला। 17. धतुवादकला। 18. धर्मकला। 19. अर्थकला। 20. कामकला। 21. वादकला। 22. बुद्धिकला। 23. शौचकला। 24. विचारकला। 25. नेपथ्यकला। 26. विलास-कला। 27. नीतिकला। 28. शकुनकला। 29. क्रीतकला। 30. वित्तकला। 31. संयोगकला। 32. हस्तलाघवकला। 33. सूत्रकला। 34. कुसुमकला। 35. इन्द्रजालकला। 36. सूचीकर्मकला। 37. स्नेह-कला। 38. पानककला। 39. आहारककला। 40. सौभाग्यकला। 41. प्रयोगकला। 42. मंत्रकला। 43. वास्तुकला। 44. वाणिज्य-

कला। 45. रत्नकला। 46. पात्रकला। 47. वैद्यकला। 48. देशकला। 49. देशभाषितकला। 50. विजयकला। 51. आयुध-कला। 52. युद्धकला। 53. समयकला। 54. वर्त्तनकला। 55. हस्ति-कला। 56. तुरगकला। 57. नारीकला। 58. पक्षिकला। 59. भूमिकला। 60. लेपकला। 61. काष्ठकला। 62. पुरूषकला। 63. सैन्यकला। 64. वृक्षकला। 65. छद्मकला। 66. हस्तकला। 67. उत्तरकला। 68. प्रत्युत्तरकला। 69. शरीरकला। 70. सत्त्वकला। 71. शास्त्रकला। 72. लक्षणकला। इति।

क.

1. वाद्य। 2. नृत्य। 3. गणित। 4. पठित। 5. लिखित। 6. लेखन। 7. वक्तृत्व। 8. वचन। 9. कथा। 10. नाटक। 11. व्याकरण। 12. छंद। 13. अलंकार। 14. दर्शन। 15. अभिधान। 16. धतुकर्म। 17. धर्म। 18. अर्थ। 19. काम। 20. वाद। 21. वृद्धि। 22. पाचक। 23. मंत्र। 24. विनादे। 25. विचार। 26. नेपथ्य। 27. विलास। 28. नीति। 29. शकुन। 30. क्रीडन। 31. तंत्र। 32. संयोग। 33. हस्तलाघव। 34. सूत्र। 35. कुसुम। 36. चन्द्र। 37. जीव। 38. स्नेह। 39. पान। 40. आहार। 41. विहार। 42. सौभाग्य। 43. प्रयोग। 44. गंध। 45. वाद। 46. वस्तु। 47. रत्न। 48. पात्र। 49. विद्या। 50. व्यासकला। 51. दशा। 52. विजय। 53. वणिज। 54. आयुध। 55. युद्ध। 56. समयनियुद्ध। 57. वृद्धन। 58. वर्त्तन। 59. हस्ति। 60. तुरग। 61. पक्षि। 62. नारि। 63. भूमि। 64. लेपन। 65. दंत। 66. काष्ठ। 67. इष्टिका। 68. पाषाण। 69. उत्तर। 70. प्रत्युत्तर। 71. सूचीकर्म। 72. शरीरशस्त्रकलाश्चेति।

खं.

1. गीत। 2. नृत्य। 3. वाद्य। 4. गणित। 5. पठित। 6. लिखित। 7. वक्तृत्व। 8. कवित्व। 9. काव्य। 10. वाचकत्व। 11. नाद। 12. व्याकरण। 13. छंद। 14. अलङ्कार। 15. दर्शन। 16. अभिधान। 17. धातुवाद। 18. बुद्धि। 19. शौच। 20. विचार। 21. नेपथ्य। 22. विलास। 23. नीति। 24. शकुन। 25. क्रीतविक्रय। 26. संयोग। 27. हस्तलाघव। 28. सूत्र। 29. कुसुम। 30. इन्द्रजाल। 31. सूचिकर्म। 32. स्नेहपान। 33. आहार। 34. सौभाग्य। 35. प्रयोग। 36. गंध। 37. वस्तु। 38. रत्न। 39. पात्र। 40. वैद्य। 41. देशभाषित। 42. देशविजय। 43. वाणिज्य। 44. आयुध। 45. युद्ध। 46. समय। 47. वर्त्तन। 48. हस्ती। 49. तुरग। 50. पुरूष। 51. नारी। 52. पक्षी। 53. भूमि। 54. लेप। 55. काष्ठ। 56. सैन्य। 57. वृक्ष। 58. छद्म। 59. हस्त। 60. उत्तर। 61. प्रत्युत्तर। 62. शैल। 63. शारीर। 64. शास्त्रकलाश्चेति।

ग.

1. लिखित। 2. गणित। 3. गीत। 4. वाद्य। 5. नृत्य। 6. पठित। 7. वक्तृत्व। 8. कवित्व। 9. कथा। 10. विनोद। 11. वचन। 12. नाटक। 13. व्याकरण। 14. छन्दस्। 15. अलङ्कार। 16. दर्शन। 17. अभिधान। 18. धातुवाद। 19. धर्मवाद। 20. अर्थवाद। 21. कामवाद। 22. बुद्धि। 23. शौच। 24. मन्त्र। 25. विचार। 26. नेपथ्य। 27. विलास। 28. स्वस्थकर्म। 29. नीति। 30. शकुन। 31. क्रीडन। 32. चित्र। 33. लोहकर्म। 34. काष्ठकर्म। 35. दन्तकर्म। 36. चर्मकर्म। 37. संयोग। 38. हस्तलाघव। 39. कुसुम। 40. इन्द्रजाल। 41. स्नेहपान। 42. आहार। 43. विहार। 44. सौभाग्य। 45. प्रयोगं 46. गंध। 47. वाद। 48. वास्तु।

49. रत्न। 50. पात्र। 51. वैद्य। 52. देशभाषा। 53. विजय। 54. वाणिज्य। 55. आयुध। 56. युद्धसमय। 57. हस्तिपरीक्षा। 58. अश्वपरीक्षा। 59. नरपरीक्षा। 60. नारीपरीक्षा। 61. रत्नपरीक्षा। 62. पक्षिपरीक्षा। 63. भूमिपरीक्षा। 64. इष्टकर्म। 65. पाषाणकर्म। 66. उत्तर। 67. प्रत्युत्तर। 68. वृक्ष। 69. छद्म। 70. शास्त्र। 71. चोरग्रहण। 72. कागडाजय।

घ.

1. गीतकला। 2. नृत्यकला। 3. बृद्धिकला। 4. शौचकला। 5. मंत्रकला। 6. विचारकलाज्ञ। 7. वाद। 8. वास्तु। 9. नेपथ्य। 10. विनोद। 11. विलास। 12. नीति। 13. शकुन। 14. चित्र। 15. संयोग। 16. हस्त। 17. लाघव। 18. कुसुम। 19. इन्द्रजाल। 20. सूचीकर्म। 21. स्नेह। 22. पान। 23. आहार। 24. सौभाग्य। 25. प्रयोग। 26. गंध। 27. वस्तु। 28. पात्र। 29. रत्न। 30. वैद्य। 31. देश। 32. विजय। 33. वाणिज्य। 34. आयुध। 35. युद्ध। 36. नियुद्ध। 37. समय। 38. वर्त्तन। 39. हस्ति। 40. तुरग। 41. पक्षि। 42. पुरूष। 43. नारी। 44. भूमि। 45. लेप। 46. काष्ठ। 47. सैन्य। 48. वृक्ष। 49. छद्म। 50. प्रस्थ। 51. उत्तर। 52. शस्त्र। 53. शास्त्र। 54. गणित। 55. पठित। 56. लिखित। 57. वक्तृत्व। 58. कथा। 59. व्यवन। 60. व्याकरण। 61. नाटक। 62. छन्द। 63. अलङ्कार। 64. दर्शन। 65. अध्यात्म। 66. धातु। 67. धर्म। 68. अर्थ। 69. काम। 70. द्यूत। 71. शरीरकलाश्चेति।

19. चतुरशीतिर्विज्ञानानि

1. हेतुविज्ञानं। 2. तत्त्वविज्ञानं। 3. मोहविज्ञानं। 4. कर्मविज्ञानं। 5. धर्मविज्ञानं। 6. लक्ष्मीविज्ञानं। 7. योगविज्ञानं। 8.

देवविज्ञानं। 9. शंखविज्ञानं। 10. दंतविज्ञानं। 11. काचविज्ञानं। 12. गुटिकाविज्ञानं। 13. रसायनविज्ञानं। 14. वचनविज्ञानं। 15. कवित्वविज्ञानं। 16. गुरूत्वविज्ञानं। 17. पारंपर्यविज्ञानं। 18. ज्योतिषविज्ञानं। 19. वैद्यकविज्ञानं। 20. मेघविज्ञान। 21. यंत्रविज्ञानं। 22. मंत्रविज्ञानं। 23. मर्दनविज्ञानं। 24. नेपथ्यविज्ञानं। 25. मस्तकविज्ञानं। 26. इष्टिविज्ञानं। 27. लेपविज्ञानं। 28. सूत्रविज्ञानं। 29. चित्रकर्मविज्ञानं। 30. रंगविज्ञानं। 31. शूचिकर्म-विज्ञानं। 32. शकुनविज्ञानं। 33. छद्मविज्ञानं। 34. गंधयुक्तिविज्ञानं। 35. आरामविज्ञानं। 36. शैलविज्ञानं। 37. काव्यविज्ञानं। 38. कांस्यविज्ञानं। 39. काष्ठविज्ञानं। 40. कुंभविज्ञानं। 41. लोहविज्ञानं। 42. पत्रविज्ञानं। 43. वंशविज्ञानं। 44. नखविज्ञानं। 45. तृणविज्ञान। 46. प्रासादविज्ञानं। 47. धातुविज्ञानं। 48. विभूषणविज्ञानं। 49. स्वरोदयविज्ञानं। 50. द्यूतविज्ञानं। 51. अध्यात्मविज्ञानं। 52. अग्नि-विज्ञानं। 53. विद्वेषणविज्ञानं। 54. उच्चाटनविज्ञानं। 55. स्तंभन-विज्ञानं। 56. वशीकरणविज्ञानं। 57. वास्तुविज्ञानं। 58. स्वयंभूति-ज्ञानं। 59. हस्तिशिक्षाविज्ञानं। 60. अश्वविज्ञानं। 61. पक्षिविज्ञानं। 62. स्त्रीकामविज्ञानं। 63. चक्रविज्ञानं। 64. वाकारविज्ञानं। 65. पशुपालविज्ञानं। 66. कृषिविज्ञानं। 67. वाणिज्यविज्ञानं। 68. लक्षणविज्ञानं। 69. कलाविज्ञानं। 70. शास्त्रबंधविज्ञानं। 71. शुद्ध-करविज्ञानं। 72. विशुद्धकरविज्ञानं। 73. आखेटकविज्ञानं। 74. कौतूहलविज्ञानं। 75. कोशविज्ञानं। 76. पुष्पविज्ञानं। 77. इन्द्रजालविज्ञानं। 78. पानविधिविज्ञानं। 79. अशनविविधविज्ञानं। 80. विनोदविज्ञानं। 81. सौभाग्यविज्ञानं। 82. शौचविज्ञानं। 83. विनयविज्ञानं। 84. नीतिविज्ञानं। इति।

क.

1. हेतुविज्ञान। 2. तत्त्वविज्ञान। 3. मोहन। 4. कर्म। 5. धर्म। 6. मर्म। 7. शंख। 8. दंत। 9. काच। 10. गुटिका। 11. योग। 12. रसायन। 13. वचन। 14. कवित्व। 15. नेपथ्य। 16. मंत्र। 17. मर्दन। 18. पत्रक। 19. वृष्टिक। 20. लेपकर्म। 21. सूत्र। 22. विचत्र। 23. रंग। 24. सूचीकर्म। 25. शकुन। 26. छद्म। 27. नैर्मल्य। 28. गंधयुक्ति। 29. आसन। 30. शील। 31. काष्ठकर्म। 32. कुंभ। 33. लोह। 34. यंत्र। 35. वंश। 36. नख। 37. तृण। 38. प्रसाद। 39. धातु। 40. विभूषण। 41. स्वरोदय। 42. द्यूत। 43. अध्यात्म। 44. अग्नि। 45. जल। 46. विद्वेषण। 47. उच्चाटन। 48. स्तंभन। 49. वशीकरण। 50. हस्तिशिक्षा। 51. अश्व। 52. पक्षि। 53. स्त्रीकाम। 54. रत्न।। 55. वाकार। 56. पाशुपाल्य। 57. कृषि। 58. वाणिज्य। 59. लक्षण। 60. काल। 61. शास्त्र। 62. शस्त्रबंध। 63. आयुधकार। 64. नियुद्धकार। 65. आखेटक। 66. कुतूहल। 67. कोश। 68: पुष्प। 69. इंद्रजाल। 70. पानविधि। 71. अशन। 72. विनोद। 73. सौजन्य। 74. सौभाग्य। 75. शौच। 76. विनय। 77. नीति। 78. आयुर्वेद। 79. व्यापार। 80. धारण। इति विज्ञानानि।

ख.

1. हेतुविज्ञान। 2. तत्त्वविज्ञान। 3. मोहविज्ञान। 4. कर्मविज्ञान। 5. शंखविज्ञान। 6. काचविज्ञान। 7. गुटिकाविज्ञान। 8. योगविज्ञान। 9. रसायनविज्ञान। 10. वचनविज्ञान। 11. कवित्वविज्ञान। 12. नेपथ्यविज्ञान। 13. मंत्रविज्ञान। 14. तंत्र। 15. मर्दन। 16. क्षेत्रक। 17. इष्टिका। 18. लेपन। 19. सूत्र। 20. शांति। 21. सूचि। 22. शकुन। 23. छद्म। 24.

नैर्मल्य। 25· गंधायुक्ति। 26· आराम। 27· शैल। 28· काव्य। 29· कांस्य। 30· रौप्य। 31· कांचन। 32· काष्ट। 33· लोह। 34· पत्र। 35· वंश। 36· नख। *37· दशन।* 38· तृण। 39· प्रसाद। 40· धातु। 41· भूषण। 42· स्वरोदय। 43· द्यूत। 44· अध्यात्म। 45· अग्नि। 46· जल। 47· विद्वेषण। 48· उच्चाटन। 49· स्तंभन। 50· मोहन। 51· वशीकरण। 52· संदीपन। 53· स्वयंभू। 54· हस्तिशिक्षा। 55· अश्वशिक्षा। 56· पक्षि। 57· स्त्रीकाम। 58· चरित्र। 59· वज्रकर। 60· पशुपालन। 61· कृषि। 62· वाणिज्य। 63· लक्षण। 64· काल। 65· पान। 66· शबंध। 67· नियुधकरण। 68· आखेटक। 69· कुतूहल। 70· कोश। 71· पुष्प। 72· इन्द्रजाल। 73· विनोद। 74· सौभाग्य। 75· वास्तु। 76· शौच। 77· आयुरिति।

ग.

1· हेतुविज्ञानं 2· तत्त्व। 3· मोहन। 4· धर्मविज्ञानं। 5· कर्मविज्ञानं। 6· मर्म। 7· लक्ष्मी। 8· संयोग। 9· शंख। 10· दंत। 11· काक। 12· गुटिका। 13· योग। 14· रसायन। 15· वचन। 16· कवित्व। 17· यंत्र। 18· मंत्र। 19· मर्दन। 20· तंत्र। 21· नेपथ्य। 22· खचित। 23· इष्टिका। 24· लेख्य। 25· सूत्र। 26· चित्रकर्म। 27· शकुन। 28· रंगकर्म। 29· सूचीकर्म। 30· छद्म। 31· कर्मकार। 32· नैर्माल्य। 33· गंधयुक्ति। 34· आराम। 35· शील। 36· कांस्य। 37· काष्ट। 38· कुंभ। 39· लोहपात्र। 40· विश। 41· नख। 42· दशन। 43· तृण। 44· वशीकरण। 45· भूतकर्षणं। 46· वास्तु। 47· स्वयंभू। 48· हस्ती। 49· शिक्षा। 50· पक्षी। 51· हस्तीकाम। 52· अश्वशिक्षा। 53· रत्न। 54· वकार। 55· चक्र। 56· वज्राकार। 57· पशुपालन। 58· कृषि। 59· वाणिज्य। 60· लक्षण। 61· काल। 62· पानविधि। 63· अशनविधि। 64· प्रसाद।

65. धातु। 66. विभूषण। 67. स्वरोदय। 68. धृत। 69. अध्यात्म। 70. अग्निविशेषणं। 71. उच्चाटनं। 72. स्तम्भनं। 73. मोहनं। 74. वंश। 75. बंध। 76. नियुद्धकार। 77. आखेटं। 78. काकु। 79. कुतूहल। 80. कोश। 81. पुष्प। 82. इन्द्रजाल। 83. विनोद। 84. सौभाग्य। 85. प्रयोग। 86. शौच। 87. ज्ञाननय। 88. प्रीति। 89. आयुः। 90. व्यापार। 91. धारण। 92. आयुर्वेदोति।

घ.

1. हेतुविज्ञान। 2. धर्मविज्ञान। 3. चर्मविज्ञान। 4. कर्मविज्ञान। 5. लक्ष्मीयोग। 6. शकर्म। 7. दन्तकर्म। 8. काष्टकर्म। 9. गुटिका। 10. रसायन। 11. वचन। 12. कवित्व। 13. यंत्र। 14. मंत्र। 15. तंत्र। 16. मर्दन। 17. नैपथ्य। 18. सूतिका। 19. इष्ट। 20. लेखन। 21. सूत्र। 22. चित्रकर्म। 23. रंगकर्म। 24. सूचीकर्म। 25. शाकुनि। 26. काव्य। 27. कर्मकर। 28. नैर्मल्य। 29. गंधयुक्ति। 30. आराम। 31. शैल। 32. काव्य। 33. कांस्य। 34. काष्ठ। 35. कुंभकर्म। 36. लोहकर्म। 37. उपदंश। 38. पत्र। 39. वंश। 40. नख। 41. दशन। 42. तृण। 43. प्रासाद। 44. धातु। 45. विभूषण। 46. स्वरोदय। 47. द्यूत। 48. अध्यात्म। 49. अस्थिस्तम्भ। 50. जलस्तम्भ। 51. विद्वेषण। 52. उच्चाटन। 53. स्तम्भन। 54. मोहन। 55. वशीकरण। 56. वास्तु। 57. गजशिक्षा। 58. अश्वशिक्षा। 59. पक्षिशिक्षा। 60. रत्नकर्म। 61. वस्त्रकर्म। 62. वज्रकर्म। 63. पशुपाल्य। 64. कृषि। 65. वाणिज्य। 66. लक्षण। 67. कला। 68. पानविधि। 69. अशनविधि। 70. अस्त्रबन्ध। 71. नियुद्धकार। 72. आखेटक। 73. कुतूहल। 74. इन्द्रजाल। 75. विनोद। 76. सौभाग्यकारण। 77. प्रयोग। 78. शौच। 79. ज्ञान। 80. विनय। 81. नीति। 82. आयु। 83. प्रीति। 84. व्यापार। 85. धारणविज्ञान।

ङ.

1. हेतुविज्ञान। 2. तत्त्वविज्ञान। 3. महोन। 4. कर्म। 5. धर्म। 6. मर्म। 7. शङ्ख। 8. दंत। 9. काच। 10. गुटिका। 11. योग। 12. रसायन। 13. वचन। 14. कवित्व। 15. नेपथ्य। 16. मंत्र। 17. तंत्र। 18. मर्दन। 19. पत्रक। 20. वृष्टिक। 21. लेपकर्म। 22. सूत्र। 23. चित्र। 24. रङ्ग। 25. सूचीकर्म। 26. शकुन। 27. छद्म। 28. नैर्मल्य। 29. गंध। 30. युक्ति। 31. आसन। 32. शील। 33. काष्ठकर्म। 34. कुंभ। 35. लोह। 36. यंत्र। 37. वंश। 38. नख। 39. तृण। 40. प्रसाद। 41. धातु। 42. विभूषण। 43. स्वरोदय। 44. द्यूत। 45. अध्यात्म। 46. अग्नि। 47. जल। 48. विद्वेषण। 49. उच्चाटन। 50. रत्न। 51. वास्तुकार। 52. पाशुपाल्य। 53. कृषि। 54. वाणिज्य। 55. लक्षण। 56. काल। 57. शास्त्र। 58. शास्त्रबन्ध। 59. आयुधकार। 60. नियुद्धकार। 61. आखेटक। 62. कुतूहल। 63. केश। 64. पुष्प। 65. इन्द्रजाल। 66. पानविधि। 67. अशन। 68. विनोद। 69. सौजन्य। 70. सौभाग्य। 71. शौच। 72. विनय। 73. नीति। 74. आयु। 75. वाद। 76. व्यापार। 77. धारणा। इति विज्ञानानि।

20. चतुरशीतिर्देशाः

पूर्वदेशाः

1. अंजनदेशः। 2. गौडदेशः। 3. कान्यकुब्जदेशः। 4. कलिंगदेशः। 5. अंगदेशः। 6. बंगदेशः। 7. कुरंगदेशः। 8. गोलादेशः। 9. राढ्यदेशः। 10. वरेन्द्रदेशः। 11. यामुनदेशः। 12. गंगापारदेशः। 13. अंतर्वेदिदेशः। 14. मगधदेशः।

मध्यप्रदेशाः

1. करूदेशः। 2. डाहलदेशः। 3. कामरूपदेशः। 4. कमाक्षदेशः। 5. उंड्रूदेशः। 6. पुंड्रूदेशः। 7. उड्डीसदेशः। 8. अग्नि-मुखदशेः। 9. पञ्चालदेशः। 10. सूरसेनदेशः। 11. जालंधरदेशः। 12. लोहितपाददेशः।

पश्चिमस्थलदेशाः

1. कच्छदेशः। 2. वालंभदेशः। 3. सौराष्ट्रदेशः। 4. कोंकणदेशः। 5. लाटदेशः। 6. मालवदेशः। 7. अवंतीदेशः। 8. श्रीमालदेशः। 9. अर्बुददेशः। 10. मेदपाटदेशः। 11. मरूदेशः। 12. कंबोजदेशः। 13. पारियात्रदेशः। 14. लोहपुरदेशः। 15. सेरटकदेशः। 16. तामलिप्तदेशः। 17. किरातदेशः। 18. सौवीर-देशः। 19. बोकाणदेशः।

उत्तरापथदेशाः

1. गुर्जरदेशः। 2. सिंधुदेशः। 3. केकाणदेशः। 4. नेपाल-देशः। 5. टाकदेशः। 6. तुरूष्कदेशः। 7. ताईकारदेशः। 8.बर्बरदेशः। 9. कीरदेशः। 10. खसदेशः। 11. कश्मीरदेशः। 12. हिमालयदेशः। 13. श्रीराष्ट्रदेशः। 14. वज्रलदेशः।

दक्षिणापथदेशाः

1. सिंहलदेशः। 2. चउडदेशः। 3. केरलदेशः। 4. पांडुदेशः। 5. आन्ध्रदेशः। 6. विंध्यदेशः। 7. कर्णाटदेशः। 8. द्रविडदेशः। 9.

श्रीपर्वतदेशः। 10. विदर्भदेशः। 11. धाराधरदेशः। 12. कांजीदेशः। 13. तापीतटदेशः। 14. महाराष्ट्रदेशः। 15. आभीरदेशः। 16. नर्मदातटदेशः। 17. मलयदेशः। 18. वराटदेशः। 19. उरलदेशः।

क. पूर्वदेशाः

1. अंगदेश। 2. वंगदेश। 3. गौडदेश। 4. कन्याकुब्ज। 5. कलिङ्ग। 6. गोष्ठ। 7. अंग। 8. बंगाल। 9. कुरंग। 10. राठ। 11. वारंघ्री। 12. यामुन। 13. सरयूपार। 14. अंतर्वेद। 15. मगध।

मध्यदेशाः

1. कुरू। 2. डाहल। 3. कामरूप। 4. उड। 5. पञ्चाल। 6. सौरसेन। 7. जालंधर। 8. लोहपाद।

पश्चिमस्थल

1. वालंभ। 2. सौराष्ट्र। 3. कुंकुण। 4. लाट। 5. श्रीमाल। 6. अर्बुद। 7. मेदपाट। 8. कच्छ। 9. मालव। 10. अवंती। 11. पारियात्र। 12. कंबोज। 13. तामलिप्त। 14. किरात। 15. सेरटक। 16. सौवीर। 17. बोकाण।

उत्तरापथ

1. गुर्जर। 2. सिंधु। 3. केकाण। 4. नेपाल। 5. तुरष्क। 6. ताजिक। 7. बर्बर। 8. खसकीर। 9. कश्मीर। 10. वज्रल। 11. हिमालय। 12. लोहपुर। 13. श्रीराष्ट्र।

दक्षिणापथ

1. मलय। 2. सीघंल। 3. पांठ। 4. केरल। 5. आंध्र। 6. विंध्य। 7. कर्णाट। 8. द्रविड। 9. श्रीपर्वत। 10. वैदर्भ। 11. विराट। 12. उरल। 13. तापीतट। 14. महाराष्ट्र। 15. आभीर। 16. नर्मदा। 17. कामाक्ष। 18. कंडु। 19. पापांतिका। 20. चौड। 21. आराढ्य। 22. वरेन्द्र। 23. गंगापार। 24. सौसष। 25. कांती। 26. नागणिक। 27. द्वीपदेशाश्चेति।

ख.

1. कुरंग। 2. बंगाल। 3. आराध्य। 4. वरणेंद्र। 5. यामन। 6. गंगापार। 7. अंतर्वेध। 8. मगध।

मध्य

1. कुरू। 2. डाहल। 3. कामरू। 4. पुंद्रक। 5. पञ्चाल। 6. अग्नि। 7. कास। 8. सूरसेन। 9. जालंधर। 10. लोहितपाद।

अथ पश्चिमायां दिशि

1. काछल। 2. वालंभ। 3. सौराष्ट्र 4. कुंकण। 5. लाड। 6. श्रीमाल। 7. अर्बुद। 8. मेदपाट। 9. मारू। 10. मावल। 11. अवंति। 12. नागणित। 13. किरात। 14. शकट। 15. सौवीर। 16. बोकाण।

उत्तरपंथे

1. गुर्जर। 2. सिंधु। 3. केकाण। 4. नेपाल। 5. तुष्क। 6.

तायक। 7. बब्बर। 8. बजूर। 9. कीर। 10. कश्मीर। 11. हिमालय। 12. लोहपुर। 13. श्रीराज्य।

दक्षिणदिशि

1. पांडु। 2. कौरल। 3. पाडल। 4. अद्र। 5. वंध्य। 6. कर्कट। 7. द्राविड। 8. श्रीपर्वत। 9. तंद्रभद्र। 10. धरानंग। 11. उरल। 12. जीमूत। 13. मुलतान। 14. तापीतट। 15. महातट। 16. महाराष्ट्र। 17. आभीर। 18. नर्मदातट। 19. कामाक्षा। 20. हूणदेश। 21. कलिंग। 22. मन्द। 23. सुमंतदेश। 24. द्वीपेति।

ग. पूर्वदिशि

1. गौड। 2. कान्यकुब्ज। 3. कलिंग। 4. गोल। 5. वंग। 6. कुरंग। 7. बंगाल। 8. आराट। 9. वरेंद्र। 10. यामन। 11. गंगापार। 12. अंतर्वेध। 13. मगध।

मध्य देश

1. कुरूदेश। 2. धाहल। 3. कामरूप। 4. बंबु। 5. पुंद्र। 6. चोड। 7. मालव। 8. अग्नि। 9. पञ्चाल। 10. सूरसेन। 11. जालंधर। 12. लोहितपाद।

पश्चिम

1. काच्छल। 2. वालंभी। 3. सौराष्ट्र। 4. कुंकण। 5. कंबोज। 6. अर्बुद। 7. मेदपाट। 8. मारू। 9. कच्छ। 10. मालवु। 11. पारियात्र।

12. कंबोज। 13. तामलिप्त। 14. अवंती। 15. नागाणित। 16. किरात। 17. शकुंत। 18. सौवीर। 19. कुंकण। 20. बोकाण।

उत्तरिं

1. गूजराति। 2. सिंधु। 3. नेपाल। 4. गुर्जर। 5. भोट। 6. टाक। 7. तुरष्क। 8. तायक। 9. बबर। 10. बूसर। 11. काश्मिर। 12. बजुर। 13. हिमालय। 14. लोहपुर। 15. श्रीकाष्ठ। 16. राज्य।

दक्षिण

1. मालय। 2. शिधल। 3. कौरिल। 4. पाडल। 5. अंध्र। 6. विंध्य। 7. कर्णाटक। 8. द्राविड। 9. श्रीपर्वत। 10. वैदर्भ। 11. वैराट। 12. धारउर। 13. लाञ्ज। 14. तापीतट। 15. महाराष्ट्र। 16. आभीरदेश। 17. नर्मदातट। 18. कामाक्षा। 19. कच। 20. पापांतिक। 21. चोड।

घ. पूर्वदेशः

1. अंगदेशः। 2. बंगदेश। 3. गौडदेश। 4. कान्यकुब्ज। 5. कलिंग। 6. गोष्ट। 7. अंग। 8. बंगाल। 9. कुरंग। 10. सरठ। 11. वारंध्री। 12. यामुना। 13. सरयूपार। 14. अंतर्वेद। 15. मगध।

मध्य

1. कुरू। 2. डाहल। 3. कामरू। 4. चोड। 5. पंचाल। 6. सौरसेन। 7. जालंधर। 8. लोहपाद।

पश्चिमस्थल

1. वालंभ। 2. सौराष्ट्र। 3. कुंकुण। 4. लाट। 5. श्रीमाल। 6. अर्वुद। 7. मेदपाट। 8. कच्छ। 9. मालव। 10. अवंती। 11. पारियात्र। 12. कंबोज। 13. तामलिप्त। 14. किरात। 15. सेरटक। 16. सौवीर। 17. वोक्काण।

उत्तरापथ

1. गूर्जर। 2. सिंधु। 3. केकाण। 4. नेपाल। 5. तुरष्क। 6. ताजिक। 7. बर्बर। 8. खस। 9. कीर। 10. काश्मीर। 11. वज्रला। 12. हिमालय। 13. लोहपुर। 14. श्रीराज।

दक्षिणापथ

1. मलय। 2. सीघल। 3. पांड। 4. कौरल। 5. अंध्र। 6. विंध्य। 7. कर्णाट। 8. द्रविड। 9. श्रीपर्वत। 10. वैदर्भ। 11. विराट। 12. ओरल। 13. तापीतट। 14. महाराष्ट्र। 15. आभीर। 16. नार्मद। 17. कामाक्ष। 18. कंदु। 19. पापांतिका। 20. चौड। 21. आराध्य। 22. वरेन्द्र। 23. गंगापार। 24. सौसष। 25. कांती। 26. नागणिक। 27. द्वीपदेशाश्चेति।

21. द्वात्रिंशल्लक्षणस्थानानि

1. स्वर्गलक्षणं। 2. मर्त्त्यलक्षणं। 3. पाताललक्षणं। 4. तनुलक्षणं। 5. विद्यालक्षणं। 6. विज्ञानलक्षण। 7. वास्तुलक्षणं। 8. विनोदलक्षणं। 9. वादलक्षणं। 10. कलालक्षणं। 11. गीतलक्षणं। 12. वाद्यलक्षणं। 13. नृत्यलक्षणं। 14. रूपलक्षणं। 15. धर्मलक्षणं।

16. अर्थलक्षणं। 17. कामलक्षणं। 18. मोक्षलक्षणं। 19. देशलक्षणं। 20. पात्रलक्षणं। 21. समयलक्षणं। 22. पुरूषलक्षणं। 23. ज्योतिष्कलक्षणं। 24. चित्रलक्षणं। 25. स्त्रीलक्षणं। 26. गजलक्षणं। 27. तुरगलक्षणं। 28. पक्षिलक्षणं। 29. सत्त्वलक्षणं। 30. व्यापार-लक्षणं। 39. वस्तुलक्षणं। 32. विवेकलक्षणं। इति।

क.

1. स्वर्ग। 2. पाताल। 3. मृत्यु। 4. रूप। 5. विद्या। 6. मनु। 7. विज्ञान। 8. वस्तु। 9. विनोद। 10. वार्ता। 11. गीत। 12. वाद्य। 13. नृत्य। 14. रूपक। 15. धर्म। 16. अर्थ। 17. काम। 18. मोक्ष। 19. काल। 20. देश। 21. पात्र। 22. द्रव्य। 23. समय। 24. पुरूष। 25. स्त्री। 26. गज। 27. पक्षी। 28. तुरग। 29. धर्म। 30. रत्न। 31. मितहार। 32. सद्यवस्तु ज्ञानमिति।

ख.

1. स्वर्गलक्षण। 2. मृत्युलक्षण। 3. पाताललक्षण। 4. तत्त्व-लक्षण। 5. विद्यालक्षण। 6. विज्ञानलक्षण। 7. वास्तु। 8. विनोद। 9. वाद। 10. कला। 11. कल्प। 12. गीतलक्षण। 13. वाद्यलक्षण। 14. नृत्यलक्षण। 15. कृत्य। 16. धर्म। 17. अर्थ। 18. काम। 19. मोक्ष। 20. काल। 21. पात्र। 22. पुरू। 23. स्त्रीलक्षण। 24. गज। 25. तुरग। 26. पक्षि। 27. रत्न। 28. पान। 29. सत्त्व। 30. वस्तु। 31. भद्र। 32. आहार। एतानि शुभलक्षणानि।

ग.

1· स्वर्गलक्षण। 2· मृत्यु। 3· पाताल। 4· तत्त्व। 5· विद्या। 6· विज्ञान। 7· ज्ञान। 8· वास्तु। 9· विनोद। 10· वाद। 11· कला। 12· कल्प। 13· गीत। 14· वाद्य। 15· नृत्य। 16· कृत्यु। 17· धर्म। 18· अर्थ। 19· काम। 20· मोक्ष। 21· देश। 22· काल। 23· पात्र। 24· पुरू। 25· स्त्री। 26· तुरग। 27· पक्षी। 28· रत्न। 29· सदव्यापार। 30· सत्त्व। 31· आहार। 32· वस्तुलक्षणानि।

22. चतुर्विंशतिविधं गृहम्

1. प्रासाद। 2. आयतन। 3. हर्म्यं। 4. गृहं। 5. कोश। 6. कोष्ठागारं। 7. पानीयगृहं। 8. शौचगृहं। 9. शालगृहं। 10. मठस्थानं। 11. सत्रागारं। 12. श्रृंगारगृहं। 13. धर्मस्थानं। 14. विनोदस्थानं। 15. अशाला। 16. गजशाला। 17. वास्तुभुवनं। 18. मंडपं। 19. भोजनशाला। 20. तापसशाला। 21. अग्रासनं। 22. आवेशनं। 23. अर्धस्थानं। 24. राजांगणम्। इति।

क.

1· प्रासाद। 2· हर्म्य। 3· आयतन। 4· गृह। 5· कोश। 6· कोष्ठागार। 7· पानीयगृह। 8· शौचगृह। 9· शालागृह। 10· माल्यगृह। 11· मठगृह। 12· सत्रागार। 13· श्रृंगारगृह। 14· धर्मस्थान। 15· विनोदस्थान। 16· मंदिर। 17· हस्तिशाला। 18· मंडपशाला। 19· अन्नशाला। 20· भोजनशाला। 21· शयनशाला। 22· गर्भागार। 23· सत्रास्थान। 24· राज्यांगणं। चेति।

ख.

1. प्रासाद। 2. आयतन। 3. हर्म्य। 4. गृह। 5. कोश। 6. कोष्ठागार। 7. पानीगृह। 8. धौतगृह। 9. शालागृह। 10. माल्यगृह। 11. मठस्थान। 12. सत्रागार। 13. श्रृंगारगृह। 14. धर्मस्थान। 15. विनोदस्थान। 16. मंदुर। 17. हस्तिशाला। 18. वासमंडप। 19. महानसं। 20. भोजनशाला। 21. अग्रासनं। 22. अवेशनं। 23. अर्थस्थानं। 24. राजांगणं इति।

घ.

1. प्रासाद। 2. हर्म्य। 3. आयतन। 4. गृह। 5. कोश। 6. कोष्ठागार। 7. पानीयगृह। 8. शौचगृह। 9. शालागृह। 10. मालागृह। 11. माठस्थान। 12. सत्रागार। 13. शृङ्गारस्थान। 14. धर्मस्थान। 15. विनोदस्थान। 16. वाजिशाला। 17. हस्तिशाला। 18. वासमंडप। 19. महानस। 20. भोजनशाला। 21. अग्रासन। 22. आवेशन। 23. अर्थस्थान। 24. राजांगणं चेति।

23. अष्टोत्तरशतं मङ्गलम्

1. ब्रह्मा। 2. विष्णुः। 3. महेश्वः। 4. आदित्य :। 5. लोकपालः। 6. अग्निः। 7. अमरः। 8. सागरः। 9. नदीः। 10. पर्वतः। 11. गगनः। 12. अहर्गणः। 13. गंधर्वः। 14. स्कन्दः। 15. विनायकः। 16. ज्योतिष्कः। 17. तीर्थः। 18. द्विजः। 19. वरः। 20. धर्मशास्त्रं। 21. वेदः। 22. पद्मः। 23. पर्वांशः। 24. कौस्तुभः। 25. कानः। 26. रूप्य :। 27. ताम्रः। 28. घृतः। 29. मधुः। 30. मद्यः। 31. सिद्धान्तः। 32. चन्दनं। 33. श्वेतवस्त्रं। 34. वेश्या। 35. रोचना। 36. मृत्तिका। 37. गोमयं। 38. शस्त्रं। 39. अंजनं।

40. ओषधं। 41. मणिमयं। 42. शिला। 43. मोदकं। 44. शंखं। 45. प्रियंङ्गु। 46. वाचं। 47. पुष्पं। 48. श्रुतं। 49. सर्षपं। 50. दधि। 51. दूर्वा। 52. अक्षतं। 53. उदंबरः। 54. आम्रं। 55. छत्रं। 56. वादित्रं। 57. हस्ति। 58. मुक्ताफलं। 59. खंजरीट। 60. वृशः। 61. ध्वजः। 62. हंसः। 63. कन्या। 64. दर्पणं। 65. पीठः। 66. कुशाः। 67. तुरंगः। 68. वेणुः। 69. वीणाः। 70. ध्वनिः। 71. सिंघः। 72. मेघः। 73. स्वस्तिक। 74. तोरणः। 75. कुंभः। 76. चामरः। 77. गौ सवत्सा। 78. आर्द्रमांसः। 79. स्त्री सवत्सा। 80. वाहनः। 81. प्रदानः। 82. विद्या। 83. पानीयं। 84. तुष्टिः। 85. पुष्टिः। 86. प्रसादः। 87. उल्लोचः। 88. सत्यं। 89. पूर्णपात्रं। 90. आर्द्रशाकः। 91. आमिषः। 92. पिप्पलपत्रम्। 93. श्रीवृक्षः। 94. तालवृक्षः। 95. पूजा। 96. निधिः। 97. नरः। 98. सहया। 99. गौरी। 100. गङ्गा। 101. सरस्वती। 102. नर्मदा। 103. यमुना। 104. कमला। 105. सिद्धि :। 106. प्रीतिः। 107. कीर्तिः। 108. बीजः। इति।

क.

1. ब्रह्मा। 2. विष्णु। 3. महेश्वर। 4. स्कन्द। 5. आदित्य। 6. लोकपाल। 7. अग्नि। 8. अमर। 9. सागर। 10. नदी। 11. पर्वत। 12. गगन। 13. ग्रह। 14. गण। 15. गंधर्व । 16. चन्द्र। 17. विनायक। 18. ज्योतिष। 19. धर्मशास्त्र। 20. द्विजवर। 21. वेद। 22. पद्म। 23. प्रदीप। 24. कौस्तुभ। 25. कांचन। 26. रूप्य। 27. ताम्र। 28. घृत। 29. मधु। 30. मद्य। 31. सिद्धान्त। 32. चंदन। 33. सितवस्त्र। 34. वेश्या। 35. रोचना। 36. मृत्तिका। 37. गोमय। 38. शस्त्र। 39. अंजन। 40. औषध। 41. अक्षत। 42. रत्नमणि। 43. मोदक। 43. शङ्ख। 45. प्रियङ्ग।

46. जव। 47. श्रवेतपुष्प। 48. सर्षप। 49. दधि। 50. आम्र। 51. उदुंबर। 52. छत्र। 53. हस्ति। 54. वीजपूरक। 55. मुक्ताफल। 56. दूर्वा। 57. खंजरीट। 58. वृषभ। 59. ध्वज। 60. हंस। 61. कन्या। 62. दर्पण। 63. मत्स्य। 64. तुरंगम। 65. गीत। 66. वीणा। 67. ध्वनि। 68. सिंह। 69. मेघ। 70. स्वस्ति। 71. तोरण। 72. कुभ। 73. चामर। 74. गौ सवत्सा। 75. आद्रमांस। 76. स्त्री सुपुत्रा। 77. वाहन। 78. प्रदान। 79. विद्या। 80. पानीय। 81. पुष्टि। 82. तुष्टि। 83. प्रसाद। 84. उल्लोच। 85. पूर्णपात्र। 86. आर्द्रशाखा। 87. प्रियवाक्य। 88. श्रीवृक्ष। 89. तालवृंत। 90. पूजा। 91. निधि। 92. नरसहस्त्र। 93. गौरी। 94. गंगा। 95. सरस्वती। 96. नर्मदा। 97. यमुना। 98. कमला। 99. सिद्धपीठ। 100. कीर्ति। इति मंगलानि।

ख.

1. ब्रह्मा। 2. विष्णु। 3. महेश्वर। 4. स्कन्द। 5. आदित्य। 6. लोकपाल। 7. अग्निपाल। 8. अमर। 9. सागर। 10. नदी। 11. पर्वत। 12. गगन। 13. ग्रहण। 14. गंधर्व। 15. नायक 16. स्वज्योतिष। 17. तीर्थ। 18. द्विजवर। 19. धर्मशास्त्रविद्। 20. संद्रापथ। 21.कौस्तुभ। 22. कांचन। 23. रूप्य। 24. ताम्र। 25. मधु। 26. मद्य। 27. सिद्धान्त। 28. चंदन। 29. श्रवेतवस्त्र। 30. वेश्या। 31. गोरोचन। 32. मृत्तिका। 33. गोमय। 34. शास्त्र 35. भोजन। 36. औषधी। 37. कमल। 38. मद्य। 39. शय्या 40. पोत। 41. प्रियवाक्य 42. प्रीति। 43. रत्न। 44. मणिशाला। 45. मोदक। 46. शङ्ख। 47. प्रिय। 48. वचा। 49. श्वेतपुष्प। 50. सर्षप। 51. दधि। 52. दूर्वा। 53. अक्षत। 54. चंदन। 55. वंदन। 56. माला। 57. उंदबर। 58. आम्ल 59. छत्र। 60. वादित्र। 61. हस्ति।

62. बीजपुर। 63. मुक्ताफल। 64. खंजरीट। 65. वृषभ। 66. हंस। 67. कन्या। 68. दर्पण। 69. पीठ। 70. कुश। 71. तुरंगम। 72. गीत। 73. वेणु। 74. सिंह। 75. मेघ। 76. मेष। 77. स्वस्तिक। 78. तोरण। 79. कुंभ। 80. चामर। 81. सवत्सा गौ। 82. आद्रमांस। 83. स्त्रीपुत्र। 84. विप्रदान। 85. वाहन। 86. विद्या। 87. आर्द्रामलक। 88. आमिष 89. पिप्पल। 90. श्रीवृक्ष। 91. तालवृक्ष। 92. पूजा। 93. निधि। 94. नगरनायक। 95. गौरी। 96. गंगा। 97. सरस्वती। 98. यमुना। 99. नर्मदा। 100. प्रसिद्वा। 101. कीर्तयश्चेति मंगलम्।

ग.

1. ब्रह्मा। 2. विष्णु। 3. महेश्वर। 4. वीतराग। 5. स्कन्द। 6. आदित्य। 7. लोकपाल। 8. गान्धर्व। 9. चंच। 10. विनायक। 11. ज्योतिष्क। 12. तीर्थ। 13. द्विज। 14. धर्मशास्त्र। 15. वेदशास्त्र। 16. पुराण। 17. पद्रा 18. पर्यक। 19. कौस्तुभ। 20. कांचन। 21. रूप्य। 22. ताम्र। 23. घृत। 24. मद्य। 25. मधु। 26. सिद्धान्त। 27. श्वेतांबर। 28. गोरोचन। 29. मृत्तिका। 30. अग्रि। 31. अमर। 32. सागर। 33. नदी। 34. पर्वत। 35. गगन। 36. ग्रहण। 37. गोमय। 38. शस्त्र। 39. अंजन। 40. ओषधीरत्न। 41. मनशाला 42. मोदक। 43. संरक। 44. वाजित्र। 45. प्रियंगु। 46. श्रवेतपुष्प। 47. सर्षप। 48. दधि। 49. दूर्वा। 50. अक्षत। 51. आम्र। 52. उदुम्बर। 53. छत्र। 54. वाजित्र। 55. दर्भ। 56. हस्ति। 57. बीजपुर। 58. मुक्ताफल। 59. खटरीट। 60. वृषभ। 61. राजहंस। 62. कन्या। 63. दर्पण। 64. प्रदीप। 65. अंकुश। 66. तुरंग। 67. वेणु। 68. वीणा। 69. ध्वनि। 70. भूमि। 71. सह। 72. मेष। 73. मेघ। 74. स्वस्तिक। 75. तोरण। 76. कुंभ। 77. चमर। 78.

सर्वथ्य। 79. गौ। 80. आर्द्रमांस। 81. स्त्रीपुरूषयुग्म। 82. वाहन। 83. प्रदान। 84. विद्या। 85. पानीय। 86. तुष्टि। 87. पुष्टि। 88. प्रसाद। 89. उल्लास 90. मदिरा। 91. सैन्य। 92. वोर्णपात्र। 93. आर्द्रशाक। 94. पिप्पलपत्र। 95. श्रीवृक्ष फल। 96. तालवृक्ष। 97. पूजा। 98. निधि। 99. गौरी। 100. गंगा। 101. सरस्वती। 102. नर्मदा 103. यमुना। 104. सिद्धि। 105. प्रीति। 106. कीर्तयश्चेति।

घ.

1. ब्रह्मा। 2. विष्णु। 3. महेश्वर। 4. वीतराग। 5. स्कन्द। 6. आदित्य। 7. अग्नि। 8. अमर। 9. सागर। 10. नदी। 11. पर्वत। 12. गगन। 13. ग्रह। 14. गण। 15. गंधर्व। 16. चन्द्र। 17. विनायक। 18. ज्योतिष। 19. धर्म। 20. शास्त्र। 21. द्विजवर। 22. वेद। 23. पद्म। 24. प्रदीप। 25. कौस्तुभ। 26. कांचन। 27. रूप्य। 28. ताम्र। 29. घृत। 30. मधु। 31. मद्य। 32. सिद्धान्त। 33. चन्दन। 34. सितवस्त्र। 35. वेश्या। 36. रोचना। 37. मृत्तिका। 38. गोमय। 39. शस्त्र। 40. अंजन। 41. औषध। 42. अक्षत। 43. रत्नमणि। 44. मोदक। 45. शंख। 46. प्रियंगु। 47. जव। 48. श्वेतपुष्प। 49. सर्षप। 50. दधि। 51. आम्र। 52. उदुम्बर। 53. छत्र। 54. वादित्र। 55. हस्ति। 56. बीजपूरक। 57. मुक्ताफल। 58. दूर्वा। 59. खंजरीट। 60. वृषभ। 61. ध्वज। 62. हंस। 63. कन्या। 64. दर्पण। 65. मत्स्य 66. तुरंगम। 67. गीत। 68. वीणा। 69. ध्वनि। 70. सिंह। 71. मेघ। 72. स्वस्ति। 73. तोरण। 74. कुंभ। 75. चामर। 76. गौ। 77. सवत्सा। 78. आर्द्र। 79. मांस। 80. स्त्री सुपुत्रा। 81. वाहन। 82. प्रदान। 83. विद्या। 84. पानीय। 85. पुष्टि। 86. तुष्टि। 87. प्रसाद। 88. उल्लोच। 89. पूर्णपात्र। 90. आर्द्रशाखा।

91. प्रियवाक्य। 92. श्रीवृक्ष। 93. तालवृंत। 94. पूजानिधि। 95. नरसहस्त्र। 96. गौरी। 97. गंगा। 98. सरस्वती। 99. नर्मदा। 100. यमुना। 101. कमला। 102. सिद्धपीठकीर्ति। इति मंगलानि।

24. त्रिविधं दानम्

1. अभयदानं। 2. उपकारदानं। 3. द्रव्यदानं। 4. इति दाननि।

क. उभयदान। पर्णदानं। उपायकरदान।

ख. अभय उपकारद्रव्यं।

25. पच्चविधं यशः

1. ज्ञानकृतं। 2. प्रतापकृतं। 3. पराक्रमकृतं। 4. सदाचारकृतं। 4. रूपकृतं। इति।

क.

1. ज्ञानकृतं। 2. प्रतापकृतं। 3. पराजयकृत। 4. जन्मकृतं। 5. सदाचार वर्तितमिति।

ख.

1. जनतन्वतां यशः। 2. प्रतापः। 3. कीर्ति। 4. पराक्रमः। 5. रूपसदाचार वर्णकृतश्चेति।

ग.

1. जन्मरूपं। 2. बालकृतं। 3. प्रतापकृतं। 4. कीर्तिरूपं। 5. पराक्रमरूपं।

घ.

1. ज्ञानकृतयश। 2. प्रतापयशः। 3. पराक्रमयशः। 4. सदाचारयशः। 5. वर्णनः।

26. सप्तविद्या कीर्तिः

1. दानकीर्तिः। 2. पुण्यकीर्तिः। 3. काव्यकीर्तिः। 4. वक्तृत्वकीर्तिः। 5. वर्तनकीर्तिः। 6. शौर्यकीर्तिः। 7. विद्वज्जनकीर्तिः। इति।

क.

1. दानकीर्ति। 2. पुण्य। 3. वर्तन। 4. विज्ञान। 5. काव्य। 6. वकृत्व।

ख.

1. दानकीर्ति। 2. पुण्यकीर्ति। 3. विद्वज्जनकीर्ति। 4. वक्तृत्व-कीर्ति। 5. काव्यकीर्ति। 6. वर्तनकीर्ति। 7. सूर्यकीर्ति।

ग.

1. दानकीर्ति। 2. पुण्यकीर्ति। 3. विद्वज्जनकीर्ति। 4. वक्तृत्वकीर्ति।

5. काव्यवर्तन। 6. शौर्य। 7. गीतिकीतिश्रवकति।

घ.

1. दानकीर्ति। 2. पुण्यकीर्ति। 3. द्विविधनकीर्ति। 4. वकोतिकीति। 5. काव्यकीर्ति। 6. आवर्तनकीर्ति। 7. शौर्यकीर्तिः।

27. नव रसाः

1. श्रृंगार। 2. हास्य। 3. करूण। 4. रौद्र। 5. वीर। 6. भयानक। 7. वीभत्स। 8. अद्भुत। 9. शान्त। इति रसाः।

क. अष्टौ रसाः

ख. नव नाट्यरसाः

28. एकोनपञ्चाशद भावाः

1. रति। 2. हास्यः। 3. उत्साहः। 4. विस्मयः। 5. क्रोधः। 6. शोकः। 7. जुगुप्सा। 8. भयं। 9. स्तम्भः। 10. स्वरभेदः। 11. खेदः। 12. रोमाञ्चः। 13. वेपथु। 14. विवर्णः। 14. अश्रुः।16. प्रलयः। 17. निर्वेदः। 18. ग्लानि। 19. शंका। 20. असूया। 21. मूढः। 22. श्रमः। 23. आलस्यः। 24. दैन्यः। 25. चिन्ताः। 26. मोहः। 27. स्मृतिः। 28. धृतिः। 29. क्रीड़ाः। 30. चपलताः। 31. जडताः। 32. आवेशः। 33. गर्वः। 34. अपस्मारः। 35. निद्रा। 36. सुप्ता। 37. निद्रा। 38. सुप्ता। 39. विबोधः। 40. अवभिषा (हित्थ)। 41. उग्रता। 42. उन्मादः। 43. मतिः। 44. व्याधिः। 45. विरक्तः। 46. वितर्कः। 47. त्रासं। 48. मरणं। इति।

क.

1. रति। 2. हास। 3. उत्साह। 4. विस्मय 5. क्रोध। 6. शोक। 7. जुगुप्सा। 8. भय। 9. स्तंभ। 10. स्वेद। 11. स्ववृति। 12. व्रीडा। 13. चपलता। 14. हर्षता। 15. जडता। 16. मति। 17. गूढ। 18. आवेग। 19. विवाद। 20. विषाद। 21. औत्सुक्त। 22. अपस्मार। 23. निद्रा। 24. सुप्त। 25. विवोध। 26. अमर्ष। 27. उन्माद। 28. उग्रता। 29. व्याधि। 30. वितर्क। 31. त्रास। 32. स्वरभेद। 33. रोमाञ्च। 34. वेपथु। 35. वैवर्ण्य। 36. अश्रु। 37. निर्वेद। 38. ग्लानि। 39. शङ्का। 40. श्रम। 41. आलस्य। 42. दैन्य। 43. चिंता। 44. मोह। 45. स्मृति। 46. अवहित्थ। 47. विदाघ। 48. प्रलाप। 49. मरणांत। इति भावाः।

ख.

1. रति। 2. हास। 3. शोक। 4. क्रोध। 5. उत्साह। 6. भय। 7. जुगुप्सा। 8. विस्मय। 9. शम। 10. स्तम्भ। 11. स्वेद। 12. स्वरभेद। 13. रोमाञ्च। 14. वेपथु। 15. विवर्ण। 16. अश्रु। 17. प्रलाप। 18. निर्वेद। 19. ग्लानि। 20. शङ्का। 21. असूर्या। 22. मद। 23. प्रमोद। 24. आश्रम। 25. आलस। 26. दैन्य। 27. चिंता। 28. मोह। 29. स्मृति। 30. धृति। 31. क्रीडा। 32. चपलता। 33. जडता। 34. हर्ष। 35. मति। 36. मूढ़। 37. आवेश। 38. विषाद। 39. आसुख। 40. औत्सुक्य। 41. गर्वे। 42. अपस्मार। 43. निद्रा। 44. स्वप्न। 45. विवोध। 46. अमर्ष। 47. उत्सर्गः।

ग.

1. रति। 2. हास। 3. शोक। 4. क्रोध। 5. उत्साह। 6. भय।

7. जुगुप्सा। 8. विस्मय। 9. स्तम्भ। 10. स्वेद। 11. स्वर भेदा:। 12. रोमाञ्चा:। 13. वेपथु। 14. विवर्णता। 15. अश्रु। 16. प्रलाप। 17. निर्वेद। 18. ग्लानि। 19. शङ्का। 20. असूर्या। 21. आश्चर्य। 22. आलस्य। 23. देश्य। 24. चिंता। 25. दैन्य। 26. अशौच। 27. मद। 28. श्रम। 29. मोह। 30. स्मृति। 31. धृति। 32. व्रीडा। 33. चपलता। 34. जड़ता। 35. हर्ष। 36. आवश्य। 37. विषाद। 38. असुख। 39. गर्व। 40. उत्सुक्य। 41. अपस्मार। 42. निद्रा। 43. स्वप्न। 44. विबोध। 45. अमर्ष। 46. उग्रता। 47. उन्मद। 48. मति। 49. वयाधि। 50. रक्त। 51. वितर्क। 52. त्रास। 53. मरणं। चेति।

घ.

1. रति। 2. हास। 3. उत्साह। 4. विस्मय। 5. क्रोध। 6. शोक। 7. जुगुप्सा। 8. भय। 9. स्तंभ। 10. स्वेद। 11. स्ववृत्ति। 12. व्रीड़ा। 13. चपलता। 14. हर्षता। 15. जड़ता। 16. मतिमूढ़। 17. आवेग। 18. विषाद। 19. औत्सुक्य। 20. गर्व। 21. अपस्मार। 22. निद्रा। 23. सुप्त। 24. विबोध। 25. अमर्ष। 26. उन्माद। 27. वेपथु। 28. वैवर्ण्य। 29. अश्रु। 30. प्रलाप। 31. निर्वेद। 32. ग्लानि। 33. शङ्का। 34. श्रम। 35. आलस्य। 36. दैन्य। 37. चिंता। 38. मोह। 39. स्मृति। 40. अवहित्थ। 41. विदाघ। 42. मरणांत। 43. उग्रता। 44. व्याधि। 45. रव। 46. तर्क। 47. त्रास। 48. स्वरभेद। 49. रोमाञ्च। इति भावा:।

29. चत्वारोऽभिनया:

1. आङ्गिक:। 2. वाचिक:। 3. अहार्य:। 4. सात्विक:।

30. चतस्त्रो वृत्तयः

1. सात्त्वती। 2. भारती। 3. कौशिकी। 4. आरभटी। इति।

1. सात्त्वती। 2. भारती। 3. कौशिकी। 4. आरभटी।

क. 1. सात्त्वती। 2. भारती। 3. कौशिकी। 4. आरभटी।

31. चत्वारो महानायकाः

1. धीरोद्धत। 2. धीरोदात्त। 3. धीरललित। 4. धीरशान्त। इति।

क.

1. धीर। 2. धीरोदात्त। 3. धीरललित। 4. उद्धत।

ख.

1. धीरोद्धत। 2. धीरोदात्त। 3. धीरललित। 4. धीरशान्त।

32. चत्वारो नायकः

1. अनुकुलः। 2. दक्षिणः। 3. शठः। 4. धृष्टः।

क.

1. दक्षिणः। 2. अनुकूल। 3. शिव। 4. धृष्टश्चेति।

ख.

1. अनुकूल। 2. दक्ष। 3. शत। 4. धृष्टश्चेति।

ग.

1. अनुकूल।2. दक्ष। 3. शत। 4. धृष्टश्चेति।

33. द्वात्रिंशद् नायकगुणाः

1. कुलीनः। 2. शीलवानः। 3. वयस्यः। 4. शूरवानः। 5. संततव्ययः। 6. प्रीतिवानः 7. सुरागः। 8. सावयववानः। 9. प्रियवंदः। 10. कीर्तिवान्। 11. त्यागी। 12. विवेकी। 13. श्रृङ्गारवान्। 14. अभिमानी। 15. श्लाध्यवान्। 16. समुज्जवलवेषः। 17. सकल-कलाकुशलः। 18. सत्यव्रतः। 19. प्रियः। 20. अवदानः। 21. सुजनः। 22. सुगन्धः। 23. सुवृत्तमंत्रः। 24. क्लेशसहः। 25. प्रदञ्चपध्यः। 26. पडितः। 27. उत्तमसत्यं। 28. धर्मिष्टमहोत्साही। 29. गुणग्राही। 30. सुपात्रग्राही। 31. क्षमी। 32. परिभावकः। इति।

क.

1. कुलीन। 2. शीलवान्। 3. वयस्थ। 4. शौचवान्। 5. स्वतंत्र। 6. सावयव। 7. प्रीतिवान। 8. प्रियवंद। 9. सुभग। 10. सत्यवान्। 11. कीर्तिवान। 12. त्यागी। 13. विवेकी। 14. भंडारी। 15. अभिमानी। 16. श्लाघावान्। 17. समुज्ज्वलवेष। 18. शयाज्ञी। 19. सकलकलाकुशल। 20. सत्यासवह। 21. श्रद्धान। 22. सुगन्ध। 23. सुवृत्त। 24. मंत्र। 25. केशसह। 26. भाषापंडित। 27. उत्तमसत्य। 28. धर्मनिष्ठ। 29. महोत्साह। 30. गुणग्राही। 31. परिभावुक।

ख.

1. कुलीन। 2. शीलवान्। 3. वयस्थ। 4. शौचवान। 5. प्रियवंद। 6. संततव्यय। 7. प्रीतमना। 8. सुभग। 9. विनयवान। 10. त्यागी। 11. विवेकी। 12. श्रृङ्गारवान्। 13. अभिमान। 14. श्रलाध्य। 15. समुज्ज्वलवेष। 16. सकलकलाकुशल। 17. सत्यवान्। 18. प्रियः। 19. सुवृतः। 20. अवदात। 21. स्वजन। 22. सुहृद। 23. श्रृद्धावान्। 24. सुगन्धप्रिय। 25. मंत्रवान। 26. क्लेशसह। 27. प्रदत्ता। 28. प्रकाशकः। 29. पंडित। 30. उत्तम। 31. ससत्त्व। 32. धार्मिक। 33. महोत्साही। 34. गुणग्राही। 35. क्षमा[वान्]। 36. पारिभाषिकश्चेति।

34. त्रिविधा महानायिका:

1. स्वकीया। 2. परकीया। 3. पण्याङ्गना। इति।

35. अष्टौ नायिका:

1. वासकसज्जाः। 2. विरहोत्कण्ठिता। 3. खण्डिता। 4. विप्रलब्धा। 5. प्रेषितभर्तृका। 6. कलहांतरिता। 7. अभिसारिका। 8. स्वाधीनभर्तृका। इति।

क.

1. विरहोत्कंठिता। 2. खण्डिता। 3. कलहांतरिता। 4. प्रेषित-भर्तृका। 5. अभिसारिका। 6. स्वाधीनपतिका।

ख.

1. वासकसज्जा। 2. विरहोत्कण्ठिता। 3. खंण्डिता। 4. विप्रलंभा। 5. प्रेषितभर्तृका। 6. कलहांतरिता। 7. अभिसारिका। 8. स्वाधीनभर्तृका। चेति।

36. द्वात्रिंशद नायिकानां गुणाः

1. सुरूपा। 2. सुभगा। 3. सुवेषा। 4. सुरतप्रवीणा। 5. सुनेत्रा। 6. सुखाश्रया। 7. विभोगिनी। 8. विचक्षणा। 9. प्रियभाषिणी। 10. प्रसन्नमुखी। 11. पीनस्तनी। 12. चारूलोचना। 13. रसिका। 14. लज्जान्विता। 15. लक्षणयुता। 16. पठितज्ञा। 17. गीतज्ञा। 18. वाद्यज्ञा। 19. नृत्यज्ञा। 20. सुप्रमाणशरीरा। 21. सुगंधप्रिया। 22. नातिमानिनी। 23. चतुरा। 24. मधुरा। 25. स्नेहवती। 26. विमर्शवती। 27. गूढ़मंत्रा। 28. सत्यवती। 29. कलावती। 30. शीलवती। 31. प्रज्ञावती। 32. गुणान्विता। इति।

क.

1. सुरूपा। 2. सुवेषा। 3. सुभगा। 4. सुरतप्रवीणा। 5. सुसत्त्वा। 6. सुखाश्रिता। 7. विनीता। 8. भोगिनी। 9. विचक्षणा। 10. प्रियभाषिणी। 11. प्रसन्नमुखी। 12. पीनस्तनी। 13. चारूलोचना। 14. रसिका। 15. लज्जान्विता। 16. लक्षणयुता। 17. वाक्यज्ञा। 18. गीतज्ञा। 19. नृत्यज्ञाः। 20. वाद्यज्ञा। 21. सुप्रमाणशरीरा। 22. सुगंधप्रिया। 23. नातिमानिनी। 24. चतुरा। 25. मधुरा। 26. स्नेहवती। 27. विमर्शवती। 28. सुवृतमंत्रा। 29. सत्यवती। 30. प्रज्ञावती। 31. चैतन्या। 32. शीलवती। 33. गुणान्विता।

ख.

1. कुलिना। 2. शीलवती। 3. वयस्विनी। 4. प्रियंवदा। 5. आचारवती। 6. प्रीतिमति। 7. सुभगा। 8. सुसत्वा। 9. सुवेषा। 10. सुविनीता। 11. सुरतप्रवीणा। 12. चारूनेत्रा। 13. सुखप्रिया। 14. विभोगिनी। 15. विचक्षणा। 16. प्रियभाषिणी। 17. प्रसन्नमुखी। 18. पीनस्तनी। 19. रसिका। 20. लज्जान्विता। 21. लक्षणयुक्ता। 22. पठितज्ञा। 23. गीतज्ञा। 24. वाद्यज्ञा। 25. नृत्यज्ञा। 26. सुकुमारशरीरा। 27. मधुरवाक्या। 28. रूपवती। 29. गुणान्विता। चेति।

37. त्रिविधं सौख्यम्

1. आंगिकं। 2. वाचिकं। 3. मानसिकं। इति।

38. चत्वारि सौख्यकारणानि

1. योगाभ्यासकारणम्। 2. अभिमानकारणम्। 3. सम्प्रत्यय-कारणम्। 4. विषयकारणम्। इति।

39. नवविधो गंधोपयोगः

1. तैलाधिवासः। 2. जलाधिवासः। 3. वस्त्राधिवास। 4. मुखाधिवासः। 5. उद्वर्तनाधिवासः। 6. विलेपनाधिवासः। 7. स्नानाधिवासः। 8. धूपनाधिवासः। 9. भोजनाधिवास। इति।

क.

1. तैलाधिवास। 2. पुष्पवास। 3. मुखवास। 4. जलवास। 5. स्नानवास। 6. उद्वर्तनवसाव। 7. धूपनवास। 8. तांबोलवास। 9. भोजनवास।

ख.

1. तैलाधिवासे। 2. जलधिवासे। 3. सुरभिजलं। 4. उद्वर्त्तता। 5. धूप। 6. तांबूल। 7. भोजनाधिवासः। 8.वस्त्राधिवासः। 9. मुखाधिवासः।

40. दशविधं शौचम्

1.भावशौचं। 2. स्नानशौचं। 3. जलशौचं। 4. मृतिका-शौचं। 5. शमश्रुशौचं। 6. संस्कारशौचं। 7. पवित्रवाक्यं। 8. प्राणिदयाशौचं। 9. अर्थशौचं। 10. आचारशौचं। इति।

क.

1. जलशौचं। 2. मृतिकाशौचं। 3. गंध। 4. श्मश्रु। 5. संस्कार। 6. पवित्रवाक्य। 7. प्राणिदयाशौचं। 8. अर्थशौचं। 9. आचारशौचं।

ख.

1. भावशौच। 2. मुखशौच। 3. मृतिकाशौच। 4. गंधशौच। 5. कक्षाशौच। 6. श्मश्रुशौच। 7. स्नानशौच। 8. नखशौच। 9. आनल चेति।

ग.

1. मुखशौच। 2. कक्षा। 3. कर। 4. श्मश्रु। 5. जल। 6. मृत्तिका। 7. नख। 8. मल। 9. वृत्ति। 10. भावशौचं।

घ.

1. मुखशौच। 2. स्नानशौच। 3. मृत्तिकाशौच। 4. गंधशौच। 5. कक्षा। 6. श्मश्रु। 7. जल। 8. नख। 9. अनिल। 10.सर्वशौच। इति दशविधं शौचम्।

41. द्विविधः कामः

1. स्वाभाविकः। 2. कृत्रिमः। इति।

42. दश कामावस्थाः

1. अभिलाषा। 2. चिंता। 3. स्मृति। 4. गुणकीर्तनः। 5. उद्वेगः। 6. प्रलापः। 7. उन्मादः। 8. व्याधिः। 9. जडता। 10. मरणं। इति।

क.

1. अभिलाषा। 2. चिंता। 3. समृति। 4. गुणकीर्तन। 5. उद्वेग। 6. प्रलाप। 7. उन्माद। 8. व्याधि। 9. जडता। 9. मरण चेति।

ख.

1. अभिलाषा। 2. चिंता। 3. रस। 4. गुणकीर्तन। 5. उद्वेग। 6. प्रलाप। 7. उन्माद। 8. व्याधि। 9. जडता। 10. मरणं चेति।

43. विशतीं रक्तस्त्रीणां लक्षणानि

1. पूर्वं भाषते। 2. दर्शनात्प्रसन्ना भवति। 3. समागमे तुष्यति। 4. संभाषिता हृष्यति। 5. गुणान् सखीजने कथयति। 6. दोषान् प्रच्छादयति। 7. सन्मुखी शेते। 8. पश्चात् स्वपिति। 9. पूर्वमुत्तिष्ठति। 10. मित्राणि पूजयति। 11. आमित्राणि द्वेष्टि। 12. प्रेषिते दुर्मना भवति। 13. स्वधनं ददाति। 14. प्रथममालिङ्गन करोति। 15. पूर्वमेव चुम्बंन करोति। 16. समदुःखसुखा। 17. स्नेहवती। 18. संभोगार्थिनी। 19. सन्मुखावलोकिनी। 20. सदा विनीता।

क.

1. अर्थानुभाविनी। 2. दर्शनात् प्रशांता भवति। 3. संतुष्टा। 4. संभाषणेन हृष्यति। 5. गुणान् प्रकाशयति। 6. स्तनयोः पीडनं। 7. भूषणोद्धाटनं। 8. हसनं। 9. नूपुरोत्कर्षणं। 10. कर्णकंडूयनं। 11. केशकीर्णं। 12. प्रचारणसंयमनं। 13. सखीजने दोषान् प्रच्छादयति। 14. सन्मुखीशेते। 15. पश्चात् स्वपति। 16. पूर्वमुत्तिष्ठति। 17. मित्राणि पूजयति। 18. अमित्राणि द्वेषयति। 19. प्रोषिते दुर्मना भवति। 20. स्वधनं ददाति। 21. प्रथमं आलिगनं करोति। 22. पूर्वमेव स्ववचनात भाषयति। 23. चुंबनं करोति। 24. समदुःखे सदा विनीता। 25. सन्मुखविलोकिनी। 26. स्नेहवती। 27. संभोगार्थिनी।

ख.

1. पूमायात भाषते। 2. दर्शनात प्रसन्ना भवति। 3. संतुष्टा। 4. संभाषिताद् हृष्यति। 5. गुणान् सखीजनं वदति। 6. दोषान् प्रच्छादयति। 7. सन्मुखी शेते। 8. पश्चात्स्वपिति। 9. पूर्वमुक्तिष्ठति। 10. मित्राणि पूजयति। 11. अमित्राणि द्वेष्टि। 12. प्रोषिते दुर्मना। 13. स्वधनं ददाति। 14. प्रथमा-लिङ्गनं करोति। 15. पूर्वमेव चुंबनं ददाति। 16.सामानदु:खा। 17. विनीता। 18. सम्मुखावलोकनी। 19. स्नेहवती। 20. संभोगार्थिनी चेति।

ग.

1. पूर्वे भाषते। 2. दर्शनात्प्रसन्ना भवति। 3. समागमे तुष्यति। 4. सम्भाषिता हृष्यति। 5. गुणान् सखिजने कथयति। 6. दोषान् छादयति। 7. सन्मुखी शेते। 8. पश्चात् स्वपिति। 9. पूर्वमुत्तिष्ठति। 10. मित्राणि पूजयति। 11. आमित्राणि द्वेष्टि। 12. प्रोषिते दुर्मना भवति। 13. स्वधनं ददाति। 14. प्रथममालिङ्गयति। 15. पूर्वचुंबनं करोति। 16. समदु:खसुखा-वलोकिनी। 17. सदा विनीता। 18. स्नेहवती। 19. सम्भोगार्थिनी।

44. एकविंशतिर्विरवक्तस्त्रीणां लक्षणानि

1. चुबिता विमुखं करोति। 2. मुखं परिमार्जयति। 3. निष्ठीवति। 4. प्रथम शेते। 5. पश्चादुत्तिष्ठति। 6. पराङ्गमुखी शेते। 7. वाक्यं नावमन्यते। 8. मित्राणि द्वेष्ठि। 9. अमित्राणि पूजयति। 10. सदागर्विता भवति। 11. उक्ता कुप्यति। 12. गमने तुष्यति। 13. दुष्कृतं स्मरति। 14. सृकुतं विस्मारयति। 15. दत्तं न मन्यते। 16. दोषान् प्रकटीकरोति। 17. गुणान प्रच्छादयति। 18. सन्मुखं न पश्यति। 19. दु:खिते सुखिता भवति। 20. विप्रियं वदति।

21. संभोगे सुखं न वाञ्छति।

क.

1. चुंबने मुखं परिमार्जयति। 2. निष्ठीवति। 3. प्रथमं शेते। 4. पादुत्तिष्ठति। 5. सन्मुखी न शेते। 6. मित्राणि द्वेषयति। 7. अमित्राणि पूजयति। 8. गर्विता उत्कथयति। 9. गमने हृष्टा। 10. दुष्कृतं स्मरति। 11. सुकृतं विस्मारयति। 12. उक्तं न मन्यते। 13. दोषान् प्रगटीकरोति। 14. गुणान् प्रच्छादयति। 15. सन्मुखं न पश्यति। 16. दु:खिते सुखिता भवति। 17. अप्रियंवदा। 18. संभोगे सुखं नावगच्छति। 19. कोपमुत्पा-दयति।

ख.

1. चुम्बिता। विमुखं करोति। 2. मुखं च परिमार्जयति। 3. निष्ठीवति। 4. प्रथमं शेते। 5. पादुत्तिष्ठति। 6. परान्मुखी शेते। 7. वाचं न मन्यते। 8. मित्राणि द्वेषयति। 9. कुमित्राणि पूजयति। 10. गर्विता भवति। 11. उक्ता कुप्यते। 12. गमने तुष्यति। 13. दुष्कृतं स्मरयति। 14. सुकृतं विस्मरयति। 15. दत्तं न मन्यते। 16. दोषान् प्रकटीकरोति। 17. गुणान् प्रच्छादयति। 18. सन्मुखं न पश्यति। 19. विप्रियं वदति। 20. दु:खिते सुखिता भवति। 21. संभोगेषु सुखं न वाञ्छति।

ग.

1. मुखं परिमार्जयति। 2. निष्ठीवती। 3. प्रथमं शेते। 4. पश्चादुत्तिष्ठति। 5. पराङ्मुखी शेते। 6. मित्राणि द्वेष्टि। 7. अमित्राणि पूजयति। 8. गर्विता भवति। 9. उक्ता कुप्यति। 10. गमने तुष्यति।

11. दुःखिते दुःखिता (न) भवति। 12. विप्रियं वदति। 13. संभोगसुखं न वांछति। 14. स्वेच्छया विचरति। 15. दुष्कृतं स्मरति। 16. सुकृतं विस्मारयति। 17. दत्तं न मन्यते। 18. दोषान् प्रकटीकरोति। 19. गुणान् प्रच्छादयति। 20. सन्मुखं न पश्यति।

घ.

1. चुम्बिता परान्मुखी भवति। 2. चुम्बितानन्तरं निष्ठीवति। 3. मुखं च परिमार्जयति। 4. प्रथमं शेते। 5. पश्चादुत्तिष्ठति। 6. पराङ्मुखी शेते। 7. वचनं नावमन्यते। 8. मित्राणि द्वेष्टि। 9. अमित्राणि पूजयति। 10. सदैव गर्विता। 11. उक्ता कुप्यति। 12. प्रोषिते तुष्यति। 13. दुष्कृतं स्मारयति। 14. सुकृतं विस्मारयति। 15. दत्तमवमन्यते। 16. दोषान् प्रकटयते। 17. गुणानाच्छादयति। 18. सम्मुखं न पश्यति। 19. दुःखेन दुःखिता न भवति। 20. विप्रियं वदति। 21. संभोगं न वद (? वाच्छ)ति।

45. द्वाविंशतिः कामिनीनां विकारेङ्गितानि

1. सानुरागनिरीक्षणं। 2. श्रवणसंयमनं। 3. अङ्गुलीमोटनं। 4. मुद्रिकाकर्षणं। 5. नूपुरोत्कर्षणं । 6. गुप्ताङ्गदर्शनं। 7. सख्या सह हसनं। 8. भूषणोद्घाटनं। 9. कर्णमोटनं। 10. कर्णकंडूयनं। 11. केशप्रकीर्णनं। 12. पुष्पसंयमनं। 13. नखविलेखनम्। 14. परिधान-संयमनं। 15. निश्वासोच्छ्वसनं। 16. प्राग् विजृम्भणं। 17. बालालिङ्गनं। 18. बालमुखचुम्बनं। 19. प्रियभाषणं। 20. परोक्षे नामकीर्तनम्। 21. अतिक्रान्तप्रेक्षणम्। 22. गुणव्यावर्णनं। इति।

क.

1. उच्चैर्निष्ठीवती। 2. सानुरागासंयमनं। 3. अंगुलीस्फोटनं। 4. मुद्रिकाकर्षणं। 5. गुप्तांगदर्शनं। 6. सख्या सह हसनं । 7. नूपुरोत्कर्षणं। 8. स्तनोपपीडनं। 9. भूषणोद्धाटनं। 10. कर्णकंडूयनं। 11. केशप्रकीर्णनं। 12. परिधानसंयमनं। 13. निश्वासोच्छासनं। 14. वागविजृंभणं। 15. बालालिगनं। 16. बालमुखचुंबनं। 17. प्रियभाषणं। 18. अतिक्रांतप्रेक्षणं। 19. परोक्षनामस्मरणं। 20. गुणवर्णनं। 21. विरहवेदना।

ख.

1. सानुरागनिरीक्षणं। 2. श्रवणसंयमनं। 3. अंगुलीस्फोटनं। 4. सदा प्रसन्नं। 5. मुद्रिकाकर्षणं। 6. गुप्तांगदर्शनं। 7. सख्या सह हसनं। 8. भूषणोद्धाटनं। 9. कर्णोत्कर्षणं। 10. कर्णकंडूयनं। 11. केशप्रकीर्णनं। 12. पुष्पसंयमनं। 13. नखविलेखनं। 14. परिधानसंयमनं। 15. विश्वासोल्लसनं। 16. प्राग् विजृंभनं। 17. बालालिंगनं। 18. बालमुखचुंबनं। 19. प्रियभाषणं। 20. परोक्षे नामकीर्त्तनं।

ग.

1. उच्चैर्निष्ठीवती। 2. सानुरागनिरीक्षणं। 3. श्रवणसंयमनं। 4. अंगुलीस्फोटनं। 5. मुद्रिकाकर्षणं। 6. गुप्तांगदर्शनं। 7. परिधानसंयमनं। 8. निश्वासोश्वा (?च्छा) सनं। 9. प्राक् (ग्) विजृंभणं। 10. बालमुखचुंबनं। 11. प्रियलक्षणं (श्लेषणं)। 12. अतिक्रांतप्रेक्षणं। 13. पश्चान्नामस्मरणं।

46. चतुर्विंशतिरसतीनां लक्षणानि

1. द्वारदेशे शायिनी। 2. पाश्चादवलोकिनी। 3. पुंश्चली सखी। 4. भोगार्थिनी। 5. गोष्ठिप्रिया। 6. राजमार्गाश्रिता। 7. पतिद्वेषिणी। 8. पतिरहिता। 9. हीनाङ्गभार्या। 10. मृतापत्या। 11. बहुदेवरालापिनी। 12. बहुदेवतापूजिनी। 13. विनोदप्रिया। 14. भोगिनी सखी। 15. अतिमानिनी। 16. कृत्रिमलज्ञान्विता। 17. परप्रीतिरता। 18. वृद्धभार्या। 19. सततहास्या। 20. प्रोषितभर्तृका। 21. लोभान्विता। 22. बहुभाषिणी। 23. क्रीडनप्रिया। 24. वंध्या। इति।

क.

1. द्वारदेशे शायिनी। 2. पाश्चात्यावलोकिनी। 3. पुंश्चली सखी। 4. भोगिनी। 5. गोष्ठिप्रिया। 6. राजामार्गाश्रिता। 7. पतिद्वेषिणी। 8. पतिरहित। 9. हीनयुवती संगिनी। 10. जलवाहनी सङ्गिनी। 11. विनोदप्रिया। 12. अतिमानिनी। 13. दूरं जलानयने गच्छति। 14. कुंभकाररजकानां संगिनी। 15. कुट्टिनी। 16. कृत्रिमलज्जान्विता। 17. अप्रणीता। 18. सतत हास्या। 19. लोभान्विता। 20. बहुभाषिणी। 21. क्रीडनप्रिया। 22. केशसंवाहनप्रिया। 23. आत्मगृहं परित्यज्य परगृहे वार्तां करोति। 24. स्वपतिं परित्यज्य अन्यमाकाङ्क्षति।

ख.

1. द्वारदेशशायिनी। 2. पाश्चात्यावलोकिनी। 3. पुंश्चली सखी। 4. भोगिनी। 5. गोष्ठिप्रिया। 6. राजामार्गाश्रिता। 7. पतिद्वेषिणी। 8. पतिरहिता।

9. हीनयुवतीसङ्गिनी। 10. जलवाहिकीनां संगिनी। 11. विनोदप्रिया। 12. प्रतिमानिनी। 13. दूराज्जलानयनाय गच्छति। 14. कुंभकाररजकसङ्गतिं करोति। 15. कृत्रिमलज्जान्विता। 16. परप्रीतिरता। 17. सततं हास्या। 18. विनोदं बहिर्ग्रामति। 19. लोभान्विता। 20. बहुभाषिणी। 21. क्रीडणप्रिया। 22. केशसंवाहनप्रिया। 23. आत्मगृहे वार्तां परित्यज्य परगृहे वार्ताकरणाय रसिका। 24. स्वपतिं परित्यज्य परपुरूषान्वेषणं करोतीति।

47. षोडश दुष्टस्त्रीणां लक्षणानि

1. पिङ्गाक्षी। 2. कूपगल्ला। 3. लम्बोष्ठी। 4. खरालापा। 5. ऊद्ध्र्वकेशी। 6. लम्बोदरी। 7. दीर्घललाटी। 8. संहितभ्रूः। 9. पुष्पितनखी। 10. प्रविरलदशना। 11. अतिदीर्घा। 12. अतिवामना। 13. अतिस्थूला। 14. अतिकृशा। 15. अतिगौरा। 16. अतिकृष्णा। इति।

क.

1. पिङ्गाक्षी। 2. कृपगल्ला। 3. लंवोष्ठी। 4. खरालापा। 5. ऊद्ध्वकेशी। 6. दीर्घललाटी। 7. संहितभ्रूः। 8. पुष्पितनखी। 9. प्रविरलदशना। 10. अतिदीर्घा। 11. अतीववामनी। 12. अतीवस्थुला। 13. अतीवगौरा। 14. अतीवकृष्णा। 15. अतीवकृशा। 16. प्रलंबोदरी।

ख.

1. पिङ्गाक्षी। 2. कृपगल्ला। 3. लंबोष्ठी। 4. उर्ध्वकेशी। 5. प्रलंवोदरी। 6. दीर्घललाटा। 7. मिलितभ्रू। 8. पुष्पितनखी। 9. अतिविरल-

केशा। 10. विरलदशना। 11. अतिदीर्घा। 12. अतिवामना। 13. अतस्थूला। 14. अतिकृशा। 15. अतिगौरा। 16. अतिरोमवती। 17. भूमिपर्यतांगुलका। 18. मुक्तकेशा। 19. दीर्घदंता। 20. खरदेहा।

ग.

1. पिङ्गाक्षी। 2. कृपगल्ला। 3. लंबोदरी। 4. लिम्बोष्टी। 5. खरालापा। 6. ऊर्ध्वकेशी। 7. दीर्घललाटा। 8. संहितचूचुका। 9. पुष्पित-नखी। 10. प्रवीरलदशना। 11. अतिदीर्घा। 12. दीर्घजङ्घा। 13. अतिस्थूला। 14. अतिकृशा। 15. अतिगौरा। 16. अतिकृष्णा। 17. अतिरोमवती। 18. दीर्घदंता। 19. खरदेहा। 20. मुखेकिला। 21. भूमिलगितपाद पूर्वाङ्गुलिकाश्चेति।

48. अष्टौ स्त्रीणामविश्वासकारणानि

1. भर्तुः स्वैरिता। 2. पुरूषार्थिनी। 3. प्रणतगोष्ठी। 4. निरङ्कुशा। 5. विदेशवासा। 6. अन्यपुरूषं सन्मुखं विलोकयति। 7. यस्य तस्य सन्मुखं हसति। 8. उक्ता सती शपथं करोति। इति।

क.

1. भर्तुः स्वैरिता। 2. पुरूषार्थिनी। 3. प्रणतगोष्ठी। 4. निरङ्कुशा। 5. विदेशवासा। 6. पुंश्चली। 7. पतिरीर्ष्यादोषाः।

ख.

1. भर्तुः स्वैरं विचरति। 2. अन्यपुरूषसन्मुखं विलोकयति। 3.

गोष्ठीं करोति। 4. निरङ्कुशा। 5. यं यं पश्यति तस्य सन्मुखं विलोकयति। 6. गोष्ठीं करोति। 7. संसर्ग करोति। 8. ईर्षां करोति।

ग.

1. भर्तृस्वैरिता। 2. पुरूषर्थिनी। 3. प्रणतगोष्ठी। 4. निरंकुशा। 5. विदेशवासा। 6. सध्यानी समृत्युपघातः। 7. पुंश्चलीसंसर्गजा। 8. दूर्ष्याकश्चेति।

घ.

1. भर्त्तुः स्वैरं विचरति। 2. अन्यपुरूषं सम्मुखं विलोकयति। 3. गोष्ठीं करोति। 4. निरंकुशं करोति। 5. यस्य तस्य सम्मुखं हसति। 6. उक्ता सती यथारूचिमनुकरोति। 7. अन्यं जल्पति। 8. स्वैरिणीसंसर्ग करोति। 9. पतिं वञ्चयित्वा रात्रौ परपुरूषगृहे गच्छति।

49. अष्टौ नार्योऽगम्याः

1. स्वगोत्रजा। 2. गुरूपत्नी। 3. राजपत्नी। 4. मित्रपत्नी। 5. वर्णाधिका। 6. अस्पर्शा। 7. प्रव्रजिता। 8. कुमारी इति।

क.

1. स्वगोत्रजा। 2. राजपत्नी। 3. मित्रपत्नी। 4. वर्णाधिका। 5. पूजिता। 6. कुमारी। 7. राजपत्नी।

ख.

1. स्वगोत्रजा। 2. गुरूपत्नी। 3. मित्रपत्नी। 4. वर्णाधिका। 5. राजपत्नी। 6. अस्पर्शा। 7. दोषसंयुक्ता। 8. कुमारी चेति।

50. अष्टविधो मूर्खः

1. निर्लज्जः। 2. शठः। 3. क्लीबः। 4. निर्घृणः। 5. व्यसनी। 6. अतिलोभी। 7. गर्वितः। 8. निष्ठुरः इति।

क.

1. अप्रस्तावज्ञ। 2. कुपंडित। 3. कुबुद्धि। 4. कुव्यसन। 5. स्वभृंशी। 6. स्वमर्मप्रकाशी। 7. गर्वित। 8. विष्टर(?निष्ठुर)श्चेति।

ख.

1. निर्लज्जः। 2. शठः। 3. क्लीबः। 4. निर्गुणः। 5. व्यसनी। 6. अतिभोगी। 7. गर्वितः। 8. निष्ठुरः। इति।

ग.

1. अप्रश्रावी। 2. कुपठितः। 3. कुबुद्धिः। 4. कुव्यसनी। 5. निष्ठुरः। 6. स्वमर्मप्रकाशकः। 7. अभिमानी। 8. असंबद्धप्रलापी चेति।

51. चतुर्विंशतिविधं नागरिकवर्णनम्

1. नगरे संस्थानं। 2. आसन्नोदकभवनं। 3. प्रच्छन्नमहानसं।

4. गुप्तकार्यचिकित्सास्थानं। 5. निकटे नेपथ्यमंडपः। 6. विभक्तं वासभवनं। 7. नेपथ्योपकारप्राचुर्यं। 8. गृहोपकरणबाहुल्यं। 9. शयनासनरस्यत्वं। 10. वाञ्छितपरिजनः। 11. पार्श्वे प्रविशा (?वेश)-नस्थानं। 12. मध्ये स्नानपीठं। 13. प्रभाते व्यायामविधानं। 14. मध्याह्ने भोजनविधानं। 15. नित्यमेव विद्याभ्यसनं। 16. कुलोचित-विधिना वर्तनं। 17. प्रदोषे गीतादिविनोदविधानं। 18. निशायां स्वदारासुरतं। 19. कदाचिद्गोष्ठीरम्यत्वं। 20. कदाचित् पात्रप्रेक्षणं। 21. कदाचिदुद्यानगमनं। 22. माल्यादिभोगकथनं। 23. सदैव ऋतु-समुचितोपभोगः। 24. विद्वज्जनसंसर्गः।

क.

1. नगरे संस्थानं। 2. आसनोदकभवनं। 3. गुप्तकार्यचिंता। 4. स्थापनीय पार्श्वपानीयं। 5. सुप्तावेदकं। 6. पृथक् रंधनकं। 7. नेपथ्याग्रहणं। 8. नेपथ्योपप्रकरणं। 9. प्राचुर्यगृहोपकरणं। 10. बाहुल्यं रम्यत्वं। 11. माल्यादि भोगभव्यत्व। 12. गुप्तस्थानं। 13. प्रभाते व्यायामविधानं। 14. मध्याह्ने भोजनविधानं। 15. डाछन्नप्रकारस्थानं। 16. नित्यविद्याभ्यसनं। 17. कुलोचिते मार्गे वर्त्तनीयं। 18. प्रदोषे गीतविनोद। 19. निशायां सुरतो-पचारः। 20. कदाचि[दु] द्यानगमनं। 21. कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षणं। 22. सदैव कर्मसूचितो विभाग। 23. पुत्रपौत्रेषु हेतुकरणं।

ख.

1. यथा नगरे स्थानं। 2. आसन्नो[द]कभवनं। 3. सवतां(?) प्रच्छादनं। 4. महासनं। 5. परसेव्या गृहमुत्पत्तिच्छाया मित्राणां स्थानस्फोट। 6. नव विश्वमंडपं। 7. विरक्तरक्तवासभवः। 8. नेपथ्यैवकरणं। 9. प्रासार्यगृहे

उपकरणबाहुल्यं। 10. शय्यासनरम्यत्व। 11. माल्यादिभोगकथनं। 12. वाञ्छितमित्रजनपार्श्वे आचमनस्थानं। 13. अंतरे स्थानस्थानं। 14. प्रभाते व्यायामविधानं। 15. मध्ये भोजनं विधानं। 16. नित्यमेव विद्याभ्यसनं। 17. कुलोचितव्यवहरणं। 18. प्रदोपांते गीतविधानं। 19. निशायां सुरतोपचरणं। 20. कदाचिद्गोष्ठीरम्य [त्वं]। 21. न(?) कदाचित्पात्रप्रेक्षणं। 22. कदाचिदुद्याने गमनं चेति।

ग.

1. आसन्नोदकाभुवनांतसुप्तं। 2. कार्यचिंतास्थापनं। 3. पार्श्वे पानीयरंधनं। 4. विभक्तं नेपथ्यगृहं। 5. नेपथ्योपकरणं। 6. प्राचुर्यं गृहोपकरणं। 7. प्राचुर्यै गृहप्रकरणबाहुल्यं। 8. शास्त्रबाहुल्यं। 9. आसनबाहुल्यं। 10. रम्यत्वमौल्यादिभागभव्यत्वं। 11. गुप्तं स्थानं स्यात्। 12. प्रभाते नियमविधानं। 13. मध्याह्ने भोजनविधानं। 14. प्रच्छन्नभंडारस्थानं। 15. नित्यं विद्याभ्यसनं। 16. कुलोचितेन मार्गेण वर्त्तनीयं। 17. प्रदोषे गीतविनोदः। 18. निशायां सुरतोपचारः। 19. कदाचिदुद्यानगमनं। 20. कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षणं। 21. सदैव देवगुरूभक्तिः कार्या। 22. स्वजनपालनं। 23. सदैव समुचितवित्तविभागः।

घ.

1. आसन्नोदुःक(?दक)भवनं। 2. गुप्तकार्यचिन्तास्थापनं। 3. पाश्वें पानीयस्य स्थाने रन्धनकं। 4. विमुक्तने मध्यगृहं। 5. नेपथ्योपकरणप्राचुर्ये। 6. गृहोपकरणबाहुल्यं। 7. शयनासनरम्यत्वं। 8. माल्यादिभोगभावितत्वं। 9. मालादिभोमभव्यत्वं। 10. गुप्तस्थानं भण्डारस्थानं। 11. प्रभाते आयामविधानं। 12. मध्याह्ने भोजनविधानं। 13. प्रच्छन्न भण्डारस्थानं।

14. नित्यं विद्याभ्यसनं। 15. कुलोचितेन मार्गेण प्रवर्त्तनीयं। 16. प्रदोषे गीतविनोदाः। 17. निशान्ते सुरतोपचारः। 18. कदाचिदुद्यानगमनं। 19. कदाचित्क्षेत्रनिरक्षणं। 20. विद्वज्जनसंसर्गः। 21. कुसंगपरित्यागः। 22. धर्मश्रद्धा। 23. जीवरक्षा। 24. सदैव समुचितोपक्रिया।

52. त्रिविधं रूपम्

1. असंपूर्णलक्षणावयवं। 2. संपूर्णलक्षणावयवं। 3. निर्लक्षणावयवं। इति।

क. 1. असंपूर्णलक्षणावयवं। 2. निर्लक्षण।

ख. 1. संपूर्णावयवं। 2. निर्लक्षणावयवं। 3. असंपूर्णालक्षणावयवं।

ग. 1. संपूर्णलक्षणावयवं चेति।

घ. 1. संपूर्णलक्षणावयवं। 2. लक्षणावयवं। 3. असंपूर्णलक्षणावयवं।

53. त्रिविधं स्वरूपम्

1. मुग्धस्वभावं। 2. चतुरस्वभावं। 3. मुग्धचतुरस्वभावं। इति।

क. 1. मुग्धस्वभावं। 2. मुग्धचतुरस्वभावं।

ख. 1. मुग्धस्वभावं। 2. सुसद्भावं। 3. चतुरस्वभावेति।

ग. 1. मुग्धस्वभाव। 2. मुरख। 3. चतुर।

54. द्वादशविधःप्रमदोपचारः

1. रूपस्विनीनां रम्योपचारेण। 2. भीरूणामाश्वासनेन। 3. चपलानां गांभीर्येण। 4. पंडितानां सत्येन। 5. प्रज्ञावतां(?तीनां) कलाभिः। 6. शृङ्गारिणीनां सुवेषतया। 7. विनोदशिलानां क्रीडनेन। 8. हीनसत्त्वानां कारूण्येन। 9. शठस्वभावानां शाठ्येन। 10. निर्वि-कल्पानां सरलस्वभावेन। 11. बालानां भक्षप्रदानेन। 12. विदग्धानां कुकुमो(? कुकभो)पचारेण। इति।

क.

1. रूपस्विनी रम्योपचारेण। 2. भीरूमाश्वानयेन। 3. चपलां गांभीर्येण। 4. पंडितानां सत्येन। 5. प्रज्ञावता। कलाभिः। 6. श्रृङ्गारिणां सुवेषतया। 7. विनोदशीलां क्रीडनेन। 8. हीनसत्यां कारूण्येन। 9. शठस्व-भावानां शाठ्येन। 10. निर्विकल्पां सुकुमारप्रयोगेन। 11. बालानां भक्ष-प्रदानेन। 12. धूर्तानां शाठ्येन।

ख.

1. रूपवर्ती रम्योपचारेण। 2. भीरूणामाविश्वासनेन। 3. चपलानां गांभीर्येण। 4. पंडितानां सखीत्वेन। 5. बालानां भक्षप्रदानेन। 6. प्रज्ञावतीनां कलाभिः। 7. शृङ्गारिणीनां सुवेषेण। 8. विनोदिनीनां सुक्रीडनेन। 9. हीनसत्त्वानां कारूण्येन। 10. शठस्वभावानां घातेन। 11. निर्विकल्पानां सरलस्वभावेन। 12. क्षुधितानां भोजनदानेन।

ग.

1. सुरूपिणी। 2. राजोपचारेण। 3. भीरूणामाश्वासनेन। 4. चपलां। 5. गांभीर्येण। 6. पंडितां भोजन्येन। 7. धर्माण्यं कारूण्येन। 8. प्रज्ञावती। 9. कलाभिः श्रृङ्गारिणी। 10. सुवेषतया विनोदिनी। 11. क्रीडनेन। 12. विदग्धानां कुकुभोपचारेण चेति।

घ.

1. रूपवती रम्योपचारेण। 2. भीरोः आश्वासनेन। 3. चपलानां गांभीर्येण। 4. पंडितानां सत्येन। 5. बालां भक्षप्रदानेन। 6. प्रज्ञावती कलनैः। 7. श्रृङ्गारिणीवेषतया। 8. विनोदशीला क्रीडनेन। 9. दीनसत्त्वां कारूण्येन। 10. शत(?ठ)स्वभावशाठ्येन। 11. निर्विकल्पा सरलस्वभावेन। 12. सुकुमारा सुकुमारोपचारेण।

ङ.

1. रूपवती रम्योपचारेण। 2. भीरोः आश्वासनेन। 3. चपलानां गांभीर्येण। 4. पंडितानां ना (?)सत्येन। 5. बालां भक्ष्यप्रदानेन। 6. प्रज्ञावती कलनैः। 7. शृङ्गारिणीरन्यवेषतया। 8. विनोदशीला क्रीडनेन। 9. दीनसत्त्वा क्रीडनेन। 10. कारूण्येन वा। 11. शठभावा घातने। 12. निर्विकल्पां सरलस्वभावेन। 13. सुवामां(?) आरोपचारेण।

55. पञ्चविधः परिचयः

1. प्रसिद्धिख्यापनं। 2. दर्शनेनावर्जनं। 3. संभाषणमाधुर्यं।

4. वाञ्छितोपचार प्रयोजनं। 5. विकारसूचनं। इति।

क.

1. प्रसिद्धस्थापनं। 2. दर्शनेनावर्जनं। 3. संभाषणमाधुर्यं। 4. विकारशोधनं। 5. वाञ्छितोपचारप्रयोजनं।

ख.

1. सीक्षापनः। 2. दर्शनावर्जनः। 3. संभाषणमाधुर्यया। 4. सविकारसुवचने। 5. कथितोपचारप्रयोजनं चेति।

ग.

1. प्रसिद्धख्यापनं। 2. दर्शनेनावर्जनं। 3. मधुरवचः संभाषणं। 4. आतिथ्यकरणं। 5. वाञ्छितोपचारप्रयुं(?यो)जनं चेति।

56. दश पुरूषाः स्त्रीणामनिष्टा भवन्ति

1. कुरूपः। 2. निर्लज्जः। 3. अभिमानी। 4. असंबद्ध-प्रलापी। 5. सङ्कुचितशायी। 6. निष्ठुरः। 7. कृपणः। 8. शौचहीनः। 9. मूर्खः 10. क्रोधनः। इति।

क.

1. कुरूपा। 2. निर्लज्जा। 3. अभिमानयुक्ता। 4. अनंतभाषिण। 5. निरङ्कुशा। 6. निष्ठुरा। 7. कृपणा। 8. अशौचरता। 9. हीना। 10. मूर्खा।

ख.

1. कुरूपः। 2. निर्लज्जः। 3. नित्यरोगी। 4. अभिमानी। 5. असंवद्धप्रलापी। 6. सङ्कुचितशायी। 7. निष्ठुरः। 8. पणः। 9. शौचहीनः। 10. क्रोधी। 11. रूपभागी। 12. कर्णदुर्बलः। 13. मूर्खश्चेति।

ग.

1. कुरूप। 2. निर्लज्ज। 3. नित्यरोगी। 4. अभिमानी। 5. असंवद्धप्रलापीः। 6. सङ्कुचितशायी। 7. निष्ठुर। 8. कृपण। 9. शौचहीन। 10. क्रोधी। 11. विरूपभाषी। 12. कर्णदुर्बल। मूर्खश्चेति।

57. दशभिः कारणैः स्त्रियो विरज्यन्ते

1. अज्ञानता। 2. अभिमानावलेपता। 3. निष्ठुरता। 4. दरिद्रता। 5. अतिप्रवासता। 6. क्रूरव्यसनता। 7. भोगहीनता। 8. अतिप्रसङ्गता। 9. सौभाग्यहीनता। 10. अनुचितता। इति।

क.

1. अज्ञानता। 2. अभिमानता। 3. प्रतापिता। 4. निष्ठुरता। 5. अतिप्रवासता। 6. सौभाग्यहीनता। 7. अतिप्रसंगता । 8. अनौचितं। 9. निर्दयत्वं। 10. अप्रीतिता।

ख.

1. अक्षमता। 2. अभिमानता। 3. अवलेपता। 4. निष्ठुरता। 5. दरिद्रता। 6. सौभाग्यहीनता। 7. अतिअसंगता। 8. अतिअनौचित्यता। 9. अतिज्ञता। 11. भावुका चेति।

ग.

1. अज्ञानता। 2. अभिमानता। 3. निष्ठुरता। 4. दरिद्रिता। 5. सौभाग्यहीनता। 6. अरूपता। 7. अनौचित्यता। 8. दीनहीनता। 9. निर्दिनी। 10. वार्धुक्यता। 11. विरूपभाषिता। 12. अभावश्चेति।

घ.

1. अज्ञानता। 2. अभिमानता। 3. निष्ठुरता। 4. दरिद्रता। 5. सौभाग्यहीनता। 6. अरूपता। 7. अभिमानता। 8. अनौचित्यता। 9. दानहीनता। 10. निवर्यिता। 11. काठवाक्रता। 12. विरूपभाषिता। 13. अभावश्चेति।

58. त्रिभिः कारणैः कामिन्यः संबध्यन्ते

1. अर्थतः। 2. कामतः। 3. सुकुमारोपचारतः। इति।

क. 1. अर्थतः। 2. कामतः। 3. कुमारोपचारतः।

ख. 1. अर्थकामतः। 2. सुकुमारोपचारतः। 3. संभोगकामतः।

ग. 1. अर्थतः कामरतः। 2. सुकुमारः। 3. उपचारश्चेति।

घ. 1. अदानतः। 2. कामतः। 3. सुकुमालवचनाद्युपचारतः।

ड. 1. अर्थदानत। 2. कामत। 3. वचनाद्यप्रचारत। चेति।

59. सप्तविधाः कामुकानां सुरतारम्भाः

1. क्रीडापात्राणि। 2. भोजनादि। 3. उपचारविलेपनानि।

4. धूपनानि। 5. ताम्बूलादीनि। 6. पुष्पादिमाल्यानि। 7. हास्यादिनिमर्माणि। इति।

क.

1. पुष्पमालादिदानं। 2. वस्त्रालङ्कारदानं। 3. आश्वासनं। 4. सुस्वादभक्षभोज्यं। 5. आलिनादिदानं। 6. अशेषकथा प्रस्ताव। 7. विनोद-हास्यकरणं।

ख.

1. क्रीडापात्राणि। 2. भोजनाद्युपचारेण विलेपनानि। 3. धूपनानि। 4. तांबूलकानि। 5. पुष्पमाल्यादि। 6. हास्यादि। 7. रम्यादि। चेति।

ग.

1. क्रीडापात्राणि। 2. भोजनाद्युपचारविलेपनानि। 3. तांबूलादीनि। 4. पुष्पादिमाल्यानि। 5. वस्त्रालङ्कारदानानि। 6. हास्यादिमर्माणि।

घ.

1. क्रीडनेन। 2. नाट्यनाद्युपचारेण। 3. विलेपनेन। 4. तांबूलदानेन। 5. पुष्पादिभोगेन। 6. वस्त्रालङ्करणेन। 7. अर्थप्रदानेन।

60. अष्टविधं विदग्धानां सुरतम्

1. आलिनं। 2. चुम्बनं। 3. धावनं। 4. केशधारणं। 5. वाराङ्ग-शोधनं। 6. सीत्कारादिमोचनं। 7. नखस्पर्शनं। 8. मृदुकुट्टनं इति।

क.

1. आलिङ्गनं। 2. चुंबनं। 3. धावनं। 4. केशाधारणं। 5. वरांगसंवेशनं। 6. शरीरादिकूजनं। 7. नखस्पर्शनं। 8. कुट्टनं।

ख.

1. आलिङ्गनं। 2. चुंबनं। 3. धावनं। 4. कचप्रधारणं। 5. वराङ्गशोधनं। 6. सीत्कृतादिमोचनं। 7. नखस्पर्शनं। 8. मृदुकुट्टनं।

ग.

1. आलिङ्गनं। 2. चुंबनं। 3. धावनं। 4. केशोभाद्धारणं। 5. रागादिव्यसनं। 6. सीत्कृतादिमुचनं। 7. नखस्पर्शनं। 8. मृदुकुट्टनं। चेति।

घ.

1. आलिनं। 2. चुंबनं। 3. धावनं। 4. कन्ता(कुन्तला)धारणं। 5. रङ्ग(वरा)संवेशनं। 6. शरीरादिकृजनं। 7. नखस्पर्शनं। 8. कुट्टनं।

61. नवविधं सुरतावसानम्

1. वस्त्रादिसंयमनं 2. पर्श्वे आचमनं। 3. ताम्बूलादिग्रहणं। 4. फलादिभक्षणं। 5. पानभोज्यादिविधानं। 6. क्रीडापात्रप्रवेशनं। 7. सुभाषितजल्पनं। 8. सानुरागप्रेक्षणं। 9. मनोवाञ्छितविनोदः। इति।

क.

1. वस्त्रादिसंयमनं 2. पार्श्वचालनं। 3. तांबूलादिग्रहणं। 4. अनुरागपोषणं। 5. वांछितविनोद।

ख.

1. पार्श्र्वे आचमनं। 2. ताबूलादिग्रहणं। 3. इक्षुरसादिभक्षणं। 4. पानभोज्यादिविधानं। 5. क्रीडापात्रप्रवेशनं। 6. सुभाषितभाषणं। 7. अनुरागपोषणं। 8. संतोषवांछितं। 9. विनोदाश्चेति।

ग.

1. वस्त्रादिसंयमनं। 2. पार्श्ववाऽऽचमनं। 3. तांबूलादिभक्षणं। 4. फलादिभक्षणं। 5. पानभोजनादिविधानं। 6. क्रीडापात्रप्रवेशनं। 7. सुभाषितजननं। 8. अनुरागपोषणं। 9. मनोवाञ्छितविनोदः। चेति।

62. नव शयनगुणाः

1. अनग्नशायी। 2. प्रसारितगात्रशायी। 3. मृदुगात्रशायी। 4. सौम्यावयवशायी। 5. अनुशयनं। 6. अभूमिशायी। 7. अशब्द-शायी। 8. सन्मुखशायी। 9. वामपार्श्वशायी। इति।

क.

1. अनग्नशायी। 2. मृदुगात्रशायी। 3. प्रसारितागात्रशायी। 4. सौम्यावयव। 5. अनुशयन। 6. नात्यर्थानप्रात। 7. अशब्द। 8. सन्मुख।

ख.

1. अनग्न। 2. प्रसारितगात्र। 3. सौभ्यावयव। 4. सन्मुखशायी। 5. अशब्दशायी। 6. अभूमिशायी। 7. संबद्धशायी। 8. मृदुपत्रशायी। 9. नात्यर्थशायी।

ग.

1. अशायी। 2. प्रसारिगात्रशायी। 3. अन्योन्यशायी। 4. सौम्य-शायी। 5. असन्मुखशायी। 6. असंबद्धशायी। 7. सन्मुखशायी। चेति।

घ.

1. अनशायी। 2. प्रसारितगात्रशीय। 3. सौभ्यावयवशायी। 4. सम्बन्धशायी। 5. सन्मुखशायी। 6. अनुशयनाद्यर्थः। 7. अशब्दशायी। 8. वामपार्श्वशायी। 9. उत्तानशायी।

ङ.

1. अनुशायी। 2. संमुखशायी। 3. प्रसारितगात्रशायी। 4. सौम्यावयवशायी। 5. संबन्धशायी। 6. वामपार्श्वशायी। 7. अविधस्तन-शायी। 8. निलाशायी चेति।

63. दशविधः पार्थिवानां प्रमोदः

1. ज्ञाने। 2. दाने। 3. बले। 4. राज्ये। 5. विनोदे। 6. वैरिनिग्रहे। 7. शौर्ये। 8. धर्मे। 9. सुखे। 10. शौचे प्रमोदो दशधा मतः।

क.

1. ज्ञाने दाने जये रावे विनोदे वैरिविग्रहे। शौर्ये धर्मे च सौख्ये च प्रमोदो दशधा मतः।

ख.

1. ज्ञाने दाने बले राज्ये विनादे वैरविग्रहे। सूर्ये धर्मे तपे सौख्ये प्रमोदो दशधा मतः।

ग.

1. ज्ञानेन। दानने। बलेन। सुराज्येन। विनोदेन। वैरिनिग्रहेण। शौर्येण। धर्मेण। तपसा। सौख्येण। प्रमोदो दशधा मत।

घ.

1. ज्ञाने। 2. दाने। 3. बले। 4. राज्ये। 5. विनोदे। 6. वैरनिग्रहे। 7. शौर्ये। 8. धर्मे। 9. जये। 10. सौख्ये प्रमोदो दशधा मतः।

64. चतुर्विधः प्रबोधः

1. बालसंस्कारप्रबोधः। 2. शास्त्रप्रबोधः। 3. प्रज्ञाप्रबोधः। तत्त्वनियप्रबोधः। इति।

क.

1. शास्त्रप्रबोधः। 2. प्रज्ञाप्रबोधः। 3. तत्त्वनिश्चयप्रबोधः।

ख.

1. शास्त्र अबोध्य। 2. प्रज्ञानप्रबोध। 3. तत्त्वप्रस्वप्नपन्प्रबोधश्चेति।

ग.

1. बालानां संस्काप्रबोधः। 2. काव्यप्रबोधः। 3. ज्ञानप्रबोधः।
4. तत्त्वनिणर्यप्रबोधः।

घ.

1. बालसंयमनं। 2. बालसंस्काप्रबोधः। 3. शास्त्रप्रबोधः।
4. प्रज्ञाप्रबोधः। 5. तत्त्वनिर्णयप्रबोधः।

ङ.

1. तालसंस्कारप्रबोध। 2. शास्त्रप्रबोध। 3. वचननिश्चयप्रबोध।

65. चतुर्विधा बुद्धिः

1. स्वभावजाता। 2. श्रुतोत्पादिता। 3. कर्मजाता। 4. पारिणामिकी। इति।

क.

1. स्वभावजा। 2. उत्पादिता। 3. परिणामकी। 4. कर्मजाश्चेति।

ख.

1. उत्पत्तिकी। 2. वैनयिकी। 3. कर्मजा। 4. पारिणामिकी।
चेति।

ग.

1. स्वभावजा। 2. उत्पादिका। 3. परिणामिका। 4. कर्मजा। चेति।

घ.

1. स्वभावजा। 2. श्रुतोत्पन्ना। 3. उत्पातिकी। 4. पारिणामकी। चेति।

66. अष्टौ बुद्धिगुणाः

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा। ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः।

क.

1. सुश्रूषा। 2. श्रवणं। 3. ग्रहणं। 4. दर्शनं 5. धारणं। 6. अर्थविज्ञानं। 7. धर्मविज्ञानं। 8. तत्त्वविज्ञानं।

ख.

1. स्वरूपग्रहणं। 2. ग्रहणं। 3. धारणं। 4. विज्ञानं। 5. ऊहनं। 6. अपोहनं। 7. तत्त्वज्ञानं चेति।

ग.

1. शुश्रूषा। 2. श्रवणं। 3. ग्रहणं। 4. धारणं। 5. ऊह। 6. अपोह। 7. अर्थविज्ञानं। 8. तत्त्वज्ञानं चेति।

67. चतुर्विधं गान्धर्वम्

1. अवधानगतं। 2. स्वरगतं। 3. पदगतं। 4. तालगतं। इति।

क.

1. स्वरगतं। 2. पदगतं। 3. तालगतं। 4. अवधानगतं।.

ख.

1. स्वरगतं। 2. पदगतं। 3. अवधानं चेति।

68. त्रिविधं गीतम्

1. महागीतं। 2. अनुगीतं। 3. उपगीतं। इति।

क.

1. महागीतं। 2. अनुगीतं। 3. अपगीतं।

ख.

1. उपांगगीतं। 2. महागीतं। 3. अनुगीतं चेति।

ग.

1. महागीतं। 2. उपगीतं। 3. अनुगीतं।

69. षट्त्रिंशदगीतगुणाः

1. सुस्वरं। 2. सुतालं। 3. सुपदं। 4. शुद्धं। 5. ललितं। 6.

सुबन्धं। 7. सुप्रमेयं। 8. सुरागं। 9. सुरसं। 10. समं। 11. सदर्थं। 12. सुग्रहं। 13. सुश्लिष्टं। 14. क्रमस्थं। 15. सुसमयकं। 16. सुवर्णं। 17. संपूर्णं। 18. सालंकारं। 19. सुभाषढ्यं। 20. सुगन्धस्थं। 21. व्युत्पन्नं। 22. मधुरं। 23. स्फुंट। 24. सुप्रभं। 25. प्रसन्नं। 26. कंपितं। 27. समजातं। 28. रौद्रगीतं। 29. ओजःसगतं। 30. द्रुतं। 31. मुखस्थापकं। 32. हतांशं। 33. विलम्बितं। 34. अग्राम्यं। 35. मध्यं। 36. सुप्रमाणं। इति।

क.

1. सुस्वरं। 2. सुतालं। 3. सुपदं। 4. शुद्धं। 5. ललितं। 6. सुबंधं। 7. सुप्रमेयं। 8. सुरागं। 9. सुरसं। 10. समं। 11. सदर्धं। 12. सुग्रहं। 13. शिलष्टं। 14. क्रमस्थं। 15. सुसमयकं। 16. सुवर्णं। 17. सुरक्तं। 18. सुसंपूर्णं। 19. सालंकारं। 20. सुभाषाढ्यं। 21. सुगंधस्थं। 22. व्युत्पन्नं। 23. मधुरं। 24. स्फुटं। 25. सुप्रभं। 26. प्रसन्नं। 27. समजातं। 28. रौद्रगीतं। 29. ओजःसंगतं। 30. दर्शनस्थितं। 31. सुखस्थापकं। 32. हतांशं। 33. विभाषितं। 34. मध्यं प्रमाणं। 35. कवित्कंपितं।

ख.

1. सुस्वरं। 2. सुपदं। 3. शुद्धं। 4. ललितं। 5. सुसंबंधं। 6. सुजियं। 7. सुरागं। 8. सुरसं। 9. समं। 10. विषमं। 11. सदर्पं। 12. सुग्रहं। 13. सुश्लिष्टं। 14. क्रमस्थं। 15. यमकं। 16. सुवर्णं। 17. सुरक्तं। 18. सालंकारं। 19. सुभाषाढ्यं। 20. सुगंधिस्थं। 21. सुव्युत्पत्तिकं। 22. मधुरं। 23. स्फूटं। 24. प्रसन्नं। 25. अग्रण्यं। 26. सुकवित्वं। 27. विचारवतां। 28. सुखस्थितं। 29. विलंबितं। 30. द्रुतं। 31. मध्यं। 32.

उत्क्रीयमाणं। 33. सुबाद्यं। 34. सुकलं। 35. सुनृत्यं।

ग.

1. सुस्वरं। 2. सुतालं। 3. सुपदं। 4. शुद्धं। 5. ललितं। 6. सुप्रबद्धं। 7. सुरागं। 8. सुरम्यं। 9. समं। 10. सदर्थं। 11. सुग्रहं। 12. दृष्टं। 13. सुकाव्यं। 14. सुयमकं। 15. सुरक्तं। 16. संपूर्णं। 17. सालंकारं। 18. सुभाषाढ्यं। 19. सुसंधिस्थं। 20. व्युत्पन्नं। 21. गंभीरं। 22. स्फुटं। 23. सुप्रभं। 24. अग्राम्यं 25. कुंचितं। 26. कंपितं। 27. समायातं। 28. रौद्रगीतं। 29. प्रसन्नं। 30. स्थितं। 31. सुखस्थापकं। 32. द्रुतं। 33. मध्यं। 34. विलम्बितं। 35. गुरुत्वं। 36. प्राञ्चलत्वं। 37. उक्तप्रमाणं चेति।

घ.

1. सुस्वरं। 2. सुतालं। 3. सुपदं। 4. शुद्धं। 5. ललितं। 6. सुसंबंधं। 7. सुप्रमेयं। 8. सुरागं। 9. सुरसं। 10. सुसंगीतं। 11. सुहर्षं। 12. सुग्रहं। 13. श्लिष्टं। 14. क्रमस्थं। 15. सुवर्णं। 16. सुगमं। 17. सुरक्तं। 18. संपूर्णं। 19. सालंकारं। 20. सुभाषाद्यं। 21. सुधिष्पं। 22. मधुरं। 23. स्फुटं। 24. प्रसन्नं। 25. अग्राम्य। 26. कुंचितं। 27. कंपितं। 28. समायातं। 29. विद्यासंगतं। 30. प्रथमस्थितं। 31. मुखस्थं। 32. द्रुतं। 33. विलंबनं। 34. मध्यं। 35. उक्तं। 36. प्रमाणं चेति।

ड.

1. स्वरगतं। 2. सुस्वरं। 3. सुपदं। 4. शुद्धं। 5. ललितं। 6. सुसंबद्धं। 7. सुप्रमेयं। 8. सुरागं। 9. सुरसं। 10. सुसङ्गीतं। 11. सहर्षं। 12. सुग्रहं। 13. सुश्लिष्टं। 14. क्रमस्थं। 15. सुवर्णं। 16. सुगमं। 17. सुरक्तं। 18. संपूर्णं। 19. सालंकारं। 20. सुभाषाद्यं। 21. सुसंधिष्ठं। 22.

सुद्यतनं। 23. सुद्यु। 24. मधुरं। 25. स्फुटं। 26. प्रसन्नं। 27. संग्राम्यं। 28. विकम्पितं। 29. समूजर्जितं। 30. विद्यासंगतं। 31. प्रथमस्थं। 32. सुखस्थं। 33. द्रुतविलंबितं। 34. मध्यं। 35. सुप्रमाणं। चेति।

70. चतुर्विधं वाद्यम्

1. ततं। 2. विततं। 3. घनं। 4. सुषिरं। इति।

क.

1. ततं। 2. विततं। 3. घनं। 4. सुषिरं।

ख.

1. ततं। 2. विततं। 3. घनं। 4. शिखरं चेति।

ग.

1. स्फुटं। 2. विततं। 3. घनं। 4. सुषिरं।

71. द्विप्रकारं नृत्यम्

1. ताण्डवं। 2. लास्यं। इति।

क.

1. लास्यं तांडवं च।

ख.

1. लास्यं तांडवं चेति।

72. षोडशविधं काव्यम्

1. समयः। 2. प्रतिभा। 3. अभ्यासः। 4. विद्या। 5. जातिः। 6. गीतिः। 7. रीतिः। 8. वृत्तिः। 9. वाच्यं। 10. वाचकं। 11. छन्दः। 12. अलङ्कारः। 13. गुणः। 14. रसः। 15. भावः। 16. अभिनयः। इति।

क.

1. समयप्रतिभा। 2. अभ्यास। 3. विद्या। 4. जाति। 5. गीति। 6. रीति। 7. वृत्ति। 8. वात्सल्य। 9. वाचक। 10. छन्द। 11. अलङ्कार। 12. गुण। 13. दोष। 14. रस। 15. भाव। 16. अभिनय।

ख.

1. समवर्ति। 2. अभ्यास। 3. विद्या। 4. जाति। 5. गीति। 6. वृत्ति। 7. वाच्यं। 8. वाचकं। 9. छन्द। 10. अलङ्कार। 11. गुण। 12. दोष। 13. रस। 14. भाव। 15. हाव। 16. अभिमानश्चेति।

ग.

1. अभ्यासः। 2. विद्या। 3. रीति। 4. गीति। 5. वृत्तिः। 6. काव्यं। 7. अलङ्कारः। 8. वाचना। 9. प्रबोधः। 10. गुणः। 11. दोषः। 12. रसः। 13. भावः। 14. अभिधानं। 15. जातिः। चेति।

घ.

1. समय। 2. प्रतिभाषा। 3. अभ्यास। 4. जाति। 5. गीत। 6. रीति। 7. वृत्तवाच्य। 8. वाचक। 9. छन्द। 10. अलङ्कार। 11. गुण। 12.

दोष। 13. रस। 14. भाव। 15. अभिनय। 16. विद्या।

ङ.

1. समय। 2. प्रतिभा। 3. अभ्यास। 4. विद्या। 5. जाति। 6. गीति। 7. रीति। 8. वृत्ति। 9. वाच्य। 10. वाचक। 11. छन्दस्। 12. अलङ्कार। 13. गुण। 14. दोष। 15. रस। 16. अभिनयश्चेति।

73. दशविधं वक्तृत्वम्

1. परिभावितं। 2. सत्यं। 3. मधुरं। 4. सार्थकं। 5. परिस्फुटं। 6. परिमितं। 7. मनोहरं। 8. विचित्रं। 9. प्रसन्नं। 10. भावानुगतं। इति।

क.

1. मधुरं। 2. सार्थकं। 3. परिस्फुटं। 4. सुमनोहरं। 5. परिमित्रं। 6. चित्रं। 7. प्रसन्नं। 8. भावानुगतं।

74. षड्विधं भाषालक्षणम्

1. संस्कृतं। 2. प्राकृतं। 3. अपभ्रंशं। 4. पैशाचं। 5. मागधं। 6. सौरसेनं। इति।

क.

1. संस्कृतं। 2. प्राकृतं। 3. अपभ्रंशं। 4. पैशाचिकं। 5. मागधं। 6. सौरसेनं।

ख.

1. संस्कृतं। 2. प्राकृतं। 3. अपभ्रंशं। 4. पैशाचिकं। 5. मागधं 6. (सौर)सेनं।

75. पञ्चविधं पाण्डित्यम्

1. वक्तृत्वं। 2. कवित्वं। 3. वादित्वं। 4. आगमिकत्वं। 5. सारस्वतप्रमाणं।

क.

1. वक्तव्यं। 2. वशित्वं। 3. आगम। 4. सारस्वत। 5. प्रमाणं। चेति।

ख.

1. वक्तृत्वं। 2. आगमित्वं। 3. शास्त्रसंस्कार। 4. प्रौठित। 5. सारस्वतप्रमाणं।

ग.

1. वक्तृत्वं। 2. वादिकत्वं। 3. कवित्वं। 4. आगमत्वं। 5. गमत्वं।

घ.

1. वक्तृत्वं। 2. वादित्वं। 3. कवित्वं। 4. आगमत्वं। 5. गमत्वं चेति।

76. चतुर्विंशतिविधं वादलक्षणम्

1. उत्पत्तिः। 2. समाप्तिः। 3. सत्यवादः। 4. प्रतिवादः। 5. पक्षः। 6. प्रतिपक्षः। 7. प्रमाणं। 8. प्रमेयं। 9. प्रभेदः। 10. प्रश्नः। 11. प्रतिपक्षः। 12. दूषणं। 13. अर्थान्तरं। 14. उपन्यासः। 15. अनुवादः। 16. आदेशः। 17. निर्वाहः। 18. निर्णयः। 19. विग्रहस्थानं। 20. अर्थान्तरसमता। 21. सुस्वरत्वं। 22. उच्चारणं। 23. जयः। 24. पराजयः। इतिः।

क.

1. उत्पत्ति। 2. सभापति। 3. सत्यवादी। 4. प्रतिवादि। 5. पक्षप्रमाण। 6. प्रमेय। 7. प्रमोद। 8. प्रश्न। 9. प्रत्युत्तर। 10. दूषण। 11. भूषण। 12. अर्थान्तर। 13. उपन्यास। 14. अनुवाद। 15. आदेश। 16. निर्वाह। 17. निर्णय। 18. निश्चय। 19. स्थान। 20. समता। 21. निग्रह। 22. जय। 23. अजय।

ख.

1. उत्पत्ति। 2. सभापति। 3. सत्यवाद। 4. पक्ष। 5. प्रतिपक्ष। 6. प्रमाण। 7. प्रमेय। 8. प्रमेद। 9. प्रसन्न। 10. प्रत्युत्तर। 11. दूषण। 12. उपन्यास। 13. आदेश। 14. निर्णय। 15. निश्चय। 16. नियम। 17. अर्थ। 18. समता। 19. वर्णन। 20. माधुर्य। 21. सुस्वरत्व। 22. उच्चारण। 23. जय। 24. पराजय।

ग.

1. उत्पत्तिः। 2. सभापति। 3. सत्यवादी। 4. पक्षि। 5. प्रतिपक्षि। 6. प्रमाण। 7. प्रमेय। 8. प्रसन्न। 9. प्रमेद। 10. उत्तरप्रत्युत्तर। 11. दूषण। 12. भूषण। 13. अभ्यन्तर। 14. अनुवाद। 15. अभेद। 16. निर्वाह। 17. निर्णय। 18. विग्रहस्थान। 19. समता। 20. जय। 21. अजयेति।

घ.

1. उत्पत्ति। 2. समाप्ति। 3. सभावादपक्ष। 4. प्रमाण। 5. प्रमेय। 6. प्रतिपक्ष। 7. प्रभेद। 8. प्रसन्न। 9. प्रत्युत्तर। 10. दूषण। 11. भूषण। 12. उपन्यास। 13. अनुवाद। 14. आदेश। 15. निर्णय। 16. निर्णयस्थान। 17. प्रतिपक्ष। 18. निश्चयस्थान। 19. अर्थान्तरसमता। 20. जय। 21. पराजयेति।

ड.

1. उत्पत्ति। 2. सभापति। 3. सत्यवादि। 4. प्रतिवादि। 5. पक्ष। 6. प्रमाण। 7. प्रमेय। 8. प्रमोद। 9. प्रश्न। 10. प्रत्युत्तर। 11. दूषण। 12. भूषण। 13. अर्थान्तर। 14. उपन्यास। 15. अनुवाद। 16. आदेश। 17. निर्वाह। 18. निर्णय। 19. निश्चय। 20. स्थान। 21. समता। 22. निग्रह। 23. जय। 24. अजय।

77. षड्विधं दर्शनम्

1. माहेश्वरं। 2. ब्राह्मं। 3. सांख्यम्। 4. बौद्धं। 5. जैनं। 6. चार्वाकं। इति।

क.

1. माहेश्वरं। 2. ब्राह्मं। 3. सांख्यम्। 4. जैनं। 5. बौद्धं। 6. चार्वाकं चेति।

ख.

1. माहेश्वरं। 2. ब्राह्मं। 3. सांख्यं। 4. जैन्यं। 5. बौद्धं। 6. चार्वाकं।

78. अष्टविधं माहेश्वरम्

1. नैयायिकं। 2. वैशेषिकं। 3. शैवं। 4. पाशुपतं। 5. महाव्रतं। 6. कालमुखं। 7. शांभवं। 8. भुक्तिपर्यंत।

क.

1. पाशुपत। 2. कालमुख। 3. महाव्रत। 4. शांभवपर्यक। 5. शिवधर्म। 6. शैव।

ख.

1. न्याय। 2. विशेषक। 3. शिवधर्म। 4. शौच। 5. पाशुपत। 6. कालमुख। 7. महाव्रतिकः।

ग.

1. न्याय। 2. वैशेषिक। 3. शैव। 4. पाशुपत्य। 5. कालमुख। 6. महाव्रतिक। 7. शिवधर्म। 8. पर्यंतश्चेति।

79. दशविधं ब्राह्मम्

1. प्रमाणं। 2. संस्कारः। 3. कर्मवर्तनं। 4. होमः। 5. जापः। 6. श्रुताध्ययनं। 7. गार्हस्थ्यं। 8. वानप्रस्थं। 9. यतिः। 10. ब्रह्मचर्यं। इति।

क.

1. लक्षण। 2. प्रमाण। 3. संस्कार। 4. कर्म। 5. ब्रह्मचारि। 6. गृहस्थ। 7. वानप्रस्थ। 8. यति। 9. ब्रह्मचर्य। 10. वर्तन।

ख.

1. तत्त्व। 2. प्रमाण। 3. संस्कार। 4. कर्म। 5. वर्तन। 6. ब्रह्मचारी। 7. गृहस्थ। 8. वानप्रस्थ। 9. यति। 10. ब्रह्मचर्यश्चेति।

ग.

1. प्रमाण। 2. संस्कारं 3. कर्मवर्त्तन। 4. होम। 5. जाप। 6. श्रुताध्ययन। 7. वानप्रस्थ। 8. गृहस्थ। 9. यति। 10. ब्रह्मपर्यें (त)चेति।

घ.

1. लक्षण। 2. प्रमाण। 3. संस्कार। 4. कर्म। 5. वर्तन। 6. ब्रह्मचारी। 7. गृहस्थ। 8. वानप्रस्थ। 9. यति। 10. ब्रह्मचर्य। चेति।

ड.

1. प्रमाण। 2. संस्कार। 3. कर्म। 4. वर्त्तन। 5. ब्रह्मचारी। 6. गृहस्थ। 7. वानप्रस्थ। 8. यति। 9. ब्रह्म। 10. पर्यंत।

80. चतुर्विधं साङ्ख्यम्

1. तत्त्वं। 2. प्रमाणं। 3. प्रकारः। 4. सर्वात्मं। इति।

क.

1. तत्त्व। 2. प्रमाण। 3. प्रकार। 4. सर्वात्मपर्यंत।

ख.

1. तत्त्व। 2. प्रमाण। 3. प्रकार। 4. प्रभेद। 5. प्रमोदपर्यंत।
6. सर्वात्मपर्यंत।

ग.

1. तत्त्वांग। 2. सर्वात्मता। 3. प्रमाणं। 4. प्रकार।

घ.

1. तत्त्वप्रमाणं। 2. सर्वात्मा। 3. प्रकार। 4. कार्यं। चेति।

ङ.

1. तत्त्व। 2. प्रमाण। 3. सर्वात्मा। 4. प्रकारपर्यंतश्चेति।

81. सप्तविधं जैनम्

1. सर्वज्ञः। 2. धर्मः। 3. तत्त्वार्थः। 4. प्रमाणं। 5. प्रतिमा।
6. प्रभेदः। 7. सिद्धिः। इति।

क.

1. सर्वज्ञ। 2. धर्म। 3. तत्त्वार्थ। 4. प्रमाण। 5. प्रतिमा। 6. प्रभेद। 7. सिद्धिपर्यंत।

ख.

1. सर्वज्ञ। 2. धर्म। 3. तत्त्वं। 4. प्रमाणं। 5. अर्थ। 6. प्रतिमा। 7. प्रतिभेद। 8. सिद्धिश्चेति।

ग.

1. सर्वज्ञ। 2. तत्त्वार्थ। 3. प्रमाण। 4. प्रतिमा। 5. प्रभेदसिद्धि। 6. पर्यंत। 7. धर्मश्चेति।

82. दशविधं बौद्धम्

1. सौगतं। 2. पारमिता। 3. विहारः। 4. प्रमाणं। 5. सौत्रान्तिकं। 6. वैभाषिकं। 7. योगाचारं। 8. माध्यमिकं। 9. मोक्षः। 10. सर्वदशारिगतं। इति।

क.

1. स्वसंबद्ध। 2. पर्वत। 3. पारिगत। 4. विहार। 5. प्रमाण। 6. सूत्रांतिक। 7. त्रैभाविकं। 8. योगाचार। 9. माध्यमिक। 10. मोक्षपर्यंत।

ख.

1. स्वसंबद्ध। 2. पर्वद। 3. पारिगत। 4. विहार। 5. प्रमाण। 6.

सूत्रांतिक। 7. त्रैभाविक। 8. योगाचार। 9. माध्यमिक। 10. मोक्षपर्यन्त।

ग.

1. सौगतं। 2. परिषद। 3. परिमित।। 4. विहार। 5. प्रमाणं। 6. शेवातिकं। 7. वैभाषिकं। 8. योगाचारं। 9. माध्यमिकं। 10. मोक्षश्चेति।

घ.

1. सगता। 2. परिमिता। 3. पारमिता। 4. सर्वदशारिगतविहार। 5. प्रमाण। 6. सौत्रांतिक। 7. त्रैराशक। 8. योगोपचार। 9. मोक्षपर्यंत।

ड.

1. सुगत। 2. परिगत। 3. पारमित। 4. सर्वदशारिगतविहार। 5. प्रमाण। 6. सौत्रान्तिक। 7. योगांत। 8. माध्यमिक। 9. मोक्ष। 10. माध्यमपर्यंतश्चेति।

83. चतुर्विधं चार्वाकम्

1. तत्त्वं। 2. प्रमाणं। 3. प्रभेदः। 4. प्रमोदः। इति।

क.

1. तत्त्वं। 2. प्रमाणं। 3. भेद। 4. पर्यंक।

ख.

1. तत्त्वप्रमाणं। 2. प्रभेद। 3. प्रमोद। 4. पर्यंकश्चेति।

ग.

1. तत्त्वार्थ। 2. प्रमाण। 3. प्रभेद। 4. प्रमोदपर्यन्तं। चेति।

84. चतुर्विंशतिविधं विचारकत्वम्

1. विद्या। 2. विज्ञानं। 3. विनोदः। 4. कला। 5. कवित्वं। 6. वक्तृत्वं। 7. गीतं। 8. वाद्यं। 9. नृत्यं। 10. देशः। 11. कालः। 12. पात्रं। 13. प्रमेयं। 14. वादः। 15. जयः। 16. रसः। 17. भाव। 18. अभिनयः। 19. धर्मः। 20. अर्थः। 21. कामः। 22. मोक्षः। 23. लोकवादः। 24. विचारः। इति।

क.

1. विद्या। 2. विनोद। 3. विज्ञान। 4. कला। 5. कवित्व। 6. वक्तृत्व। 7. गीत। 8. वाद्य। 9. नृत्य। 10. देश। 11. काल। 12. पात्र। 13. प्रमेय। 14. पर्याय। 15. जय। 16. रस। 17. भाव। 18. अभिनय। 19. धर्म। 20. अर्थ। 21. काम। 22. मोक्ष। 23. लोकवाद। 24. विचारपर्यंत।

ख.

1. विद्या। 2. विज्ञान। 3. विनोद। 4. कला। 5. कवित्व। 6. वक्तृत्व। 7. गीत। 8. नृत्य। 9. देश। 10. काल। 11. पात्र। 12. प्रमेय। 13. रस। 14. वाद। 15. अभिनव। 16. धर्म। 17. अर्थ। 18. काम। 19. मोक्ष। 20. लोकपर्यंकेति।

ग.

1. विद्या। 2. विज्ञान। 3. विनोद। 4. कला। 5. कवित्व। 6. वक्तृत्व। 7. गीत। 8. नृत्य। 9. वाद्य। 10. देश। 11. पात्र। 12. प्रमेय। 13. रस। 14. वाद। 15. अभिनव। 16. धर्म। 17. अर्थ। 18. काम। 19. मोक्ष। 20. लोकवादपर्यंतश्चेति।

घ.

1. विद्या। 2. विज्ञान। 3. विनोद। 4. कला। 5. कवित्व। 6. वक्तृत्व। 7. गीत। 8. नृत्य। 9. वाद्य। 10. देश। 11. पात्र। 12. प्रमेय। 13. रस। 14. पार्याय। 15. जय। 16. रसवाद। 17. अभिनय। 18. धर्म। 19. अर्थ। 20. काम। 21. लोक। 22. वाद। 23. लोकवादपर्यंतेति।

85. दशविधं गुरूत्वम्

1. वंशे। 2. ज्ञाने। 3. पदे। 4. सत्त्वे। 5. शौर्ये। 6. दाने। 7. बले। 8. जये। 9. संताने 10. स्वगुणे चेति गुरूत्वं दशधा मतम्।

क.

1. वंशे ज्ञाने पदे शैर्य सत्त्वे दाने बले जये। संताने स्वगुणे चेति।

ख.

1. वंशे। 2. दाने। 3. पदे। 4. शौर्ये। 5. दैवे। 6. दाने। 7. बले। 8. जये। 9. विजये। 10. विज्ञाने। 10. स्वगुणे गुरूत्वं दशधा मतम्।

86. पञ्चविधं चरितम्

1. ज्ञानचरितं। 2. मानचरितं। 3. दानचरितं। 4. वीरविलास-चरितं। 5. धर्मारंभचरितं। इति।

क.

1. विलासचरित्रं। 2. धर्मचरित्रं। 3. वीरचरित्रं। 4. गुणः। 5. प्रक्षेपणं।

ख.

1. दानं। 2. मानं। 3. ज्ञानं। 4. विचारं। 5. विलासं।

ग.

1. वीरचरितं। 2. विलासचरितं। 3. ज्ञानचरित्रं। 4. कलाचरितं। 5. गुणप्रक्षमाचरितं चेति।

87. पञ्चविधं पार्थिवानां पालनम्

1. राज्यपालनं। 2. प्रजापालनं। 3. भूमिपालनं। 4. धर्म-पालनं। 5. शरीरपालनं। इति।

क.

1. कर्मपालनं। 2. धर्मपालनं। 3. प्रजापालनं। 4. भूमिपालनं। 5. शरीरपालनं।

ख.

1. धर्मपालनं। 2. राज्यपालनं। 3. भूमिपालनं। 4. शीररपालनं। 5. प्रजापालनं।

ग.

1. साधुपालनं। 2. राज्यपालनं। 3. प्रजापालनं। 4. भूमिपालनं। 5. सत्यपालनं। चेति।

88. सप्तविधा प्राप्तिः

1. ज्ञाने 2. धर्मे 3. बले 4. कामे 5. विज्ञाने 6. पात्रसंग्रहे। 7. महार्थे भूभुजां नित्यं प्राप्तिः सप्तविधा मता।।

क.

ज्ञाने धर्मे बले कामे विज्ञाने पात्रसंग्रहे। सर्वार्थभूभुजां चैव प्राप्तिः सप्तविधा मता।

ख.

ज्ञाने धर्मे बले कामे विज्ञाने पात्रसंग्रहे।

सर्वार्थभूभुजां नित्यं प्राप्तिः सप्ताविधा मता॥

89. चतुर्विंशतिविधं शौर्यम्

1. शब्दशौर्यं। 2. प्रतापशौर्यं। 3. दानशौर्यं। 4. स्थानशौर्यं।

5. उदयशौर्यं। 6. तेजशौर्यं। 7. संग्रामशौर्यं। 8. प्रतिपत्तिशौर्यं। 9. जयशौर्यं। 10. मानशौर्यं। 11. ज्ञानशौर्यं। 12. साहसशौर्यं। 13. शरणागतशौर्यं। 14. प्रमोदशौर्यं। 15. उद्यमशौर्यं। 16. अर्थशौर्यं। 17. आचारशौर्यं। 18. बालशौर्यं। 19. कीर्तिशौर्यं। 20. धर्मशौर्यं। 21. रक्षणशौर्यं। 22. गुणशौर्यं। 23. परिबोधशौर्यं। 24. प्रबोधशौर्यं। इति।

क.

1. शब्दशौर्य। 2. प्रतापशौर्य। 3. दान। 4. स्थान। 5. उदय। 6. तेज। 7. संग्राम। 8. प्रतिपत्र। 9. जय। 10. मान। 11. ज्ञान। 12. साहस। 13. शरणागत। 14. परिबोध। 15. प्रमोद। 16. उद्यम। 17. अर्थ। 18. आचार। 19. बल। 20. कीर्ति। 21. लक्षण। 22. गुण। 23. ज्ञान। 24. मान।

ख.

1. नाम। 2. शब्द। 3. प्रताप। 4. दान। 5. स्थान। 6. उत्तम। 7. तेज। 8. संग्राम। 9. प्रतिपत्ति। 10. जयमान। 11. ज्ञान। 12. साहस। 13. शरणागत। 14. आचार। 15. प्रबोध। 16. प्रमोद। 17. आज्ञा। 18. उद्यम। 19. यथाचार। 20. बल। 21. कीर्त्ति। 22. शौर्य। 23. धर्म। 24. रक्षणश्चेति।

ग.

1. स्नान। 2. मान। 3. शब्द। 4. प्रताप। 5. ज्ञान। 6. उदय। 7. तेज। 8. संग्राम। 9. जय। 10. साहस। 11. प्रतिपन्न। 12. शरणागत। 13. प्रबोध। 14. प्रमोद। 15. आज्ञा। 16. उद्यम। 17. अर्थ। 18. आचार।

19. बल। 20. कीर्त्ति। 21. लक्षण। 22. शौर्यश्चेति।

घ.

1. तनु। 2. शब्द। 3. प्रताप। 4. दान। 5. स्थान। 6. उदय। 7. तेज। 8. संग्राम। 9. प्रतिपन्न। 10. जय। 11. मान। 12. ज्ञान। 13. साहस। 14. शरणागत। 15. प्रबोध। 16. प्रमोद। 17. आज्ञा। 18. उद्यम। 19. अर्थ। 20. आचार। 21. बल। 22. कीर्ति। 23. लक्षण। 24. गुणशौर्य चेति।

90. दशविधं बलम्

वाक्कायबुद्धिमन्त्रैश्च स्थानसैन्यसुहृज्जनैः। शकुनैर्दैवतैश्चेति राज्ञा दशविधं बलम्।

क.

1. वाक्बलं। 2. कायबलं। 3. बुद्धिबलं। 4. मंत्रबलं। 5. स्थानबलं। 6. सैन्यबलं। 7. मुहूर्त्तबलं। 8. शकुनबलं। 9. राजबलं।

ख.

1. वाक्। 2. काय। 3. बुद्धि। 4. मंत्र। 5. मन। 6. सुहृद। 7. शकुन। 8. सैन्य। 9. ध्वनि। 10. श्रुति। 11. देवता चेति।

ग. **वक्तायुः शुद्धिमन्त्रैश्च स्थानं सैन्यं सुहृज्जनैः।**

शकुनैर्दैवतैश्चेति राज्ञां दशविधं बलम्॥

91. दशविधः सङ्ग्रहः

ज्ञाने पात्रे गुण शौर्ये पत्नीयोगे बले जये।

धर्मे मित्रे श्रुते यज्ञे दशधा गुणसङ्ग्रहः॥

क.

ज्ञाने पात्रे गुणे शौरे पत्नीयोगे बले धर्मे जये गुणेषु श्रुतसङ्ग्रहः॥

ख.

ज्ञाने पात्रे गुणे सौरे पत्नीयोगे बाल धर्मे जये गुणेषु श्रुतसङ्ग्रहः॥

ग.

ज्ञाने पात्रे च विक्रे च पक्ष्यायोगे बले जये लक्षित।

घ.

1. ज्ञानपात्र। 2. मित्रपात्र। 3. शौर्यपात्र। 4. नियोग। 5. बल। 6. प्रवीण। 7. यज्ञ। 8. धर्म। गुणसङ्ग्रहः।

ड.

1. **ज्ञाने पात्रे च मित्रे च पत्नीयोगे बले जये।**

धर्मे गुणे श्रुते चैव सङ्ग्रहः सप्तधा मतः॥

92. दशविधो जयः

ज्ञानासनप्रतापै सङ्ग्रामैश्च सुहृज्जनैः।

निद्राहारोदयश्चेति राज्ञां दशविधो जयः॥

क.

ज्ञानासनं प्रतापैर्वा संग्रामै सुहृज्जनैः।

निद्राहारोदयाश्चेति राज्ञां दशविधो जयः॥

ख.

ज्ञानासनं प्रतापैर्वा संग्रामै स्वसुहृज्जनैः।

निद्राहारै दयाश्चेति राज्ञां दशविधो जयः॥

ग.

1· ज्ञान। 2· सैन्य। 3· प्रताप। 4· काम। 5· संग्राम। 6· ऐश्वर्य। 7· सुक्रत। 8· मित्र। 9· सत्व।

घ.

1· मित्र। 2· पात्र। 3· नियोग। 4· वासना। 5· सुहृद। 6· प्रताप। 7· ऐश्वर्य। 8· संग्राम। 9· वाक्। 10· परिश्रमी। 11· निद्रा। 12· आहार। 13· इंद्रिय।

ड.

ज्ञानाशनप्रतापेऽर्वाक् संग्रामैह्यमुहुजनैः।

निद्राहारेन्द्रिये चेति राज्ञां दशविधो जयः॥

93. पञ्चविधः परिच्छेदः

1. अलक्षितं। 2. लक्षितं। 3. मानसिकं। 4. वाचिकं। 5. कार्मिकं। चेति।

क.

1. अलक्षित। 2. लक्षित। 3. मानसिक। 4. वाचिक। 5. कर्मणा।

ख.

1. अलिषित। 2. लिखित। 3. मानसिक। 4. वाचिक। 5. कर्मणा चेति।

94. पञ्चविध प्रभुत्वम्

1. कुलप्रभुत्वं। 2. ज्ञानप्रभुत्वं। 3. दानप्रभुत्वं। 4. स्थान-प्रभुत्वं। 5. अभयप्रभुत्वं। इति।

क.

1. कुलप्रभुत्वं। 2. ज्ञानप्रभुत्वं। 3. दानप्रभुत्वं। 4. स्थानप्रभुत्वं। 5. अभयप्रभुत्वं। इति।

ख.

1. कुलप्रभुत्वं। 2. दानप्रभुत्वं। 3. स्थानप्रभुत्वं। 4. उभयप्रभुत्वं।

ग.

1. कुल। 2. शौर्य। 3. दान। 4. स्थापन। 5. गुण।

घ.

1. ज्ञानप्रभुत्व। 2. अक्षय। 3. शौर्य। 4. स्थापना। 5. प्रदान। 6. अभय।

ड.

1. ज्ञानप्रभुत्व। 2. आय प्रभुत्व। 3. शौर्यप्रभुत्व। 4. स्थानप्रभुत्व। 5. दानप्रभुत्व चेति।

95. सप्तविधमुत्तमत्वम्

1. वय:। 2. कुलं। 3. रूपं। 4. शीलं। 5. पदं। 6. ज्ञानं। 7. प्रयोग:। इति।

क.

1. वय:। 2. कुल। 3. रूप। 4. शील। 5. पद। 6. ज्ञान। 7. प्रयोगपर्यंतश्चेति।

ख.

1. वय:। 2. कुलं। 3. शीलं। 4. रूपं। 5. पदं। 6. ज्ञानं। 7. प्रयोग।

ग.

1. वयस्। 2. कुल। 3. शील। 4. रूप। 5. पद। 6. ज्ञान। 7. योग। 8. प्रयोगश्चेति।

96. नवविधा शक्तिः

1. धर्मशक्तिः। 2. दानशक्तिः। 3. मन्त्रशक्तिः। 4. ज्ञान-शक्तिः। 5. अर्थशक्तिः। 6. कामशक्तिः। 7. युद्धशक्तिः। 8. व्यायामशक्तिः। 9. भोजनशक्तिः। इति।

क.

1. व्यायामशक्ति। 2. ज्ञानशक्ति। 3. दानशक्ति। 4. धर्मशक्ति। 5. अर्थशक्ति। 6. युद्धशक्ति। 7. भोजनशक्ति। 8. विद्याशक्ति।

ख.

1. धर्मशक्तिः। 2. मंत्रशक्तिः। 3. कामशक्तिः। 4. भोजनशक्तिः। 5. युद्धशक्तिः। 6. व्यायामशक्तिः। 7. देशशक्तिः। 8. उपार्जनशक्तिः। 9. वादशक्तिः।

ग.

1. दानशक्ति। 2. धर्मशक्ति। 3. मंत्रशक्ति। 4. ज्ञानशक्ति। 5. कामशक्ति। 6. अर्थशक्ति। 7. युद्धशक्ति। 8. भोजनशक्ति। 9. व्यायाम-शक्तिश्चेति।

97. सप्तविधा भुक्तिः

1. शब्दः। 2. स्पर्शः। 3. रूपं। 4. रसः। 5. गन्धः। 6. अभिमानः। 7. देशः। इति।

क.

1. प्रतिमान। 2. द्रव्य। 3. शब्द। 4. स्पर्श। 5. रूप। 6. रस। 7. गंध। 8. देशभुक्ति।

ख.

1. अभिमान। 2. शब्द। 3. रस। 4. रूप। 5. गंध। 6. देश। 7. स्पर्शभुक्तिश्चेति।

98. अष्टविधमभिमानलक्षणम्

ज्ञाने दाने बले धर्मे धर्मार्थे शत्रुमारणे।
समारंभे च युद्धे च अभिमानं प्रचक्षते॥

क.

1. ज्ञाने दाने धर्मे अर्थे कामे बले शत्रुघाते। समारंभोढितं च।

ख.

1. ज्ञाने धर्मे अर्थे कामे बले शत्रुघाते समारंभे स्थितं च।

ग.

1. ज्ञान। 2. दान। 3. बल। 4. धर्म। 5. अर्थ। 6. काम। 7. शत्रु। 8. घात। 9. समारंभ। 10. उद्धतं चेति।

घ.

1. ज्ञाने। 2. दाने। 3. बले। 4. कर्मे। 5. कामे। 6. अर्थे। 7. शत्रुमारणे। 8. समारंभे चेति।

ङ.

1. ज्ञाने 2. दाने। 3. धर्मे। 4. अर्थे। 5. कामे। 6. बले। 7. शत्रुघाते। 8. समारम्भो स्थितं च।

99. चतुर्विधं वात्सल्यम्

देवानां सुद्गुरूणां च मन्त्राणां वल्लभे जने।
स्नेहेन मानसं यच्च तद्वात्सल्यं चतुर्विधम्॥

क.

1. देवानां सद्गुरूणां च मंत्राणां वल्लभे जने।
स्नेहेन मानसं यच्च तद्वात्सल्यं चतुर्विधम्॥

ख.

1. वेदानां गुरूणां च मित्राणां वर्णभोजने।
स्नेहेन मनसा यच्च तद्वात्सल्यं चतुर्विधम्॥

ग.

1. देवानां सद्गुरूणां मित्राणां वल्लभे जने।

स्नेहेन संततौ वात्सल्यं चतुर्विधम्॥

100. पञ्चविधो महोत्सवः

1. ज्ञानमहोत्सवः। 2. धर्ममहोत्सवः। 3. अर्थमहोत्सवः। 4. काममहोत्सवः। 5. मोक्षमहोत्सवः। इति।

क.

1. ज्ञानमहोत्सवः। 2. धर्ममहोत्सवः। 3. काममहोत्सवः।

ख.

1. ज्ञानमाहोत्सव। 2. अर्थमहोत्सव। 3. काममहोत्सव।

ग.

1. काममहोत्सव। 2. द्रव्यमहोत्सव। 3. मोक्षमहोत्सव।

घ.

1. ज्ञान। 2. धर्म। 3. अर्थ। 4. काम। 5. मोक्षमहोत्सवश्चेति।

ड.

1. धर्ममहोत्सव। 2. द्रव्यमहोत्सव। 3. काममहोत्सव। 4. ज्ञानमहोत्सव। 5. मोक्षमहोत्सव।

101. अष्टौ लब्धियोगः

1. अणिमा। 2. महिमा। 3. लघिमा। 4. गरिमा। 5. ईषत्वं। 6. वशित्वं। 7. प्राप्तिः। 8. प्राकाम्यं। चेति।

क.

1. अणिमा। 2. महिमा। 3. लघिमा। 4. गरिमा। 5. प्राप्ति। 6. प्रकाम्यं। 7. ईशत्वं। 8. वशित्वं।

ख.

1. अणिमा। 2. महिमा। 3. गरिमा। 4. लघिमा। 5. ईशत्व। 6. वशित्व। 7. प्राप्ति। 8. प्रकाम्यमेव।

ग.

1. अणिमा। 2. महिमा। 3. गरिमा। 4. लघिमा। 5. ईशत्व। 6. विसत्व। 7. वशित्व। 8. प्राकाम्य चेति।



परिशिष्ट

पाण्डुलिपि - क

Source	:	Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad
No	:	2-165
Material	:	Paper
Folios	:	12
Size	:	8 x4.5 - inches
Area of writing	:	6.5-x3.74 inches
Number of lines	:	11 Lines per page
Number of letters	:	31 to 33
Age	:	Samvat 1755- (1699- A,D.)
Author	:	Prthvidharacarya
Script	:	Devanagari
Beginns	:	श्रीहरिः। सर्वज्ञानमयं रम्यं सर्वबुद्धिप्रकाशकम्। स्वल्पग्रन्थं सुबोधाय रत्नकोशं समभ्यसेत्॥ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि। त्रिविधं लोकस्थानं। पञ्चविधं प्रभुत्वं॥ १००॥ इत्यनुक्रमणिका॥ गणराजं नमस्कृत्य गजतुण्डं सुरोत्तमम्। समस्तविघ्रहंतारं रत्नकोशं उदीर्यते॥ १॥
Ends	:	अष्टौ लब्धयोग। अणिमा। महिमा। लघिमा। गरिमा। प्राप्ति। प्रकाम्यं। ईशत्वं। वशित्वं।
Colophon	:	इति श्रीपृथ्वीघराचार्यकृत रत्रकोशः सम्पूर्णम्। शुभं भवतु। कल्याणमस्तु। संवत् १७५५ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे लिखितं गिरिनारायण–ज्ञातीय भट्टरामकृष्णेन लिखितं।

श्रीरस्तु। श्री हरिर्जयति। श्री॥ श्री॥ श्री॥

पाण्डुलिपि - ख

Source	:	Jesalmera Grantha Bhandara, Jesalmera
No	:	315
Material	:	Paper
Folios	:	8
Size	:	9 x 4 ¼ inches
Number of lines	:	14 lines
Number of letters	:	48
Age	:	Samvat 1709 - (1653- A.D.)
Author	:	Not mentioned
Script	:	Devanagari
Begins	:	ऊँ अर्हं नमः। अथ रत्नकोशो लिख्यते। सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम्। स्वल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं समभ्यसेत् । तत्र सर्वत्र सूत्राणां कर्तव्यः संग्रहो यथा॥ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि ॥१ ॥ त्रिविधं लोकस्थानम् ॥२ ॥ etc.
Ends	:	.... वशित्वम् । प्राकाम्यम्। चेति।।
Colophon	:	इति श्री रत्नकोश [:] समाप्त [:] श्रीसंवत् १७०९ वर्षे वैशाषाऽशित षष्टी दिने रेवतीभवे वारे श्री महेरानगरेऽलीखित् । श्रीस्तात् कल्याणं भूयात्।

लेखकपाठकयोः ऋद्धिवृद्धिः सदैव श्रीस्तात् मांगल्यं महोच्छवं श्री शान्तिजिनप्रशादात्॥श्री॥

पाण्डुलिपि - ग

Source	:	Muni Jinavijayajis collection, Rajasthan
No	:	57
Material	:	Paper
Folios	:	4
Size	:	10 ¼ x 5¼ inches
Number of lines	:	19- lines per page
Number of letters	:	50 to 53
Age	:	Not mentioned ; apperars to be about three hundred years old
Author	:	Not mentioned
Script	:	Devanagari
Beginns	:	ऊँ नमो वीराय। अथातो वस्तुविज्ञानं रत्नकोशं व्याख्यास्यामः। सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम्। स्वल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं तमभ्यसेत् ॥१ ॥ तत्र शतेन सूत्राणं संग्रहो यथा॥ तत्रादौ त्रीणि भवनानि etc.
Ends	:	पञ्चविधं प्रभुत्वं कुलप्रभुत्वं ज्ञानप्रभुत्वं दानप्रभुत्वंस्थानप्रभुत्वं ॥१०० ॥
Colophon	:	इति रत्नकोशसूत्रशतव्याख्यानं समाप्तम्॥

पाण्डुलिपि - घ

A copy prepared under the supervision of Muni Jinavijyaji from a ms, of Jesalmera Grantha Bhandara, Jesalmera.

Begins : ऊँ नमो वीतरागाय। अथातो वस्तुविज्ञानं रत्रकोशं व्याख्यास्यामः।
सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम्।
स्वल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं तमभ्यसेत्।।
तत्र शतेन सूत्राणां सङ्गहो यथा॥ तत्रादौ त्रीणि भवनानि etc.

Ends : पञ्चविधं प्रभुत्वं। कुलप्रभुत्वम्। ज्ञानप्रभुत्वम्। दानप्रभुत्वम्। स्थानप्रभुत्वम्। उभयप्रभुत्वम्।

Colophon : इति रत्नकोशसूत्रशतव्याख्यानं समाप्तम्।

पाण्डुलिपि - ङ

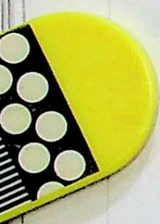
Source	:	Muni Jinavijayaji's Collection, Rajasthan
No	:	?
Material	:	Paper
Folios	:	9.1 to 8 a Ratnakosa; 8-a to 9 Ragotpatti.
Size	:	10 x 45 inches
Number of lines	:	15 Lines
Number of letters	:	38 to 40
Age	:	Not mentioned ; appears to be about 150 years old
Script	:	Devanagari
Begins	:	श्री गुरूभ्यो नमः। रत्नकोशं व्याख्यास्यामः। थ (व) स्तुविज्ञानं। सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञान- प्रकाशकं। स्वल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं समभ्यसेत्॥ १ ॥ तत्र शतेन सूत्राणां कर्तव्य: संग्रहो यथा॥ २ ॥ अथ इति मंगलार्थे॥ ग्रन्थनु कर्ता श्रीवेद्व्यास कहिछिं etc.
Ends	:	लघिमा। इशत्व। वशित्व। प्राप्ति । प्रकाम्यमेव।
Colophon	:	इति श्रीरत्नकोश: सम्पूर्ण:॥ श्रीरस्तु:। कल्याणमस्तु:।

पाण्डुलिपि - च

Source	: Sri Muktabai Jnanamandira, Dadhoi
No	: ?
Folios	: 6
Material	: Paper
Size	: 10 x 4.25 inches
Area of writing	: 8 x 3 inches
Number of lines	: 15 to 16
Number of letters	: 43 to 45 in each line
Age	: Not mentioned ; apperars to be not later than 16th Century A.D.
Author	: Not mentioned
Script	: Devanagari
Begins	: अथातो वस्तुविज्ञानं। रत्नकोशं। व्याख्यास्यामः॥ सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम्। स्वल्पप्रथं सुबोधार्थं रत्नकोशं तमभ्यसेत् तत्र शतेन सूत्राणां संग्रहो यथा। तत्रादौ त्रीणि भुवनानि ॥ etc
Ends	: पञ्चविधं प्रभुत्वं। कुलप्रभुत्वं दानप्रभुत्वं। स्थानप्रभुत्वं। उभयप्रभुत्वं॥ १०० ॥
Colophon	: इति रत्नकोशसूत्रशतव्याख्यानं समाप्तम्॥ लोलाडाग्रामे। पं० धनसागर मुनिलक्षमत्। व० पुन्यमंडणगणगणिजोग्यं। श्रीः॥ श्रीरस्तुः। कल्याणमस्तु॥









शुक्लयजुर्वेदीय इष्टिप्रयोग:	प्रो० रमेशचन्द्र दाश शर्मा	225.00
महर्षिकात्यायनप्रणीत यजुर्विधानसूत्रम्	प्रो० रमेशचन्द्र दाश शर्मा	295.00
शुक्लयजुर्वेदीय पार्वण श्राद्धप्रयोग	प्रो० रमेशचन्द्र दाश शर्मा	35.00
श्राद्धसंग्रह	डॉ० विष्णुपद गोस्वामी	800.00
श्रीमद्विठ्ठलदीक्षितप्रणीता कुण्डमण्डपसिद्धि:	डॉ० वृन्दावन दाश	35.00
कमलाकरभट्टविरचित: पूर्त्तकमलाकर:	डॉ० वृन्दावन दाश	275.00
मनोऽभिलषितव्रतानुवर्णनम्	डॉ० रामराज उपाध्याय	525.00
वेदार्थ-निर्णये निरुक्तस्य महत्त्वम् (निरुक्त-परिचय:)	आ. वीरभद्रशर्मा शास्त्री	255.00
शाण्डिल्यशतकम् (Sanskrit, Hindi & English)	डॉ० कृष्णचन्द्र त्रिपाठी	40.00
शतकचतुष्टयम् (Sanskrit & Hindi)	प्रो० केशवराम शर्मा	175.00
हिमाचल वैभवम् (Sanskrit & Hindi)	प्रो० केशवराम शर्मा	325.00
देवचरितम् (खण्डकाव्यम्)	आचार्यसुरेश शर्मा "भारद्वाज"	295.00
लघुशब्देन्दुशेखर: श्रीशङ्करभट्टविरचित: शाङ्करी	डॉ० जयकान्तसिंह शर्मा	325.00
समासशक्तिसमीक्षा	डॉ० जयकान्तसिंह शर्मा	265.00
शब्दशक्तिप्रकाशिकासमीक्षणम् (मूलजागदीशीसहितम्)	डॉ० बिष्णुपदमहापात्र:	795.00
तर्कामृतम् (म.म.जीवनकृष्णतर्कतीर्थकृतविवृतिसहितम्)	डॉ० बिष्णुपदमहापात्र:	399.00
न्यायपारिभाषिकशब्दावलि: (Sanskrit & English)	डॉ० बिष्णुपदमहापात्र:	375.00
तत्त्वज्ञानविवृद्धि:	डॉ० कमलेशमिश्र:	225.00
साहित्यकण्ठकोद्धारपरिशीलनम्	डॉ० धर्मानन्दराउत:	495.00
विष्णुविलासविमर्श:	डॉ० (श्रीमति) एस्.राधा	495.00
व्याकरणदर्शने शब्दतत्त्वविमर्श:	डॉ० कमला भारद्वाज	550.00
योगामृतम्	डॉ० महेशप्रसाद सिलोड़ी	495.00
साङ्ख्यसुधी	डॉ० महेशप्रसाद सिलोड़ी	625.00
दार्शनिकनिबन्धा:	डॉ० सुकान्त कुमार सेनापति	475.00
श्रीसर्वेश्वराचार्यविरचित साहित्यसार:(सानुवादष्टिप्पण्यादिसहितश्च)	डॉ० कामना शर्मा	575.00
छान्दोग्योपनिषत्तत्त्वसमीक्षा	डॉ० शान्तिपोखरेल	450.00
वृक्षविज्ञानम्	डॉ० ज्योत्स्ना मोहन	625.00
स्मृतियों का वातायन	डॉ० ज्योत्स्ना मोहन	600.00
भारतीय वास्तुविद्या के वैज्ञानिक आधार	डॉ० बिहारी लाल शर्मा	375.00
मुहूर्त्तविवेचनम्	डॉ० परमानन्द भारद्वाज	165.00
फलितज्योतिष के कतिपय आधारभूत सिद्धान्त	डॉ० परमानन्द भारद्वाज	355.00
शैक्षिक दर्शन (महात्मागांधी एवं विनोबाभावे के विशेष संदर्भ में)	डॉ० नरेश कुमार यादव	325.00
विमला संस्कृतमार्गदर्शिका (B.Ed., U.G.C., NET)	डॉ० भागीरथि नन्द:	250.00
अर्थशास्त्र-शिक्षण	डॉ० सदन सिंह	600.00
व्यंग्य आरोही (कुछ जग के, कुछ रब के, ये व्यंग्य सब के)	डॉ० नरेश कुमार यादव	150.00
व्यंग्य आरोही - 2 (कुछ इधर की, कुछ उधर की)	डॉ० नरेश कुमार यादव	250.00
काव्य-तरङ्गिनी	शान्ता गुप्ता	110.00
बहुआयामी व्यक्तित्व (डॉ० हरिश्चन्द्र गुप्ता)	शान्ता गुप्ता	200.00
अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता हनुमच्चरित्र (एक विहङ्गम दृष्टि)	डॉ० गुञ्जेश्वराचार्य	450.00
धर्मलक्षणविमर्श:	डॉ० सुधांशुभूषणपण्डा	100.00
गौतमधर्मसूत्रार्थविमर्श:	डॉ० सुधांशुभूषणपण्डा	295.00
बोधनपद्धति: - समीक्षा (A Criticism of Teaching Method)	डॉ० रामचन्द्रुल बालाजी	250.00
कारिकामयूख: (कौमुदीस्थाना कारिकाणा सप्रसङ्गव्याख्यानम्)	प्रियव्रतमिश्र:	225.00
प्रायोगिक सौख्यम्	डॉ० सुकान्त कुमार सेनापति	(यन्त्रस्थ)
व्याकरणदर्शनदीपिका	डॉ० प्रमोद कुमार शर्मा	(यन्त्रस्थ)
Jayanti Bhatt NYAYAMANJARI	Dr. A.S. Arvamudan	(In Press)
अद्वैतशब्दकौस्तुभम्	डॉ० दिलीप कुमार कर	(यन्त्रस्थ)
श्रीनृसिंहमिश्रकृतम् सामवेदीयकर्मविधानम् समापवर्त्तनान्तम्	डॉ० दिलीप कुमार कर	(यन्त्रस्थ)
कृतिसङ्कलनम् Krtisankalanam	डॉ० दिलीप कुमार कर	(यन्त्रस्थ)
A Bibliography of ANCIANT INDIAN SCIENCE Vol. I Primery Source)	Dr. Dillip Kumar Kar	(In Press)
A Bibliography of ANCIANT INDIAN SCIENCE (Vol. II Secondary Source)	Dr. Dillip Kumar Kar	(In Press)
पञ्चटीकोपेत: शक्तिवाद:	डॉ० बिष्णुपदमहापात्र:	(यन्त्रस्थ)
व्याकरणप्रकाश:	डॉ० बिष्णुपदमहापात्र:	(यन्त्रस्थ)
भविष्यपुराण में व्रत एवं अनुष्ठान	डॉ० सरोज कुमार शुक्ल	(यन्त्रस्थ)
वेदेषु समन्वयवाद:	डॉ० सूर्यनारायणनन्द:	(यन्त्रस्थ)
ज्योतिर्विज्ञान परिचय एवं उपादेयता	डॉ० विनोद कुमार शर्मा	(यन्त्रस्थ)
मुहूर्त-चिन्तामणि 'विवाह-प्रकरणम्'	प्रो० प्रेम कुमार शर्मा	(यन्त्रस्थ)
संस्कृतवाङ्मये जलविज्ञानम्	डॉ० कमला भारद्वाज	(यन्त्रस्थ)
कात्यायन शुल्वसूत्रम्	प्रो० रमेशचन्द्र दाश शर्मा	(यन्त्रस्थ)
व्रतों से रोगनिवारण	डॉ० रामराज उपाध्याय	(यन्त्रस्थ)
जनसंख्या शिक्षण	डॉ० सदन सिंह	(यन्त्रस्थ)
उत्तरी बिहार का पुरातत्त्व	डॉ० अशोक कुमार सिन्हा	(यन्त्रस्थ)
Elite Woman of Mughal India	Dr. Bharti Mohan	(In Press)

मान्यता प्रकाशन



60 - C, मायाकुञ्ज, मायापुरी, नई दिल्ली-110064
Phone : 011 - 2540 7546, 011 - 2513 7546
Mobile : +91 - 9999 88 9290, 98110 14522
mail at : manyataprakashan@gmail.com
mail at : manyata_prakashan@yahoo.com

वास्तुविज्ञानरत्नकोश:
ISBN 10 8189149989
ISBN 13 9788189149987
9 788189 149987